॥ श्री शासनपति महावीराय नमः ॥
॥ गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिगुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

पुण्य सम्राट

संस्थापक–श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | दिसम्बर–2020

दिव्याशीष–लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

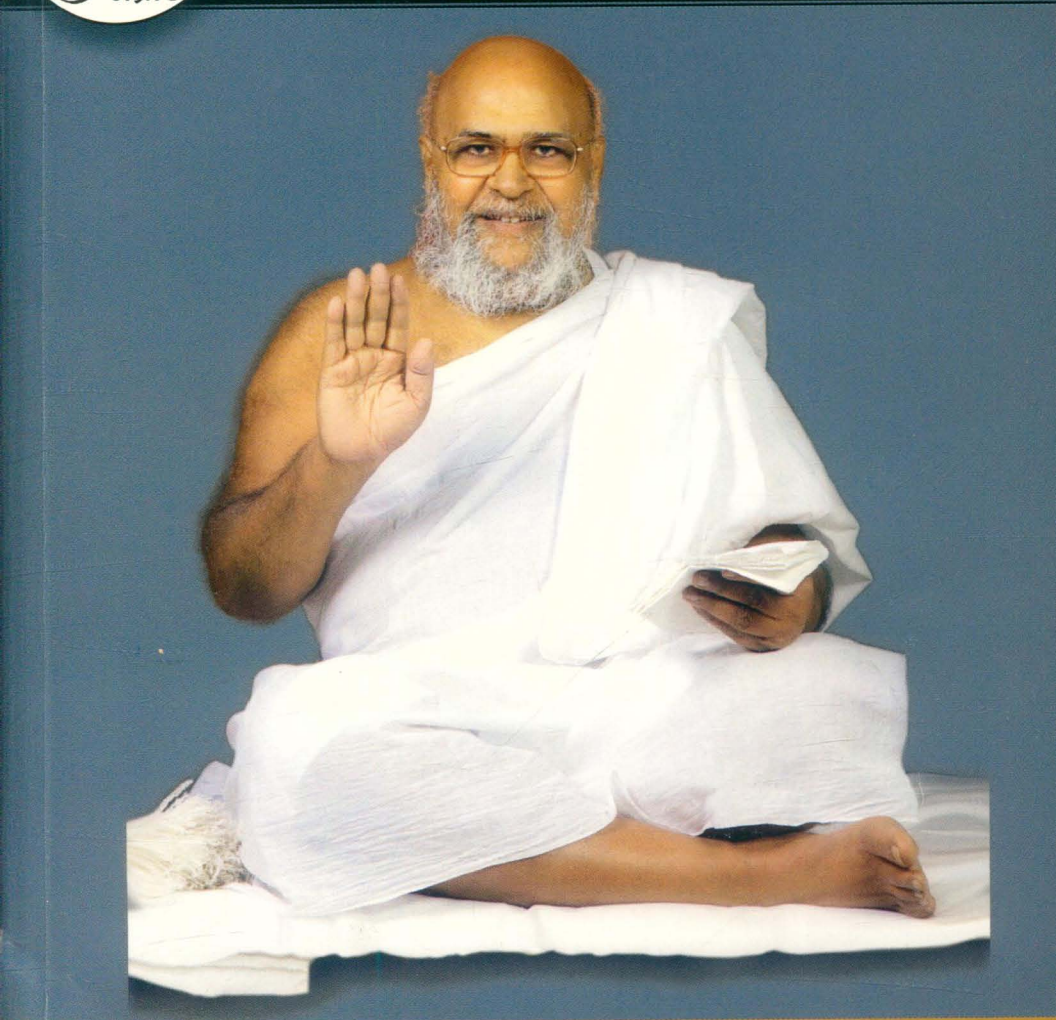

* गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में मंदसौर में 12 दिसम्बर को पुण्यसम्राट श्रीमद् जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. का जन्मोत्सव, उनकी प्रतिमा की प्रतिष्ठा। इससे पूर्व 11 दिसम्बर को मंदसौर में श्री नवलखा पार्श्वनाथ मंदिर में प्रभु प्रतिमाओं का प्रवेश।
* निम्बाहेड़ा में दि. 18 दिसम्बर 2020 को दो मुमुक्षुओं को दीक्षा मुहूर्त्त प्रदाय।

आगामी कार्यक्रम – पेपराल में आत्मोद्धार – 4 तथा पेपराल में चैत्रीपूनम को चातुर्मास उद्घोषणा। 24 मार्च को सिरोही में ध्वजारोहण

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला – जालोर (राज.)
12. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, सरसी, जिला – रतलाम (म.प्र.)
13. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा, म.प्र.)
14. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद
15. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र यतीन्द्र जयन्तसेन वाटिका पिपलौदा (रतलाम) म.प्र.)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

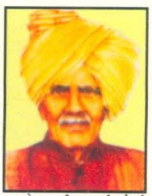

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

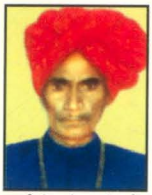

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

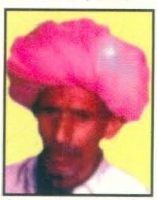

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा
दाधाल

शा. हजारीमलजी गजाजी वंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर
(सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी
धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी
आहोर विजयवाड़ा

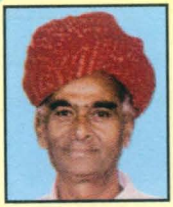

श्री शांतिलालजी सोलंकी
जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी
तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी
गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी
सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी
विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी
सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी
बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी
वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी
भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी
धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी
धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी
दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी
संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी
सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत
गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी
चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा
कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी
कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी
संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

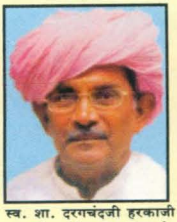

स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी
सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

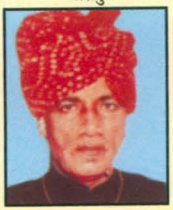

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी
जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी
संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

35356

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

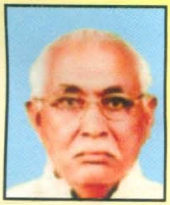

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

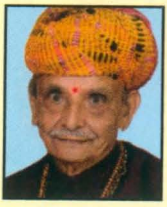

स्व.श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा-थलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

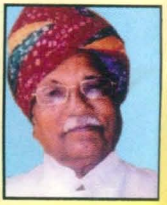

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

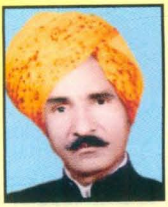
स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

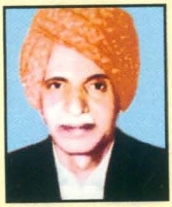
स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

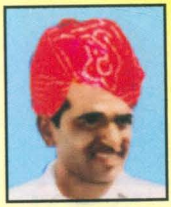
संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

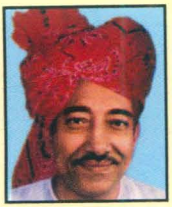
श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

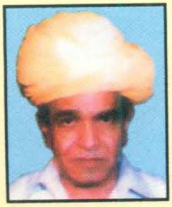
श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

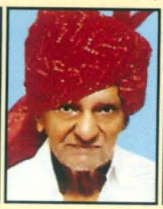

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

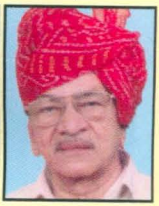

शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

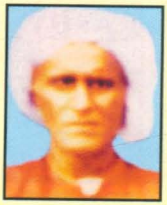

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

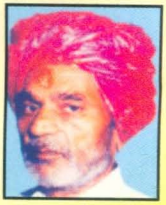

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

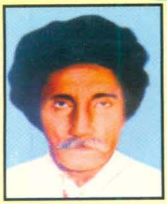
संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

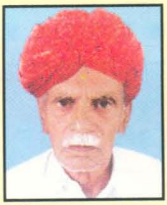
श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

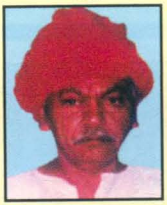
अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

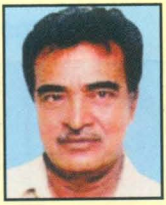
श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तळेरा कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

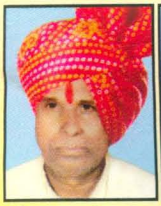
श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी सेठिया, कुशलगढ़

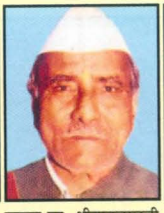
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी मेहता, कुशलगढ़

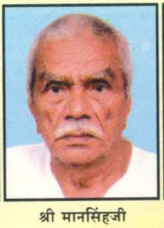
श्री मानसिंहजी राजगढ़

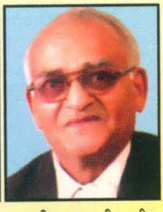
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय खाचरौद

कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

स्व.श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(वामनिया वाले)

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपड़ा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कवदी, बीजापुर (कर्नाटक)

शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

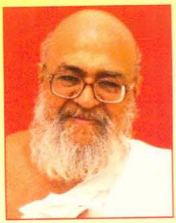

स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज

मुनि श्री प्रशमसेनविजयजी महाराज

गुरु दर्शन एवं चिंतन

थराद में जैनाचार्यों, साधु-साध्वियों आदि का सतत् आवागमन बना रहता था। जब कभी भी जैनाचार्य अथवा किसी मुनिराज का थराद में पदार्पण होता तो समीपवर्ती गाँवों के जिज्ञासु लोग उपदेशामृत का पान करने थराद पहुँच जाते थे। श्रीमान् स्वरूपचंदजी का परिवार भी ऐसे अवसरों पर थराद जाकर दर्शन-वंदन के साथ ही जिनवाणी के रसास्वादन का लाभ अवश्य प्राप्त करता। स्वरूपचंदजी ने अब थराद को ही अपनी कर्म भूमि बनाकर सपरिवार निवास करना प्रारम्भ कर दिया था। वि.सं. 2004 की बात है। थराद में इस वर्ष व्याख्यान वाचस्पति परम पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का वर्षावास अपने शिष्य परिवार सहित था। स्मरण रहे कि परम पूज्य आचार्यश्री अपने समय के प्रकाण्ड विद्वान एवं कुशल प्रवचनकार थे। वर्षावास काल में आचार्यश्री अपने समय के प्रकाण्ड का पान करने के लिये श्रीमान स्वरूपचंदजी धरु अपने परिवार सहित थराद गये। किशोरवय के बालक पूनमचंद ने आचार्यश्री के दर्शन किये और उनके मार्मिक हृदयस्पर्शी प्रवचन पीयूष का पान किया। आचार्यश्री के प्रवचनों का पूनमचंद के किशोर हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा। मात्र 11 वर्ष की आयु में पूनमचंद के हृदय में वैराग्य की लहरें तरंगति हो उठीं। किन्तु इस परिवर्तन को वह स्वयं भी बराबर समझ नहीं पाया। प्रवचन श्रवण के पश्चात् पूनमचंद की गंभीरता में और अधिक वृद्धि हो गई। उसके चिंतन के विषय थे जन्म और मृत्यु, साथ ही मानव जीवन। वह जानना चाहता था कि जन्म क्या है ? मृत्यु क्या है? संसार में जब तक रहो, सांसारिक चक्र में उलझे रहो। उसके पश्चात् मृत्यु। परन्तु मृत्यु के पश्चात् क्या ? क्या फिर वही जन्म, वही सांसारिकता और वही मृत्यु ? यह तो एक चक्र हो गया जन्म और मरण का। क्या इससे छुटकारा नहीं मिल सकता ? कोई तो मार्ग

होगा जन्म-मरण का। क्या इससे छुटकारा नहीं मिल सकता? कोई तो मार्ग होगा जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा पाने का। एक दिन ऐसे तत्व चिंतन में लीन थे कि विचार आया, गुरुदेव का अनुकरण करना चाहिए। दीक्षा ले लेना ही श्रेयस्कर है। थोड़े के लिये बहुत को खो देना बुद्धिमानी नहीं है। लेकिन दीक्षा लेने के लिए माताजी और पिताजी से अनुमति लेना होगी। यह कैसे सम्भव होगा? क्या अनुमति मिल जावेगी ? कुछ दिन इसी उहापोह में व्यतीत हो गये। अविकार वैरागी मन कब तक सांसारिक बंधनों में बंधा रहता ? एक दिन घर में विस्फोट हो ही तो गया। बड़े ही आत्मविश्वास और दृढ़ शब्दों में पूनमचंद ने दीक्षा लेने की बात अपने माता-पिता के सम्मुख रख दी। माता-पिता पूनम के गुमसुम रहने से परिचित तो थे, लेकिन उन्हें यह कल्पना नहीं थी कि छोटा सा बालक इस स्थिति तक पहुँच गया है। जब दीक्षा लेने की बात आयी तो माता-पिता अवाक रह गये। माँ भाव विभोर हो उठीं। अपने अंक में लेकर कह बैठी, 'बेटा ! अभी तो तू बच्चा है ये दीक्षा लेने की बात तेरे दिमाग में कहाँ से आ गई ? अभी तूने देखा ही क्या है? यह काम बच्चों का नहीं है।' पिता बोलें तो क्या बोलें? सामने बैठे माँ-बेटे को अपलक दृष्टि से निहारते रहे। लेकिन बालक पूनम को माता के इन शब्दों से संतोष नहीं होना था सो नहीं हुआ। उसके दिमाग में तो एक बात अच्छी तरह बैठ गई थी कि थोड़े के लिये बहुत को नहीं गँवाना है। यदि जीवन को सार्थक ही करना है तो दीक्षा लेना अनिवार्य है। अन्यथा जीवन व्यर्थ है। फिर वही घानी के बैल की तरह चक्कर लगाते रहो। समय अपनी गति से बढ़ता रहा।

आपका चिंतन, अध्ययन अपनी गति से चलता रहा और एक दिन वह भी आया जब आपके हिमालयी संकल्प, अकाट्य तर्कों और दृढ़ता के आगे माता-पिता को आपकी बात स्वीकार करना पड़ी। धन वैभव एवं विलास का जीवन आपके मार्ग का रोड़ा नहीं बन सका। माता-पिता की ममता भी आपके इस पुनीत कार्य में बाधक नहीं बन सकी। जिस मार्ग पर आप चलना चाहते थे वह महायुद्ध का मार्ग तो है ही, स्वसुख का मार्ग तो है ही, पर इसमें पर कल्याण का अवसर अधिक है। क्षणिक सुख के स्थान पर स्थायी सुख है। सामान्य मानव भूल करता है, वह क्षणिक सुख को ही जीवन का अमृत समझ लेता है और अमृत को विष जानकर टालमटोल करता रहता है। आपश्री ने सच्चे सुख के मार्ग को शीघ्र ही जान लिया। दीक्षा लेने का भाव लेकर आप गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के पावन चरणों में जा पहुँचे। गुरुदेवश्री प्रतिदिन रात्रि को दो घंटे धर्म चर्चा करते थे। भक्त लोग उनसे प्रश्न पूछते थे एवं समाधान प्राप्त करते थे। पूनमचंद वहीं बैठकर धर्म चर्चा सुनकर मस्तिष्क में तथ्य एकत्र करते थे। गुरुदेवश्री की निगाह में भी आ गये। एक दिन गुरुदेवश्री ने पूछ ही

लिया- 'क्या विचार है तुम्हारा ?' पूनमचंद ने उत्तर दिया - 'मेरी इच्छा आपके साथ आने की है।' गुरुदेव ने कुछ नहीं कहा।

एक अन्य दिन पूनमचंद के मुख से निकल पड़ा- 'प्रभु ! मुझे दीक्षित करने की कृपा करें।

मैं भी उस मार्ग का अनुसरण करना चाहता हूँ जिसका आपने किया है। गुरुदेव ने देखा, एक किशोर, दिखने में तेजस्वी, होनहार युवक, ओजपूर्ण वाणी में दीक्षा लेने हेतु निवेदन कर रहा है। गुरुदेव ने यह भी सोचा कि ऐसे युवक-किशोर तो अनेक बार घर पर अनबन हो जाने से इधर-उधर भाग जाते हैं। कहीं यह किशोर ऐसे ही लड़कों में से तो नहीं। लेकिन पुनः ध्यान आया कि देखने में तो ऐसा नहीं लगता है। वाणी में ओज एवं संकल्प टपक रहा है। उन्नत ललाट कह रहा है कि इसका भविष्य उज्जवल है। जहाँ तक दीक्षा का प्रश्न है, एकदम तो नहीं दी जा सकती।

कुछ समय अपने साथ रखकर परख लेना चाहिये। ऐसा विचार कर गुरुदेव ने आपको कुछ आश्वस्त किया और अपने साथ रहने को कहा। किशोर पूनम को मन की मुराद मिली। दीक्षा न सही, मुनियों का साथ तो मिला। सेवा का अवसर मिला, जिन वाणी प्रतिदिन सुनने को मिलेगी। यह प्रारम्भ जानकर किशोर पूनम गुरुदेव एवं मुनिराजों की सेवा में दत्तचित्त हो गया। शीघ्र ही गुरुदेव ने जान लिया कि यह विलक्षण प्रतिभा और अपूर्व शक्ति का धनी है। इसके संकल्प को ढ़हाना आसान नहीं है। इस बीच जितने दिन आपश्री गुरुदेव की सेवा के लिये तत्पर रहते, बुजुर्ग एवं वरिष्ठ मुनिजनों के प्रति आज्ञाकारी रहते। जो भी समय मिलता उसमें थोड़ा अध्ययन मनन करते।

चातुर्मास के पश्चात् गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज ने ग्राम डोड़िया में वहाँ दर्शनार्थ गये पिता श्री स्वरूपचंदजी को कान में यह बताया। स्वरूपचंदजी ने कहा कि- 'यह अभी छोटा है' उन्होंने श्रीमान् स्वरूपचंद्रजी को सम्बोधित करते हुए कहा - आपका यह पुत्र भविष्य में आपके कुल का नाम उज्ज्वल करेगा। यदि आप इसे धर्म के प्रति समर्पित कर दें तो यह जैन शासन की अच्छी प्रभावना करेगा।' स्वरूपचंदजी ने उत्तर दिया- 'यह दीक्षा लेगा तो आपसे ही लेगा।'

पूनमचंद ने आचार्यश्री यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में रहने हेतु माता-पिता से अनुमति मांगी किन्तु, उस समय माता-पिता तत्काल तो कोई उत्तर नहीं दे सके, किन्तु विचार-विमर्श के पश्चात् उन्होंने पूनमचंद को गुरुदेव व्याख्यान वाचस्पति आचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में रहने के साथ ही दीक्षाव्रत अंगीकार करने की अनुमति प्रदान कर दी। इस अनुमति से पूनमचंद का रोम-रोम खिल उठा।

■■■

फैल रहा है नूर आज भी गुरु का

(साध्वी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

एक शिष्य अथवा शिष्या अपने गुरु को तटस्थ रूप से प्रस्तुत कर सके अतिशयोक्ति को स्थान न मिले प्रायः यह अविश्वसनीय लगता है। शिष्य गुरु के प्रति अत्यंत स्नेह से युक्त होने से उनके जीवन को ईमानदारीपूर्वक अंकित कर सके इसमें संदेह रहता है किन्तु शिष्य अपने गुरु के जीवन की जितनी स्पष्टता एवं गहराई से स्पर्शना करता है वैसा अनुभव शायद अन्य कोई नहीं कर पाता है। महापुरुषों के जीवन की आंतरिक गहराई में जाना इतना आसान नहीं है व्यक्ति समुद्र के तल में गोते लगाकर बाहर आ सकता है किन्तु किसी महापुरुष के जीवन को सम्पूर्ण रूप से समझ पाना, परख पाना कठिन ही नहीं लगभग असंभव है।

मानवता के मसीहा पुण्य सम्राट आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. एक ऐसे महापुरुष थे जिन्हें पाकर यह वसुंधरा भी कृतार्थ हुई, जिनसे सम्पूर्ण विश्व सदा दीप्तिवन्त हुआ सम्पूर्ण शासन-संघ-समाज उर्जस्विल रहा। उनका जीवन एक पहेली था उनका प्रत्येक क्षण रहस्यमय था। प्रत्येक जीव के प्रति भाव वत्सलता, लोकमंगल की उत्तम भावना की उत्ताल तरंगें उनके हृदय के भीतर सतत उछलती रहती थीं। धन से, ज्ञान से, संस्कार से यह व्यक्ति सामान्य है यह व्यक्ति विशिष्ट है ऐसा विभाजन उनकी दृष्टि में नहीं था। उनकी दृष्टि में प्रत्येक जीव के प्रति अपनत्व एवं सम्मान झलकता था। किस जीव को कब प्रोत्साहन देना, कब तटस्थता देना, वात्सल्य लुटाना, डांट पीलाना अनेक विरोधी भावों का संपुट उनके जीवन चरित्र का अंग था। उनका हर एक वचन हर एक प्रवृत्ति सप्रयोजन थी। महापुरुष का जीवन ऐसा ही होता है कि सचाई भी अतिशयोक्ति लगती है। किन्तु जब वह अनुभूति 2-4 लोगों की नहीं हजारों लाखों लोगों की सामुदायिक बन पाती है तब अविश्वास के लिए कोई स्थान नहीं रहता है। कुछ लोग पुण्यशाली होते हैं किन्तु पुरुषार्थी नहीं होते हैं। वे अपनी पुण्यरूपी पूंजी को खर्च करते रिक्त हो जाते हैं। नया कोई अर्जन नहीं कर पाते हैं। कुछ लोग पुरुषार्थी होते हैं किन्तु पुण्य उनका साथ नहीं देता है। वे परिश्रम तो करते हैं किन्तु विशेष उपलब्धि प्राप्त नहीं कर

एक शिष्य अथवा शिष्या अपने गुरु को तटस्थ रूप से प्रस्तुत कर सके अतिशयोक्ति को स्थान न मिले प्रायः यह अविश्वसनीय लगता है। शिष्य गुरु के प्रति अत्यंत स्नेह से युक्त होने से उनके जीवन को ईमानदारीपूर्वक अंकित कर सके इसमें संदेह रहता है किन्तु शिष्य अपने गुरु के जीवन की जितनी स्पष्टता एवं गहराई से स्पर्शना करता है वैसा अनुभव शायद अन्य कोई नहीं कर पाता है। महापुरुषों के जीवन की आंतरिक गहराई में जाना इतना आसान नहीं है व्यक्ति समुद्र के तल में गोते लगाकर बाहर आ सकता है किन्तु किसी महापुरुष के जीवन को सम्पूर्ण रूप से समझ पाना, परख पाना कठिन ही नहीं लगभग असंभव है।

मानवता के मसीहा पुण्य सम्राट आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. एक ऐसे महापुरुष थे जिन्हें पाकर यह वसुंधरा भी कृतार्थ हुई, जिनसे सम्पूर्ण विश्व सदा दीप्तिवन्त हुआ सम्पूर्ण शासन-संघ-समाज उर्जस्विल रहा। उनका जीवन एक पहेली था उनका प्रत्येक क्षण रहस्यमय था। प्रत्येक जीव के प्रति भाव वत्सलता, लोकमंगल की उत्तम भावना की उत्ताल तरंगें उनके हृदय के भीतर सतत उछलती रहती थीं। धन से, ज्ञान से, संस्कार से यह व्यक्ति सामान्य है यह व्यक्ति विशिष्ट है ऐसा विभाजन उनकी दृष्टि में नहीं था। उनकी दृष्टि में प्रत्येक जीव के प्रति अपनत्व एवं सम्मान झलकता था। किस जीव को कब प्रोत्साहन देना, कब तटस्थता देना, वात्सल्य लुटाना, डांट पीलाना अनेक विरोधी भावों का संपुट उनके जीवन चरित्र का अंग था। उनका हर एक वचन हर एक प्रवृत्ति सप्रयोजन थी।

(क्रमशः)

दृढ़ कर्मों से बंधन से मुक्ति

हम जैसे भी हैं उसका कारण स्वयं ही हैं। यदि हम सुखी हैं तो उस सुख का आधार-स्तंभ ही हम स्वयं हैं और यदि हम दुःखी हैं तो दुःख के काँटे स्वयं ही बोये हैं। प्रत्येक प्राणी स्वयं-ही-स्वयं के लिए उत्तरदायी है। हर वेदना, हर साता के लिए हमारे द्वारा किये गये कर्मों की ही भूमिका है। कर्मोदय को या तो भोगना पड़ता है या काटना पड़ता है। लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं जिन्हें उदय आने पर भोगना ही पड़ता है। आखिर कार्य ही तो वह देहरी है जहाँ विवश होकर व्यक्ति को अपना माथा झुका देना पड़ता है। यदि आत्मबल मजबूत है और साधना दृढ़ हो , सोच सम्यक् हो तो दृढ़ - से - दृढ़ कर्मों के बंधन से हम मुक्त हो सकते हैं।

पुण्य सम्राट की जयकार

(श्री निलेश लोढ़ा- सहसचिव नवयुवक परिषद, रतलाम)

धन्य है पेपराल नगरी को, जन्में मगसर बदी तेरस को,
लिया जयंतसेन सूरि अवतार, बोलो पुण्य सम्राट की जयकार ।।1।।
स्वरूप धरु कुल के उजियारे, माता पार्वती के पूनम प्यारे,
किया सबने मिलकर जयकार बोलो पुण्य सम्राट की जयकार ।।2।।
गुरु यतींद्र से 'जयंत' कहाये, परिषद व शाश्वत धर्म को पाये,
करने सत्य धर्म प्रचार बोलो पुण्य सम्राट की जयकार ।।3।।
गुरु जयंत की सियाणा दीक्षा, नवकार आराधना की शिक्षा,
करते प्रचार महामन्त्र नवकार, बोलो पुण्य सम्राट की जयकार ।।4।।
आचार्य पदवी भांडवपुर पाये, 'राष्ट्रसंत' जावरा कहलाए,
त्रिस्तुतिक संघ प्रगति चिंतक, बोलो पुण्य सम्राट की जयकार ।।5।।
राजस्थान, गुजरात, मालवा, दिल्ली, महाराष्ट्र, कर्नाटका,
दक्षिण प्रांतों में धर्म प्रचार, बोलो पुण्य सम्राट की जयकार ।।6।।
मालवा को हृदय में बसाये, अन्तिम चातुर्मास 'रतलाम' कहाये,
कराए ऐतिहासिक 'आत्मोद्धार' बोलो पुण्य सम्राट की जयकार ।।7।।
सम्पूर्ण जीवन की साधना सारी, भांडवपुर तीर्थ में लीनी समाधी,
कहाये मधुकर 'पुण्य सम्राट' बोलो पुण्य सम्राट की जयकार ।।8।।

जय जयंत-जय जयंत - जय जयंत

(श्री शांतिलाल कोठारी, मंदसौर)

जय जयंत, जय जयंत, जय जयंत गुरुदेवा !
माता पार्वती पिता, स्वरूपचंद जेवा !!
धन्य-धन्य भरतभूमि पेपराल गुजरात का !
धरू कुल जन्म धाम, गुरुदेव आपका !!
यथा नाम तथा गुण, पूनम खिला चन्द्रमा !
माता पार्वती पिता, स्वरूपचंद जेवा !!

जय जयंत, जय जयंत, जय जयंत गुरुदेवा !
माता पार्वती पिता, स्वरूपचंद जेवा !!
धन्य-धन्य भरतभूमि पेपराल गुजरात का !
धरू कुल जन्म धाम, गुरुदेव आपका !!
यथा नाम तथा गुण, पूनम खिला चन्द्रमा !
माता पार्वती पिता, स्वरूपचंद जेवा !!
सूरि यतीन्द्र की, करी चरण सेवा !
जयन्त नाम धरकर, पाया शाश्वत मेवा !!
जिन राजमार्ग का, बना बसेरा तेरा !
माता पार्वती पिता, स्वरूपचंद जेवा !!
राष्ट्रसंत लोकसंत, पुण्यवंत कहाये !
जन-जन भावो में, गुरु आप समाये !!

आदरांजली

(श्री पुष्पा कोचर)

(तर्ज- चलो रे डोली उठाओ)

आओ रे भक्तों करलो नमन, गुरु को हमारे वन्दन-वन्दन ।
श्री जयन्त गुरुवर की महिमा अपार, बरसे श्री संघ पर बारम्बार ।
पेपराल में जन्म, भाण्डवपुर में समाधि, ज्ञान की ज्योति घर-घर जगादी ।
मधुकर है गुणों की खान- ऐसे गुरु की जय-जयकार ।
धन्य है माता, धन्य पिता, ऐसे रत्न को जन्म दिया।
दे दिया साहित्य भण्डार, ऐसे गुरु की जय-जयकार ।
महावीर के थे तुम सच्चे सेवक, राजेन्द्र गुरु के पाठ प्रेरक ।
हम पर है आपका उपकार, ऐसे गुरु की जय-जयकार ।
आप चले गुरु , छोड़ हमको कहाँ जायें गुरु तुम बिन हम ।
पुष्पा के दिल में तेरा निवास ऐसे गुरु को वन्दन ।।

तू ही है एक सहारा

(श्री सुरेश समीर, राणापुर)

जयंत तेरे भगतों का तू ही एक सहारा है
तेरे ही भरोसे चलता, कुटुम्ब हमारा है।।
होठों पे जब से आया तेरा नाम है
रौनक मेरे घर में, सुबह और शाम है
तेरी ही कृपा से चलता, जीवन हमारा है।
तेरे प्रवचनों में जब सामने मैं बैठा था
मंच से ही आपने नाम मेरा पुकारा था
तब से ही बुलंदियों पर नाम हमारा है ।
नित्यसेन दिया तूने , दिया जयरत्न है
अशोक, सिद्ध, विद्धद दिया दिये कई संत हैं
तेरे ही भरोसे जग में झंडा ऊंचा हमारा है ।
सही माने भगवन तुमको ज्योति शीष झुकाये है
सुरेश समीर पल-पल रोता तेरी याद सताये है
तेरे ही भरोसे गुरुवर अब उद्धार हमारा है ।।

गुरुवर का दरबार...

गुरुवर का दरबार समवसरण सा लगता था।
भक्तों का तो यहाँ, ठाठ खूब लगता था।
वही रोशनी और चमक, जयंत गुरु की कृपा है।
संस्कारों का दीप घर-घर जलता था।
गुरुवर का दरबार समवसरण सा लगता था।

जिनवाणी का पावन झरना झर-झर बहता था।
बहती निर्मल काया से, भव्य जन निरवरता था।
तप-आराधना का रंग, हवाओं में घुलता था।
भक्तों का मानो, भगवान यहाँ बसता था।
गुरूवर का दरबार समवसरण सा लगता था।

गुरुवर तो देवलोक में भक्ति उत्सव मना रहे ।
धर्म की राह पर चलाकर सदमार्ग बता रहे ।
कर्मों को खपाकर जीवन जीना सिखा रहे ।
अर्जी एक है जीवन की बस, प्रिया के सर पर हाथ सदा रहे।
गुरूवर का दरबार समवसरण सा लगता था।

तर्ज– ओ पालन हारे, निर्गुण और न्यारे

(साध्वी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

पेपराल वाले गुरुवर हो प्यारे
वंदनविधि तेरी मैं जानुँ नाही
गुरु जयंतसेन देते, सबको चैन ....
छोड़कर तुझे कहीं और जाऊँ नहीं
देह गुफा में गुरु रहते निर्लेप
अच्छे बुरे का लागे नाही लेप
रत्नत्रयी स्वजन पूंजूँ तेरे चरण
छोड़ तुझे कहीं
मैं था भोला शरण तुमरी आया
तुम बिन मुझे न कुछ यूँ मन कराया
तुमसा नहीं और, देखा चित्त चोर ....
छोड़ तुझे कहीं...
राग सर्पो की मुझमें थी फुफकार
मयूर बन जो तुमने की हुंकार
व्यर्थ है रंजन दिया ज्ञान अंजन....
छोड़ तुझे कहीं....
बड़ा कठिन था, वीतराग रुचि पाना
दृढ़ भाव गुरुवर, तेरा माना
निष्पुण्यक मैं अधम, कृपा की भगवन्....
छोड़ तुझे कहीं...

■■■

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

दिसम्बर-2020 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 68 अंक 12
वीर सं. 2541 राजेन्द्र सं. 109 विक्रम सं. 2073

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुधीर लोढ़ा	(महामंत्री)
श्री ओ.सी. जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)
आदि	

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए **सुरेन्द्र लोढ़ा**, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

संचालक- अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

प्रेरक प्रसंग

न मैं किसी का, न कोई मेरा

'कौन ?''

'मैं ! मैं याने शुभंकर सेठ का पुत्र सिद्ध !'

'इतनी रात, यहाँ क्यों ?'

'मेरी माँ बोली- इतनी रात को घर आने वाला मेरा बेटा नहीं हो सकता चाहे तू है, फिर भी घर का द्वार नहीं खुलेगा, जहाँ दरवाजा खुला हुआ हो, चला जा। गुरुदेव ! मैंने देखा आपके द्वार खुले हैं, मैं अब आपकी शरण में हूँ।'

'कैसे ? '

'आप ही मेरे शरणदाता हो। बस ! मैं आपके यहाँ आ गया हूँ, आपका हूँ।'

गुजरात के श्रीमाल नगर में सेठ शुभंकर के पुत्र सिद्ध का विवाह धन्या के साथ हुआ। सिद्ध कुसंगति में लग गया। वह देर रात्रि घर लौटता था। परेशान धन्या ने सास को सब बता दिया। सास ने कहा-

'बेटी ! आज तू तेरे कमरे में सो, मैं दरवाजे पर सोती हूँ।' सिद्ध के आने पर माता ने किंवाड़ नहीं खोले तथा टका-सा जवाब दे दिया।

सिद्ध रात्रि में उपाश्रय का दरवाजा खुला देखकर वहाँ पहुँच गया। गुरु गर्गर्षि ने कहा कि- 'हमारे दरवाजे में वही आ सकता है जो हमारे जैसा बने।' सिद्ध का हृदय परिवर्तन हो चुका था। अतः प्रातः काल परिवारजनों ने आकर सिद्ध से बहुत प्रार्थना की लेकिन उसने कह दिया- 'अब जिनने मुझे शरण दी, मैं उनका ही हूँ। संसार में न मैं किसी का, न कोई मेरा! मेरी अपनी आत्मा है, मुझे उसका कल्याण करना है, सिद्ध सिद्धर्षि बन गये।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1.	श्री जयन्तसेन जयनाद	7
2.	फैल रहा है नूर आज भी गुरु का (साध्वी श्री रुचिदर्शनाश्रीजी म.सा.	10
3.	पुण्य सम्राट की जयकार (नीलेश लोढ़ा, रतलाम)	12
4.	जय जयंत-जय जयंत-जय जयंत (शांतिलाल कोठारी, मंदसौर	12
5.	आदरांजली (पुष्पा कोचर)	13
6.	तू ही है एक सहारा (श्री सुरेश समीर, राणापुर)	14
7.	ओ पालन हारे, निर्गुण और न्यारे (साध्वी श्री रुचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	15
8.	अनुक्रमणिका	17
9.	परमाधामी देव	18
10.	अशुभ वचन योग (34) (श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिश्वरजी म.सा.	20
11.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	23
12.	गणधरवाद (लेखांक-73) (श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	25
13.	अध्यक्षीय पाती (वाघजीभाई वोरा)	28
14.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	29
15.	चिंतन का चित्रांकण (श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिश्वरजी म.सा.)	30
16.	विशेषज्ञ मांसाहार के विरोध में (श्रीमद् विजय जयरत्नसूरिश्वरजी म.सा.)	31
17.	महाराजा श्रेणिक (मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)	32
18.	समय और सामायिक (2) (डॉ. दिलीप धींग)	33
19.	संसार परिभ्रमण बंध और समाप्ति संवर- निर्जरा (शांतिलाल सगरावत, मंदसौर)	35
20.	भगवान का उपहार (रमेश चोपड़ा)	37
21.	प्रश्नोत्तरी	38
22.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (संशोधक मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)	39
23.	धारावाहिक उपन्यास (लेखांक -6) (श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	40
24.	हमारी पसंदगी की संज्ञाय (साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	42
25.	जिनशासन की वर्णमाला (5) (साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	44
26.	शांति और क्रांति के अग्रदूत दादा गुरुदेव	46
27.	प्र.आसोज सुदी- 10 सूरि मंत्र साधना से तेज बढ़ाएं (मुनिराज श्री संयमरत्नविजयजी म.सा.)	49
28.	गुरु परम्परा (मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)	50
29.	श्री नवकार कल्पद्रुम (मुनिराज श्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा.)	52
30.	गुजराती संभाग	54-69
31.	कुमकुम सने पगलिये	70-78
32.	श्री संघ सौरभ	79-80
33.	जैन विश्व	81-82
34.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	83-84

नर्क में भयंकर यातना देने वाले

परमाधामी देव

जैन दर्शन के अनुसार लोक को 14 रज्जू प्रमाण माना गया है। इस लोक के तीन भाग हैं- 1- ऊर्ध्वलोक, 2- मध्यलोक और 3- अधोलोक।

नरक के जीवों का निवास अधोलोक में है। जहाँ सात नरक भूमियाँ क्रमशः एक के नीचे दूसरी अवस्थित हैं। जहाँ नारक जीवों के बारह (बंदीगृह की तरह) उत्पत्ति स्थान हैं, नरकागार हैं। ये नरकागार आजन्म कारागर वाले कैदियों की अंधेरी कोठरियों से या काले पानी की सजा से किसी तरह भी कम नहीं हैं, बल्कि उनसे भी कई गुने भयंकर दुर्गन्धमय, अंधकारमय और सड़ांध वाले हैं। मनुष्य लोक में जब कोई चोरी या हत्या जैसा भयंकर अपराध करता है तो पुलिसवाले उसे पकड़कर थाने में ले जाते हैं, उससे अपना अपराध स्वीकार करवाने के लिये निर्दयता से मारते, पीटते और सताते हैं। वैसे ही नरक में कुछ असुरकुमार जाति के देव हैं जो इन नारकों को अपने पूर्वकृत अपराधों की याद दिला-दिलाकर भयंकर से भयंकर यातना देते हैं। वे बड़ी बेरहमी से उन्हें विविध शस्त्रों से मारते, पीटते हैं, उनकी अंगोपांगों को काट डाल देते हैं, शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं, उन्हें पैरों से कुचलते हैं, उन्हें नोचते हैं, शरीर की बोटी-बोटी काट खाते हैं।

ये यमकायिक नरकपाल देव, बड़े ही अधार्मिक वृत्ति के क्रूरातिक्रूर परिणाम वाले रौद्रध्यानी होते हैं। इन्हें नारकों को यातना पाते देखने में और उन्हें यातना देने में बड़ा आनन्द आता है। ये शकेन्द्र के दक्षिण दिशा के लोकपाल यम महाराज के अधीन होते हैं। ये परमाधर्मिक देव भवनपति जाति के देव होते हैं। प्रथम नरक भूमि में जो 12 आंतरे बताये गये हैं, उनमें से बीच के 10 आंतरों में भवनपति देव रहते हैं। ये तीसरी नरकभूमि तक जाते हैं। ये वैक्रियलब्धि से नाना रूप बनाकर या भयावने पशु आदि के रूप धारण करके अथवा नाना प्रकार के शस्त्र- अस्त्र बनाकर नारकियों को निरन्तर बेरहमी से सताते रहते हैं।

इन परमाधर्मिक देवों का विशेष परिचय भगवती सूत्र की टीका में विस्तार के साथ बताया है, जिसका सार इस प्रकार है-

1. **अम्ब** : असुर जाति के ये देव नारकी जीवों को ऊपर आकाश में ले जाकर एकदम छोड़ देते हैं।

2. **अम्बरीय** : छुरी आदि के द्वारा नारकी जीवों के छोटे-छोटे टुकड़े करके भाड़ में पकने योग्य बनाते हैं।

3. **श्याम** : ये रस्सी या लात - घूंसे आदि से नारकी जीवों को पीटते हैं और भयंकर स्थानों में पटक देते हैं, ये जो काले

रंग के होते हैं, अतः श्याम कहलाते हैं।

4. शबल : जो नारकी जीवों के शरीर की आंते, नसें और कलेजे आदि को बाहर खींच लेते हैं। ये शबल अर्थात चितकबरे रंग वाले होते हैं, इसलिये शबल कहलाते हैं।

5. रूद्र(रौद्र) : जो नारकी जीवों को भाला, बर्छी आदि शस्त्रों में पिरो देते हैं और जो रौद्र (भयंकर) होते हैं, इन्हें 'रूद्र' कहते हैं।

6. उपद्रव : (उपरौद्र) जो नैरियकों के अंगोपांगों को फाड़ डालते हैं और जो महारौद्र (अत्यन्त भंयकर) होते हैं, उन्हें 'उपरौद्र' कहते हैं।

7. काल : जो नैरयिकों को कड़ाही में पकाते हैं और काले रंग के होते हैं, उन्हें 'काल' कहते हैं।

8. महाकाल : जो नारकीय जीवों के चिकने माँस के टुकड़े- टुकड़े करते हैं एवं वापस उन्हीं को खिलाते हैं और बहुत काले होते हैं, उन्हें 'महाकाल' कहते हैं।

9. असिपत्र : जो वैक्रिय शक्ति द्वारा असि अर्थात् तलवार के आकार वाले पत्तों से युक्त वन की विक्रिया करके उसमें बैठे हुए नारकी जीवों के ऊपर तलवार सरीखे पत्ते गिराकर तिल सरीखे छोटे-छोटे टुकड़े कर डालते हैं, उन्हें 'असिपत्र' कहते हैं।

10. धनुष : जो धनुष के द्वारा अर्द्ध-चन्द्रादि बाणों को फैंककर नारकी जीवों के कान आदि को छेद देते हैं भेद देते हैं और भी दूसरी प्रकार की पीड़ा पहुंचाते हैं, उन्हें 'धनुष' कहते हैं।

11. कुम्भ : जो नारकी जीवों को कुम्भियों में पकाते हैं, उन्हें 'कुम्भ' कहते हैं।

12. बालूक : जो वैक्रिय द्वारा बनाई हुई कदम्ब पुष्प के आकार वाली अथवा वज्र के आकार वाली बालू रेत में नारकी जीवों को चने की तरह भूनते हैं, उन्हें 'बालूक' कहते हैं।

13. वैतरणी : जो असुर मांस रूधिर, तांबा, सीसा आदि गरम पदार्थों से उबलती हुई नदी में नारकी जीवों को फेंककर उन्हें तैरने के लिये बाध्य करते हैं, उन्हें 'वैतरणी' कहते हैं।

14. खरस्वर : जो वज्र कण्टकों से व्याप्त शाल्मली वृक्ष पर नारकी जीवों को चढ़ाकर कठोर स्वर करते हुए अथवा करूण रूदन करते हुए नारकी जीवों को खींचते हैं उन्हें 'खरस्वर' कहते हैं।

15. महाकोष : जो डर से भागते हुए नारकी जीवों को पशुओं की तरह बाड़े में बंद कर देते हैं तथा जोर से चिल्लाते हुए उन्हें वहीं रोके रखते हैं, उन्हें 'महाकोष' कहते हैं।

पूर्व जन्म में क्रूर क्रिया तथा संक्लिष्ट परिणाम वाले हमेशा पाप में लगे हुए भी कुछ जीव, पंचाग्नि तप आदि अज्ञानपूर्वक किये गये काय-क्लेश से आसुरी गति को प्राप्त करते हैं और परमाधार्मिक देव बनते हैं।

■■■

प्रवचन

अशुभ वचनयोग (34)

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

'उत्तराध्ययनसूत्र ' के रूप में शिष्यों के लिए अन्तिम उपदेश का उपक्रम करते हुए वीतरागदेव चरम तीर्थंकर प्रभु महावीर स्वामी फरमाते हैं :-

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुव्विं सुणेह में।।

संयोगों से विप्रमुक्त (रहित) अनगार (गृहत्यागी) भिक्षुओं (साधुओं) के लिए मैं विनय (अनुशासन) का स्वरूप प्ररूपित करने वाला हूँ। मुझे (मेरे द्वारा कही जाने वाली बातें) क्रमशः सुनें। अपने संयोग से आत्मा को कलुषित करने वाले अशुभ वचन का विवेचन यहाँ किया जा रहा है।

मा वोच फरूसं किंचि ।। - धम्मपद 10/5
अर्थात् जरा भी कठोर वचन मत बोलो ।

महात्मा बुद्ध की यह अनुभवपूर्ण शिक्षा सभी मनुष्यों के लिए है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी इसका पूरी तरह समर्थन किया है। लिखा है-

'तुलसी' मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर ।
वशीकरण यह मन्त्र है, तज दे वचन कठोर ।।

मधुर वचन को उन्होंने वशीकरण मन्त्र माना है और कठोर वचन के

त्याग की प्रेरणा दी है। अंधे को भी यदि अन्धा कहा जाए तो उसे बुरा लगता है-

'आँधे ने आँधो कह्याँ, कड़वा लागे बैण।
धीरे -धीरे पूछिये, किस विध फूटा नैण ?

इसलिये अन्धे को 'सूरदास' और काने को 'जायसी' कहा जाता है। कुदरत ने भी कठोर वचन न बोलने का संकेत जीभ में हड्डी न बनाकर दिया है। उर्दू का एक शेर है।

कुदरत को भी मंजूर न सख्ती जबान में ।
पैदा हुई न इसलिए हड्डी जबान में ।।

बिना हड्डी की जीभ कितनी कोमल है। हमारी वाणी भी उतनी ही कोमल होनी चाहिए। नीतिकार कहते हैं कि हमें मर्मभेदी वाक्य नहीं बोलना चाहिएः-

मर्मवाक्यमपि नोच्चरणीयम् ।।

यदि कोई दूसरों का मर्मभेदी रहस्य सुना रहा है तो हमें मूक बन जाना चाहिए अर्थात् उसका समर्थन या अनुमोदन नहीं करना चाहिए :-

सदा मूकत्वमासेव्यम् वाच्यमानेऽन्यमर्मणि ।। - विवेकविलास :

यदि कोई अपने मर्म पर प्रहार कर रहा हो तो । कहा है :-

श्रुत्वा नूनं स्वममर्माणि बाधिर्यं कार्यमुत्तमै : ।। - विवेकविलास :

अपने मर्म की बातें सुन रहे हों तो उत्तम पुरुषों को बहरा बन जाना चाहिए। सुनी गई मार्मिक बातों पर उपेक्षा करनी चाहिए। उन पर ध्यान देने से मन में वेदना होती है। यदि हमारी ही किसी भूल पर मर्म वचन बोला गया हो तो उस भूल को सुधार लें और भविष्य में वैसी भूल न करने का संकल्प लें। यदि वास्तव में हमारी कोई भूल नहीं है तो फिर हमें लोगों

के मार्मिक वचनों की जरा भी परवाह नहीं करनी चाहिए। आगे-पीछे सबको सच्चाई का पता लग ही जाएगा और तब हँसी उड़ाने वाले (मर्मवचन बोलने वाले) स्वयं ही हँसी के पात्र बन जायँगे।

दो व्यक्ति जब किसी विषय पर चर्चा करते हैं तो वह वाद कहलाता है 'नालन्दा विशाल शब्दसागर' के अनुसार किसी तथ्य या तत्त्व के निर्णय के लिए दो व्यक्तियों के बीच होने वाले तर्क को 'वाद' कहा जाता है।

वादे वादे जायते तत्त्वबोधः।।

जिज्ञासा -भाव से किए गए प्रत्येक वाद से तत्त्वबोध होता है, परन्तु केवल अपने पाण्डित्य की धाक जमाने के लिए जो वाद किया जाता है, वह वैररूपी आग भड़काने वाला होता है-

वादे वादे वर्धते वैरवह्नि ।।

यह सूक्ति वहाँ चरितार्थ होती है। ऐसा वाद राग द्वेष उत्पन्न करता है -

रागदोसकरो वादो ।। आचारांग चूर्णि 1/7/1

-राजनीति में पाँच वाद प्रसिद्ध है। उन्हें एक विचारक ने बहुत मनोरंजक उदाहरणों से इस प्रकार समझाने का प्रयास किया है-

(1) समाजवाद - यदि तुम्हारे पास दो गाये हैं तो उनमें से एक गाय अपने पड़ौसी को दे दो।

(2) साम्यवाद - यदि तुम्हारे पास दो गायें हैं तो उन्हें सरकार को दे दो। उनका दूध सरकार निकालेगी और सबको बराबर-बराबर बाँट देगी।

(3) फासिस्टवाद - दोनों गायें तुम अपने ही पास रक्खो, उन्हें पालो, किन्तु उनसे निकला दूध सरकार को दे दो। उसी दूध में से थोड़ा तुम्हें बेच दिया जाएगा।

(क्रमशः)

■■■

सम्पादकीय

'मैं' के उत्तर की तलाश

(सुरेन्द्र लोढ़ा)

मैंने अहर्निश भटकते/भमते/भ्रमण करते हुए, भावों की उत्प्रेरणा की पूर्ति करते हुए संसार को कई दृष्टि बिन्दुओं से देखा/परखा/ इसका निरीक्षण किया है, लेकिन कभी भी अपने अन्दर अन्तर को दृष्टिभूत करने का साहस नहीं किया है। 'मैं' क्या हूँ मेरे अंतर में किसका आधिपत्य है? कौन मुझे कठपुतले की भांति नृत्य करवाता है? ऐसे कई प्रश्न 'मैं' के संदर्भ को मुख्य बनाकर किये जा सकते हैं। लेकिन उनका समाधान मैं निष्पक्षता से करने में अभी तक पराग मुख हूँ।

मैं हकीकत में वह नहीं हूँ जो अंग-प्रत्यंगों तथा आकार के रूप में शरीर नाम से निर्मित है, क्योंकि यह तो यहीं नष्ट होने वाला है, एक दिन 'मैं' रह जाऊँगा तथा वह जल जायेगा/ सड़ जायेगा, गल जायेगा/ भस्मीभूत हो जायेगा। मैंने शरीर के रूप में जिस दिन जन्म लिया था, उस दिन एक धागा भी मैं अपने पूरे शरीर पर कहीं बंधा हुआ लेकर नहीं आया था। जिस दिन जाऊंगा कोई पोटली, कोई राखी या कोई जेवर मैं नहीं ले जा पाऊंगा। अन्न का एक कण भी उस समय मेरे मुँह या हाथ में होगा वह यहीं रह जायेगा। मैं इस सत्य से अवगत हूँ कि जिस दिन मेरा जन्म हुआ उसके साथ मेरी मृत्यु भी उसी दिन से मेरे साथ है तथा वह किस दिन चुंगुल में फंसाकर इस संसार से मुझे बिदा कर देगी, यह भी निश्चित है। लेकिन फिर भी मैं अपने आपको पहचान नहीं पा रहा हूँ। मुझे पथ भ्रष्ट कर रहे, राग, द्वेष मोह, आसक्ति, कषाय, आश्रवों की वास्तविकता को मैं स्वीकार नहीं कर पा रहा हूँ।

हरक्षण, हरपल मेरे बौने शरीर में विशालकाय अहंकार मेरे विवेक, बुद्धि तथा विनय पर आधिपत्य किये उन्मत हैं। जब मैं अहंकार की चोटी पर अपने आपको पाता हूँ, नेपोलियन को अदूरदर्शी तथा हिटलर को बुद्धिहीन दुराग्रही देखने लगता हूँ, चन्द्रगुप्त मौर्य तथा अशोक मेरे सामने अपना महत्व खोते हुए दिखाई देने लगते हैं। जबकि इन सभी के सम्मुख मैं नगण्य हूँ। अहंकार न मुझे जमीन तलाशने दे रहा है,न आसमान की छाँया प्राप्त करने दे रहा है। अहंकार ने मेरा सबसे

कटाव बना दिया है। मैं अपने आपको भूल गया हूँ, उसने मुझे कहीं का नहीं रखा है। यदि मुझमें अहंकार नहीं होता तो मैं अवतार के समकक्ष होता।

मैं निरंतर सोचता रहा हूँ कि मैं जिस क्षण संसार से बिदा लेकर चला जाऊंगा उस क्षण मेरे परिवार का क्या होगा? मेरा समाज मेरे बिना कैसे संचालित हो पायेगा? मेरे दायित्व अनाथ हो जाएंगे, उनका निर्वाह कौन कर पायेगा ? लेकिन मैं यह नहीं सोच पाता हूँ कि मेरे चले जाने से क्या फर्क पड़ता है? संसार/समाज/परिवार के कार्य पूर्व में भी गतिशील रहे हैं, मेरी अनुपस्थिति में कुछ समय निर्वाह की प्रतीति करवा सकता है परन्तु कहीं कुछ रुकना नहीं है। लोग मुझे भूलते जाएंगे। मुझे सात पीढ़ी पूर्व कौन अपने ही पूर्वज थे यह भी कुछ स्मरण नहीं है। आखिर अनादिकाल से निरंतर इस परम्परा में एक हजार या दो हजार कम या इससे पूर्व भी कोई न कोई तो मेरे परिवार के पूर्वज हुए ही होंगे क्या उनके बारे में मुझे कोई ज्ञान है, मैं उनका नाम भी जानता हूँ। हम लोग सभी को भूल गये हैं, हम इस हकीकत को क्यों नहीं स्वीकार करते कि काल के महासागर में हमारा नाम भी इसी तरह डूब जायेगा. जिस यश के लिये, नाम व सम्पत्ति के लिये हम अपना वर्चस्व दांव पर लगाकर खेलते रहते हैं वह कहीं भी किसी अंग में भी मेरे साथ नहीं रहेगा। मैं आज जितनी चिंता कर रहा हूँ, वे सभी मुझे समय के साथ विस्मृत कर देंगे। उनकी किसी की बात क्यों करूं मैं भी तो इस भव में कहीं से आया हूँ ? पूर्व भव में मेरे माता-पिता, बेटे-बेटी, काका-काकी, मामा-मामी... और सभी रिश्तेदार रहे होंगे, क्या किसी से आज मेरा सम्पर्क है? क्या किसी का नाम व पता स्मरण है? हम लोग एक - दूसरे के सुख-दुःख के बारे में जानते हैं? नहीं, नहीं... तब मुझे किसके लिये कुछ करना चाहिए? ऐसी बात भी मुझे समझ में नहीं आती है या समझ में आती है तो मैं समझना नहीं चाहता हूँ।

वर्तमान में जो कुछ भी मेरी आसक्ति है। मेरी आसक्ति की दिशा मुझे मेरे जीवन उद्देश्य के रहस्य तक नहीं पहुंचने दे रही है। भौतिक सुखों तथा भौगोलिक आनन्द में इतना मस्त हो जाता हूँ कि आत्मा तथा उसके हित की जीवन चर्या से एकदम दूर रह जाता हूँ। आत्मा का उद्धार या कल्याण मेरी प्राथमिकता पर नहीं आ पाते।

'मैं' को मैं नहीं जान पाया हूँ, तत्सम्बन्धित प्रश्न अभी भी अनुत्तरित है।

■■■

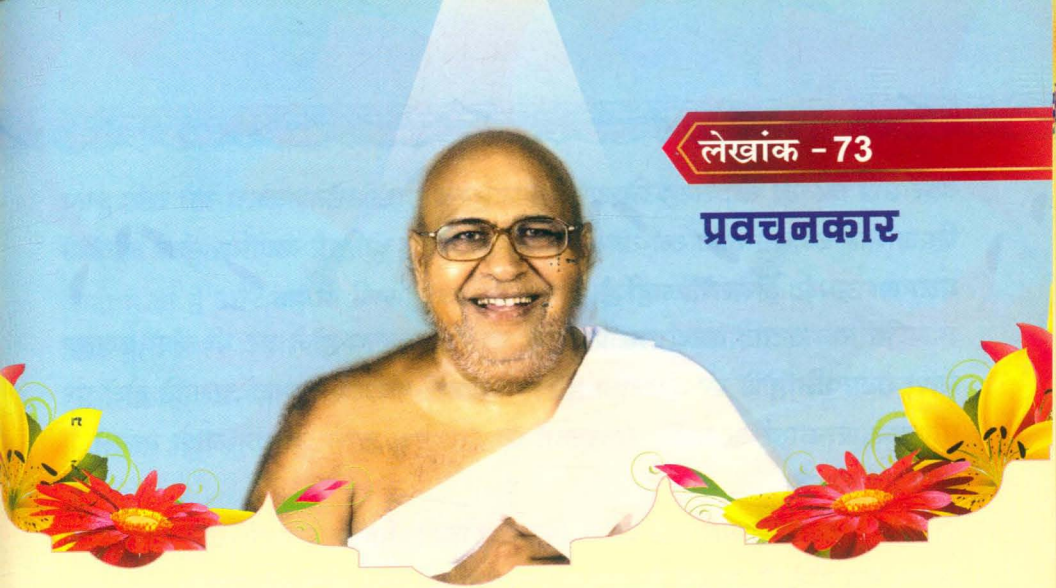

लेखांक - 73

प्रवचनकार

गणधरवाद

(स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

भव्य- अभव्य का भेद

मंडिक- सभी जीव जब समान होते हैं, तो फिर उनमें भव्य और अभव्य ऐसा भेद किसलिए ? इसके अतिरिक्त सभी जीवों के समान होने पर भी जैसे नारक, तिर्यंच आदि भेद हैं वैसे ही भव्य और अभव्य भेद भी संभव है इसमें कुछ विरोध नहीं है- ऐसा तो कहा नहीं जा सकता है। क्योंकि जीव के नारकादि भेद कर्मकृत हैं, स्वाभाविक नहीं हैं। पर आप तो कहते हैं कि भव्य-अभव्य यह भेद कर्मकृत नहीं है, किन्तु स्वाभाविक है। इसलिए प्रश्न है कि जीव के ऐसे स्वाभाविक भेद मानने का क्या कारण है?

महावीर- आयुष्मन् ! जीव और आकाश दोनों द्रव्यत्व, सत्व, प्रमेयत्व, ज्ञेयत्व आदि धर्मों के कारण समान होने पर भी जीवत्व और अजीवत्व, चेतनत्व और अचेनतत्व आदि रूप से जीव एवं आकाश में स्वभाव भेद है, वैसे ही सभी जीव जीवत्व के कारण समान होने पर भी भव्यत्व और अभव्यत्व के कारण भव्य और अभव्य में स्वभाव भेद मानने में क्या बाधा है?

अनादि होने पर भी भव्यत्व का अन्त

मंडिक- आर्य ! यदि आप भव्यत्व को स्वभाविक मानते हैं, तो

फिर उसे जीवत्व की तरह नित्य भी मानना चाहिये और भव्यत्व को यदि आप नित्य मान लें, तो जीव को कभी मोक्ष नहीं होना चाहिए। क्योंकि मुक्त जीवों में भव्य या अभव्य जैसा भेद नहीं है।

महावीर- घटादि कार्य का प्राग्भाव अनादि स्वरूप होने पर भी जैसे उसका नाश घटोत्पत्ति होने पर हो जाता है, उसी प्रकार भव्यत्व स्वभाव अनादि होने पर भी ज्ञान, तप एवं अन्यान्य क्रियाओं के आचरण द्वारा उसका नाश मानने में क्या एतराज है।

मंडिक- आपने प्राग्भाव का उदाहरण दिया , किन्तु वह तो खर विषाणवत् अभाव रूप होने से अवस्तु है। इस कारण वह उदाहरण नहीं बन सकता।

महावीर - वह उदाहरण बन सकता है, क्योंकि घट प्राग्भाव अवस्तु नहीं, किन्तु वस्तु है और इसका कारण यह है कि वह अनादि काल से विद्यमान पुद्गल संघात रूप है। विशेषता सिर्फ इतनी ही है कि वह पुद्गल संघात घटाकर रूप में परिणत नहीं हुआ है, इसलिए ही उसे घट प्राग्भाव कहा जाता है।

भव्य को मोक्ष होने पर भी संसार समाप्त नहीं होता

मंडिक- आपके कथनानुसार भले ही भव्यत्व का नाश हो जाये, किन्तु वैसा मानने में तो एक दूसरा भी दोष है। और वह यह कि संसार में से भव्यत्व का तो कभी न कभी उच्छेद हो जायेगा जैसे धान्य के भंडार में से थोड़ा-थोड़ा धान्य निकालते रहें तो वह खाली हो जाता है, वैसे ही भव्य जीवों के क्रमशः मोक्ष जाने पर संसार में भव्य जीवों का अभाव हो जायेगा।

महावीर- ऐसा नहीं होता । अनागत काल और आकाश की तरह भव्य भी अनन्त हैं। इसलिए संसार भव्यों से कभी खाली हो ही नहीं सकता। अनागत काल की समग्र राशि में से प्रत्येक क्षण में एक-एक समय वर्तमान रूप बनने से उस राशि में प्रत्येक क्षण हानि होने पर भी अनन्त प्रमाण होने से जैसे उसका उच्छेद कभी संभव नहीं है अथवा आकाश के अनन्त प्रदेशों में से प्रति समय एक-एक प्रदेश को अलग किये जाने पर भी जैसे आकाश प्रदेशों का उच्छेद नहीं होता, वैसे ही भव्य जीव भी अनन्त होने से प्रत्येक समय उनमें से मोक्ष जाने पर भी भव्य राशि का कभी भी उच्छेद नहीं होता।

इसके अतिरिक्त जो अतीत काल है और जो अनागत काल है, उन दोनों का परिणाम सरीखा एक जैसा है और अतीत काल में भव्यों का अनन्तवाँ भाग ही सिद्ध हुआ है और वह भी निगोदिया जीवों का अनन्तवाँ भाग ही है। इस कारण अनागत काल में भी उतना ही भाग सिद्ध हो सकेगा, क्योंकि उसका परिणाम अतीतकाल जितना ही है। अतः संसार में से कभी भी भव्य जीवों के उच्छेद की संभावना नहीं है और न समग्र काल में भी भव्य जीवों के उच्छेद का प्रसंग प्राप्त होगा।

मंडिक- भव्य जीव अनन्त हैं और समस्त काल में उनका अनन्तवाँ भाग ही मुक्त होता है, इस बात को आप किस तरह सिद्ध करते हैं?

महावीर- जैसे काल और आकाश अनन्त हैं, वैसे ही भव्य जीव भी अनन्त हैं और जैसे काल एवं आकाश का उच्छेद नहीं होता, वैसे ही भव्य जीवों का भी उच्छेद नहीं हो सकता। इसलिए मानना चाहिए कि भव्य जीवों का अनन्तवाँ भाग ही मुक्त होता है। अथवा इन तर्कों से क्या लाभ ? इसके बारे में मैं कहता हूँ, अतः तुम्हें स्वीकार कर लेना चाहिए।

मंडिक- आर्य ! आपके वचन को मैं सत्य क्यों और किसलिए मानूँ ?

महावीर- इतनी चर्चा से तुम्हें यह तो विश्वास हो चुका होगा कि तुम्हारे संशय से लेकर अभी तक मैंने जो कुछ भी कहा है, वह सत्य है। तो फिर उसी की तरह मेरे इस कथन को भी सही मानना चाहिए। अथवा ऐसा मान लो कि मैं सर्वज्ञ हूँ और वीतराग हूँ। इससे भी किसी मध्यस्थ ज्ञाता के वचन की तरह तुम्हें मेरे वचन को सत्य ही मानना चाहिए।

तुम शायद यह सोचो कि 'आप सर्वज्ञ हैं, यह मैं कैसे जानूँ? ' किन्तु तुम्हारा ऐसा संशय करना उपयुक्त नहीं है। क्योंकि तुम यह जानते हो कि मैं सब के सभी संशयों का निवारण करता हूँ। यदि मैं सर्वज्ञ न होऊँ तो मेरे द्वारा सभी संशयों का निवारण नहीं किया जा सकता। इसलिए मेरी सर्वज्ञता में तुम्हें संशय नहीं करना चाहिए।

(क्रमशः)

■■■

अध्यक्षीय पाती

वैयावच्च को प्रथम प्राथमिकता मानें

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

जब तक यह अंक आपके हाथों में पहुंचेगा चातुर्मास की समाप्ति हो जायेगी तथा मुनि मंडलों और साध्वी समुदायों का विहार होने लगेगा। कार्तिक पूर्णिमा से विचरण का क्रम प्रारंभ हो जाता है। ईस्वी सन् 2020 का वर्ष महामारी कोविड-19 के कारण अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण रहा। शासकीय निर्देशों के पालन तथा महामारी के संक्रमण से बचाव की दृष्टि से पूज्य आचार्यगणों तथा श्रमण-श्रमणी समुदाय को जहाँ का तहाँ स्थिर होना पड़ा, यहाँ तक कि वे अपने घोषित चातुर्मास स्थलों तक भी नहीं पहुँच पाये, उन्हें जहाँ थे वहीं चातुर्मास करने पड़े। पूज्य बड़े-बड़े आचार्यगणों के चातुर्मास भी परिवर्तित स्थलों पर हुए। लेकिन ऐसा किया जाना देश कालभाव के अनुसार आवश्यक था।

कोविड-19 अभी समाप्त नहीं हुआ है। उसका वेक्सीनेशन भी उपलब्ध नहीं है। चिकित्सा विशेषज्ञों के कथन तथा अनुमान भविष्य के लिए बहुत आशाजनक नहीं हैं, फिर भी सभी दैनिक या अन्य कार्य नियमित होने की दिशा में हैं। हमारे पूज्य मुनिराजगण तथा साध्वीजी म. विचरण कर श्रीसंघ को मार्गदर्शन देने के लिये सक्रिय हैं। वर्तमान में सम्पूर्ण जैन समाज में आचार्य मुनिगण तथा साध्वीजी म. हैं। इस संस्था का वास्तविक आंकड़ा इधर-उधर कमोबेश हो सकता है लेकिन महत्वपूर्ण निवेदन है कि प्रत्येक श्रीसंघ का कर्त्तव्य अपने यहाँ आगत साधु-साध्वी समूह की वैयावच्च पर पूर्ण मनोयोग से ध्यान देने का है। वर्तमान परिस्थतियों में वैयावच्च को प्रथम प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

समग्र विश्व में जितने धर्मों का प्रचार है, उनके अनुयायी हैं, उन सभी की साधु संस्थाओं में जैन धर्म की साधु संस्था सर्वाधिक त्यागी, तपस्वी तथा समर्पित है। कई जैनेतर विद्वानों का कथन है कि जैनों की जैसी साधु संस्था को अलभ्य तथा अद्वितीय मानी जानी पड़ेगी।

हमारा गौरवपूर्ण सौभाग्य है कि हम ऐसे उत्तमोत्तम समुदाय के अनुयायी हैं, अतएव प्रत्येक श्रीसंघ वैयावच्च पर पूर्ण ध्यान देकर अपना कर्त्तव्य निर्वहित करें। ■■■

अध्यक्षीय संदेश

ज्ञानपीठ की परीक्षा अवश्य आयोजित करें

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

अ.भा.श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद ने वर्तमान में अपनी पूर्ण शक्ति का उपयोग धार्मिक शिक्षा को परिणामपूर्ण सशक्त बनाने के लिये कर रखा है। जिन स्थानों पर पाठशालाएँ नहीं हैं तथा हैं भी सही तो उपलब्धि तक नहीं पहुँच पा रही हैं, वहाँ धार्मिक शिक्षण का भावी पीढ़ी में प्रचार करने हेतु एक से अधिक प्रयोग किये जा रहे हैं। उन प्रयोगों से छात्रों को जोड़ा जा रहा है, उन्हें आकर्षक पुरस्कारों से प्रोत्साहित किया जा रहा है, समय - समय पर पदाधिकारी स्वयं पहुँचकर निरीक्षण कर रहे हैं तथा छात्रों की प्रगति की समीक्षा की जा रही है, उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन दिया जा रहा है। परिषद की इस दिशा में किये जा रहे प्रयासों की व्यापक प्रशंसा हो रही है।

परिषद के प्रणेता लोकसंत युग प्रभावक जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष में परिषद के संदर्भ में इन पंक्तियों के लेखक (रमेश भाई धरू) को स्पष्ट बल देते हुए निर्देश दिया था कि धार्मिक शिक्षा को प्रबल बनाना अत्यावश्यक है। इसके लिये अपने कार्यकाल में काम करो। मैं उसी ओर अग्रसर हूँ। सूत्र कंठस्थ योजना, प्रतिक्रमण अभ्यास योजना, व्याख्यान आदि का प्रशिक्षण, शिविर-शिक्षायतन सभी उपलब्धियों की प्राप्ति के लिये प्रयासरत् हैं।

लोकसंत पुण्य सम्राट युग प्रभावकश्री ने सन् 1992 में श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ की स्थापना कर एक निश्चित पाठयक्रम स्वीकार करते हुए उसके अनुसार पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन व प्रचलन करते हुए वार्षिक परीक्षाओं का शुभारंभ किया था। ये निरंतर चल रही हैं। इस वर्ष कोविड-19 के कारण परीक्षा समय पर संभव नहीं हो पाईं अतएव जनवरी 2021 के प्रथम सप्ताह में आयोजित हो रही हैं। प्रत्येक श्रीसंघ तथा परिषद परिवार की शाखा का कर्तव्य है कि वह अपने यहाँ परीक्षा केन्द्र स्थापित कर परीक्षाएँ सम्पन्न करें। विशेष जानकारी ज्ञानपीठ के केन्द्रीय कार्यालय मंदसौर से प्राप्त कर सकते हैं।

जय जिनेन्द्र ।

■■■

चिन्तन का चित्रांकण

प्रणाम से पाप का क्षय होता है

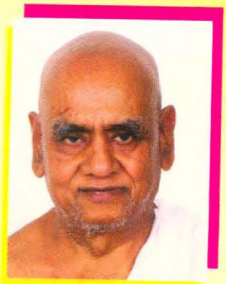

गच्छाधिपति जैनाचार्य
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

दिनांक 31 मार्च 2016

पश्चाताप सबसे बड़ा प्रायश्चित है। चाहे एकासणा, आयम्बिल, उपवास, छट्ट, अट्ठम, अठाई न कर पाएँ । परन्तु भूल छद्मस्थ अवस्था के कारण हो जाये। बाद में सच्चे हृदय से पश्चात्ताप होता है तो वह प्रायश्चित हुआ माना जाता है। भूल पर अपने आप में पश्चाताप होना चाहिए।

दिनांक 2 अप्रेल 2016

प्रणाम से पाप का क्षय होता है पाप का क्षय पुण्य प्रगटाता है। पुण्य का सद्व्यवहार होता है तो कर्म निर्जरा का कारण बनता है। कर्म निर्जरा जीव को शाश्वत सुख की प्राप्ति कराती है। शाश्वत है वही जीव का सच्चा मोक्ष सुख माना गया है। जीवन में सच्चे हृदय से प्रणाम करना चाहिए।

दिनांक 3 अप्रेल 2016

रे–खा स्वयं के हाथ की देख।

व–ज्र के समान पड़ी उसे देख।

त– राजू के पलड़े को जरा देख

डा– ब के जैसी पवित्रता को देख

इन सबके सामने देखकर तेरे जीवन की वृत्ति - प्रवृत्ति को देख कितना सुन्दर तम योग हाथ रेखा में है। जो तेरे जीवन को वज्र की तरह दृढ़ बना रहा है। जीवन को अब तोल उस तराजू में तेरा भाग्य किधर भारी है और पवित्र उस डाब (घास) जिसे पूजा में अथवा ग्रहण में रखने से अपवित्रता का दोष नहीं लगता है वो है रेवतड़ा।

दिनांक 4 अप्रेल 2016

जीवन हर क्षण–हर पल वीतराग के चिराग के प्रकाश में स्वयं का मार्ग प्रशस्त कर ले तो वह आत्मा निश्चय से आत्मानन्द स्वरूप को पा लेता है। अनन्त संसार के बन्धनों से मुक्त होकर शाश्वत ज्योत में समा जाता है।

■■■

उत्तम आहार - शाकाहार-35

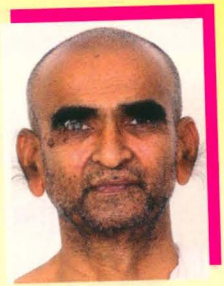

विशेषज्ञ मांसाहार के विरोध में

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

मांसाहार के सम्बन्ध में यह भ्रम फैलाया जाता रहा है कि विदेशों विशेषतः यूरोपीय देशों में प्रख्यात् लोग मांसाहार से जीवन भर जुड़े रहते हैं तथा वे इस कारण शारीरिक/मानसिक/बौद्धिक शक्तियों में अग्रशील होते हैं। ऐसा नहीं है अमेरिका तथा ब्रिटेन सहित कई देशों के वैज्ञानिकों, चिकित्सकों, बुद्धिजीवियों तथा स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने यह प्रतिपादित किया है कि मांस तथा अण्डे शरीर में व्याधियां उत्पन्न करते हैं एवं उनके कारण व्यक्ति विभिन्न बीमारियों से ग्रस्त रहता है, उसकी उम्र भी कम हो जाती है। कतिपय सुविख्यात् विशेषज्ञों का अभिमत इस प्रकार अंकित किया जा सकता है। जिन्हें लेखक डॉ. हरिकृष्णाप्रसाद गुप्ता ने अपने एक लेख में संकलित किया है।

डॉ. हीडहीड- हृदय रोग, मस्तिष्क रोग अथवा पाचन क्रिया की गड़बड़ी से मरने वाले ऐसे लोगों की संख्या अधिक होती है, जो नित्य मांस खाते हैं और उच्च वर्ग का जीवन जीते हैं।

डॉ. हेगन- विभिन्न प्रकार के मांस में प्रति पौण्ड 7 ग्रेन तक यूरिक एसिड पाया जाता है जो खून में मिलकर दिल में जलन, जिगर रोग, टी.बी., सांस रोग, गठिया, एनीमिया, हिस्ट्रिया, सुस्त आदि अनेकों रोग करता है।

डॉ. डब्ल्यू जे. जयसूर्या (श्रीलंका)- मांस और अण्डे का सेवन मत करो, क्योंकि ये दूसरों के जीवन को नष्ट करके मिलते हैं।

डॉ. कलाउसन- जिन्हें बचपन से मांसाहार कराया जाता है, वे बड़े होकर सुस्त-आलसी, झेंपू और दुर्बल होते हैं।

डॉ. कामताप्रसाद (अलीगढ़)- अण्डे की उत्पत्ति और विकास ऐसे गंदे पदार्थों के मेल से होती है, जिन्हें छूते हुए भी घृणा होती है। मनुष्य के स्वास्थ्य को हानि पहुंचाने के लिये इनसे बढ़कर और कोई पदार्थ नहीं है।

डॉ. माकर्स - (अपना अनुभव वृत्तांत बताते हैं कि)- मांसाहार के कारण मैं बहुत दिनों तक सिरदर्द, मानसिक तनाव, थकावट तथा गठिया से ग्रस्त रहा।

डॉ. राबर्ट ग्रास- अण्डे की सफेदी अण्डे का सबसे खतरनाक भाग है। जिन पशुओं को यह खिलाई गई उनकी चमड़ी सूज गई और लकवा मार गया।

(क्रमशः)

■■■

तीर्थंकर - तारेश (38)

महाराजा श्रेणिक

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

राजगृह में आयोजित हो रहे समवसरण में विराजमान प्रभु श्री महावीर देव की ओर एक अशिष्ट कुष्ठी आते ही भगवान के पास पहुँचा तथा अपने शरीर के जख्मों से चू रहे पीव को प्रभु के चरणों में मसलने लगा। श्रेणिक को यह बहुत बुरा लगा, वह कुष्ठी को वहाँ से निकाल बाहर करने के क्रोध में आ गया लेकिन प्रभु के सन्मुख मौन रह गया। इसी दौरान भगवान श्री महावीर देव को छींक आ गई। कुष्ठी ने उनकी ओर अपनी आँखें कर कहा-

'भगवान ! आप मर जाओ !'

कुछ क्षणों बाद श्रेणिक को छींक आई। कुष्ठी ने श्रेणिक से कहा-

'राजन ! आप मत मरो, जीवित रहो।'

फिर वह अभय कुमार की ओर मुड़ा उसने अभयकुमार को संकेत किया- 'आप जैसा चाहें-मरें या जीयें'

अंत में दूर बैठे कालशौरिक कसाई को सम्बोधित किया- 'तुम न मरो, न जीयो'

श्रेणिक के ईशारे पर सैनिक उस कुष्ठी को पकड़ने के लिये दौड़े लेकिन वह गायब हो गया। श्रेणिक ने प्रभु से विनयपूर्वक प्रश्न किया- 'भगवान ! यह विचित्र व्यक्ति कौन था? अब कहाँ गायब हो गया।'

भगवान के मुखारविन्द से प्रस्फुटित हुआ - 'राजन ! वह देव था। तुम्हें जो पीव दिखाई दिया वह सुगन्धित चंदन था।'

उसने प्रभु से कहा कि मर जाओ याने उसने प्रार्थना की कि 'मैं मोक्ष में जाऊँ।'

राजन आपसे कहा कि- 'आप अभी यहीं रहो क्योंकि मृत्यु के पश्चात् नर्क का भयंकर दुःख है।

(क्रमशः)

प्र. आहारक व अनाहारक किसे कहते हैं?

उ. छः पर्याप्तियों और तीन शरीर के योग्य पुद्गल परमाणुओं को ग्रहण करना आहारक व ग्रहण नहीं करना अनाहारक अवस्था कहलाती है।

प्र. जन्म के कितने भेद हैं ?

उ. सम्मूर्छनग भौपपादा जन्म। सर्म्मूछन, गर्भ और उपपाद के भेद से जन्म तीन प्रकार का होता है।

समय और सामायिक (2)

(डॉ. दिलीप धींग)

सूत्रकृतांग सूत्र में संयम और समभाव के अर्थ में भी समय शब्द के प्रयोग किये गये हैं-

जे यागि अणायगे सिया, जे वि य पेसगपेसए सिया।

जे मोणपदं उवट्ठिए, णो लज्जे समयं सया चरे ।।

इस गाथा का अर्थ बताते हुए कहा गया है कि एक साधु अपनी भूतपूर्व अवस्था में कोई उच्च पदस्थ व्यक्ति हो सकता है, विपुल सम्पत्ति का मालिक हो सकता है और दूसरा साधु अपने मुनि-जीवन से पूर्व निपट साधारण आदमी हो सकता है, लेकिन दीक्षा के बाद यानी मुनि बनने पर उन दोनों की वरिष्ठता का क्रम दीक्षा की अवधि के अनुसार ही रहेगा। पूर्व में साधारण रहे दीक्षा में वरिष्ठ मुनि को भी पूर्व में असाधारण रहे दीक्षा में छोटे मुनि द्वारा वन्दना करनी होती है। ऐसी किसी भी स्थिति में मुनि को लज्जा या संकोच नहीं करना चाहिये।

मुनि-जीवन अंगीकार लेने के बाद छोटे-बड़े का आधार पूर्व जीवन नहीं, अपितु वर्तमान जीवन होता है। इसलिए यहाँ मुनि को कहा गया है- **'समयं सया चरे'** - सदैव समय यानी संयम और समभाव में विचरण करें। अन्य गाथाओं में भी मुनि को यह निर्देश दिये गये हैं कि मान-अपमान, जीवन-मरण और सुख-दुःख की कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वह समय (संयम और समभाव) में विचरण करें- **समयं सिरीयति** एवं समता, माध्यस्थवृत्ति या आत्मौपम्य भाव धारण करें- **समयं उवेहिया।** साधु के लिए कहा गया है कि वह धनिक - निर्धन, राजा-रंक आदि सभी को समभाव से धर्मोपदेश प्रदान करे। समभाव से निष्पक्षता और तटस्थता निष्पन्न होती है। इससे सामायिक उद्देश्यपूर्ण होती है। साथ ही अधिकाधिक आत्माएँ कल्याण-मार्ग पर अग्रसर होती हैं। इससे अध्यात्म व आध्यात्मिक साधकों का गौरव और विश्वास बढ़ता है।

समता का महत्व जैसा मुनि-जीवन में है, वैसा ही गृहस्थ जीवन में भी है। जो समता धारण करता है और सभी प्राणियों पर समभाव रखता है, वह यदि गृहस्थ भी है, तब भी वह सुख और सुगति (अच्छी गति) पाता है। 'समय' शब्द का अर्थ संयम, समता और समभाव करने से वह सीधे ही आत्मा से जुड़ जाता है, जो सामायिक का मुख्य प्रयोजन है। समयसार में कहा गया है-

वेदंतो कम्मफलं सुहिदो दुहिदो य हवदि जो चेदा ।
सो तम पुणो वि बंधदि बीयं दुक्खस्स अट्ठविहं ।।

जो व्यक्ति कर्मफल भोगता हुआ सुखी या दुःखी बनता है, वह पुनः आठ प्रकार के कर्मों का बंध कर लेता है। अतः हर प्रकार के सुख-दुःख, लाभ-हानि, मान-अपमान और अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में साधक को समभाव में रहना चाहिये। समभाव के कारण आत्मा अशुभ से शुभ और शुभ से शुद्ध की ओर बढ़ता है। प्रवचनसार के अनुसार जो श्रमण सुख-दुःख में समान योग रखता है, वह शुद्धोपयोगी है- **'समणो समसुहदुक्खो, भणिदो सुद्धोवओगोत्ति।'**

समयसार में समय के अर्थ :- आचार्य कुन्दकुन्द ने मुख्यतः आत्मा के अर्थ में 'समय' की व्याख्याएँ की हैं। समय शब्द 'सम्' उपसर्ग के साथ 'अय' धातु से बना है। 'अय' का अर्थ गमन भी होता है और ज्ञान भी होता है। 'सम्' का अर्थ 'एकसाथ' होता है। इस प्रकार जिस वस्तु में एक ही काल में जानना और परिणमन करना, ये दो क्रियाएँ पाई जाती हैं, उसे समय कहते हैं। आत्मा एक ही काल में परिणमन भी करता है और जानता भी है, इसलिए आत्मा को समय कहा गया है। जीव के भाव, भावप्रवाह तथा प्रवाहमान भावधारा को परिणमन कहा जाता है। कुन्दकुन्द ने समय के दो प्रकार बताये हैं- स्वसमय और परसमय। स्वसमय और परसमय की परिभाषा करते हुए वे कहते हैं-

जीवो चरित्तदंसणणाणट्ठिदो तं हि ससमयं जाण ।
पोग्गलकम्मपदेसट्ठिदं च तं जाण परसमयं ।।

जो जीव चरित्र, दर्शन और ज्ञान में स्थित है, उसे स्वसमय जानना चाहिये और जो पुद्गल कर्म के प्रदेशों में स्थित है, उन्हें परसमय जानना चाहिये। सरल शब्दों में कहें तो स्वभाव में स्थित जीव स्वसमय और परभाव में स्थित जीव परसमय है। परद्रव्यों से अपनापन तोड़कर अपने स्वरूप को एक ही समय में जाना और परिणमन करना स्वसमय है। इसके विपरीत परद्रव्यों के निमित्त से उत्पन्न मोह-राग-द्वेषादि भावों में एकमेक बनकर प्रवृत्ति करते हुए जीव युगपत जानता और परिणमन करता है तो उसे परसमय कहते हैं। प्रवचनसार में कहा गया है कि जो जीव पर्यायों में लीन हैं, उन्हें परसमय कहा गया है और जो जीव आत्म-स्वभाव में स्थित हैं, उन्हें स्वसमय जानना चाहिये।

■■■

संसार परिभ्रमण बंध और समाप्ति संवर-निर्जरा

(शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)

संसार भ्रमण का कारण बंध है और संसार समाप्ति का कारण संवर एवं निर्जरा है। आश्रव और संवर के लिये स्थान एवं क्रिया की अपेक्षा भावना का मूल्य अधिक है। 'जे आसवा ते परिस्सवा' जो आश्रव के स्थान हैं, वे निर्जरा के भी स्थान हैं।

भरत-चक्रवर्ती शीश महल में श्रृंगार करने गये। श्रृंगार करने के अनंतर अकस्मात उनकी ऊँगली की मुद्रिका गिर गई। सारा श्रृंगार फीका सा लगने लगा। बस, भावना परिवर्तित हो गई। बाह्य सजावट में लगा ध्यान आत्म-चिन्तन की ओर मुड़ गया। फिर क्या था? धीरे-धीरे शरीर से श्रृंगार का आवरण हटने लगा, इसी के साथ आत्मा के कर्म आवरण में बदलाव आने लगा। परिणाम स्वरूप वहीं शीशमहल में भरत को निरावरण केवल ज्ञान प्राप्त हो गया।

इस तरह सम्यग्दृष्टि साधक जब वैराग्य-भाव से आत्म-चिन्तन में गोते खाने लगता है, तो उस समय आश्रव कर्म बंधन का स्थान भी उसके लिये संवर या निर्जरा का साधना स्थल बन जाता है।

'जे परिस्सवा ते आसवा' जो निर्जरा के स्थान हैं, वे कर्मबंध के स्थान भी हैं।

नागश्री ब्राह्मणी ने भूल से ककड़ी के स्थान पर कड़वे तुम्बे की सब्जी बना ली। चखने पर कड़वे का ध्यान हुआ तो उसे एक तरफ रख दिया। कुछ देर पश्चात तपस्वी मुनि धर्मरुचि भिक्षार्थ पधारे तो नागश्री ने वह कड़वी सब्जी उन्हें बोहरा दी। मुनि को दिया जाने वाला दान यद्यपि निर्जरा का कारण था, परन्तु नागश्री के लिये वह कर्मबंध का कारण बन गया। इस तरह अज्ञानी व्यक्ति दुर्भावनावश निर्जरा के स्थान में पाप कर्म का बंध कर लेता है।

'जे अणासवा ते अपरिस्सवा' जो व्रतों के स्थान हैं, वे कर्मागमन के स्थान भी हैं।

कुण्डरीक राजर्षि 1000 वर्षों तक संयम पालकर जीवन के अंतिम दिनों में, वासना के प्रवाह में बह गये। एक दिन वेष त्यागकर, फिर राज सुख भोगने लगे। अतिभोग के कारण भयंकर व्याधि से पीड़ित होकर तीन दिन बाद वे सातवीं नरक में जा पहुँचे। संयम जो कर्मनिर्जरा का स्थान था, वह भावना विकृति वश कर्मबंध का कारण बन गया। साधक साधना के सुरम्य भाव स्थल में स्थिर होकर कर्मों को नष्ट कर देता है, लेकिन भावना की अस्थिरता वश

निर्जरा के स्थान में कर्म बाँध लेता है।

'जे अप रिस्सवा ते अणासवा' जो कर्म आगमन के स्थान हैं, वे व्रतों के भी स्थान हैं।

इलायची कुंवर बांस पर नाटक कर रहा है। उसके निकट उसकी होने वाली पत्नी (कन्या) ढ़ोलक बजा रही है। नृत्य कौशल देखकर दर्शक वाह-वाह कर रहे हैं? यह सब हो रहा है, लेकिन राजा का ध्यान नट पर नहीं कन्या पर लगा है। वह उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता है। नट पुरस्कार प्राप्ति हेतु नृत्य कौशल करने में लगा है। इतने में उसका ध्यान पास ही के मकान में भिक्षा लेते मुनि पर गया और बस। उसकी भावना में परिवर्तन आया। भोग विलास की आकांक्षा त्याग में बदल गई। नृत्य करते-करते ही उसे केवल ज्ञान और केवल दर्शन की प्राप्ति हो गई। कर्मबंध का वह स्थान महानिर्जरा का कारण बन गया।

'स्वरूप विश्रान्त निस्तरंग चैतन्यप्रतपनाच्य तपः। स्वरूप में विश्रान्त, तरंगों से रहित जो चैतन्य का प्रतपन है, वह तप है। उसका दस धर्मों में समावेश है। तप से निर्जरा और संवर होना प्रधान कारण है। धर्म का प्रारम्भ संवर से होता है। सबसे पहले मिथ्यात्व भाव को रोकना है। संवर पूर्वक जो निर्जरा है, वही मोक्ष मार्ग है। अनेक कर्मों की शक्तियों को नष्ट करने में समर्थ बहिरंग - अंतरंग तपों से वृद्धि को हुआ शुद्धोपयोग भाव निर्जरा है।

सम्यगदृष्टि जीव के ही सम्यक् तप होता है। मिथ्यादृष्टि तप को बालतप कहते हैं। सम्यग्दर्शन और आत्मज्ञान से रहित बाल तप अज्ञानतप और मूर्खता वाला कहलाता है।

शुद्धोपयोग में जीव को रमणता होने पर अनशन के बिना जो शुभ-अशुभ इच्छा का निरोध होता है वह संवर है। भूख प्यासादि बाह्य दुःख सहन करने से निर्जरा होती है। यदि अशुभ या शुद्ध रूप उपयोग हो तो बंध होता है और सम्यग्दर्शन पूर्वक शुद्धोपयोग हो तो धर्म होता है। उपवासादि तप निर्जरा के मुख्य कारण नहीं हैं। अशुभ और शुभ परिणाम तो बंध के कारण हैं, शुद्ध परिणाम निर्जरा का कारण है। दूसरे तीर्थंकर से तेईसवें तीर्थंकर भगवन्तों ने शुद्धोपयोग का उपयोग कर दो उपवास ही दीक्षा धारण करके किये। अनशनादि को निमित्त की अपेक्षा से तप की संज्ञा दी गई है। अंतरंग परिणामानुसार ही फल प्राप्त होता है। सम्यग्दृष्टि जीव के वीतरागिता बढ़ती है, यही सच्चा तप है। यही निर्जरा का कारण है। सम्यग्दृष्टि तप का जो विकल्प आता है, वह रागरूप होता है, अतः उसके फल में पुण्यबन्ध हो जाता है और जितना यह टूटकर वीतराग भाव शुद्धोपयोग बढ़ता है वह निर्जरा का कारण है।

संदर्भ - मोक्षशास्त्र

■■■

लघुकथा

भगवान का उपहार

(रमेश चोपड़ा)

समय-समय पर भगवान का धन्यवाद अदा करते रहना चाहिए। एक निर्माणाधीन भवन की सातवीं मंजिल से ठेकेदार ने नीचे काम करने वाले मजदूर को आवाज दी। निर्माण कार्य की तेज आवाज के कारण मजदूर सुन न सका कि उसका ठेकेदार उसे आवाज दे रहा है।

ठेकेदार ने उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए एक रुपये का सिक्का नीचे फेंका जो ठीक मजदूर के सामने जा गिरा। मजदूर ने सिक्का उठाया और अपनी जेब में रख लिया और फिर अपने काम में लग गया। अब उसका ध्यान खींचने के लिए ठेकेदार ने पुनः एक 5 रुपये का सिक्का नीचे फेंका। फिर 10 रुपये का सिक्का फेंका। उस मजदूर ने फिर वही किया और सिक्के जेब में रखकर अपने काम में लग गया। यह देख जब ठेकेदार ने एक छोटा सा पत्थर का टुकड़ा लिया और मजदूर के ऊपर फेंका जो सीधा मजदूर के सिर पर लगा। अब मजदूर ने ऊपर देखा और ठेकेदार से बात चालू हो गई।

ऐसी ही घटनाएँ हमारी जिन्दगी में भी घटती रहती हैं। भगवान हमसे संपर्क करना, मिलना चाहता है लेकिन हम दुनियादारी के कामों में इतने व्यस्त रहते हैं कि हम भगवान को याद नहीं करते।

भगवान हमें छोटी-छोटी खुशियों के रूप में उपहार देता रहता है लेकिन हम उसे याद नहीं करते और वो खुशियां और उपहार कहाँ से आये यह न देखते हुए उनका उपयोग कर लेते हैं और भगवान को याद ही नहीं करते।

भगवान हमें और भी खुशियों रूपी उपहार भेजता है लेकिन उसे भी हम हमारा भाग्य समझ कर रख लेते हैं। भगवान का धन्यवाद नहीं करते, उसे भूल जाते हैं।

तब भगवान हम पर एक छोटा सा पत्थर फेंकते हैं, जिसे हम कठिनाई, तकलीफ या दुःख कहते हैं फिर हम तुरन्त उसके निराकरण के लिए भगवान की ओर देखते हैं, याद करते हैं।

यही जिन्दगी में हो रहा है।

यदि हम हमारी छोटी से छोटी खुशी भी भगवान के साथ उसका धन्यवाद देते हुए बाँटे तो हमें भगवान के द्वारा फेंके हुए पत्थर का इन्तजार ही नहीं करना पड़ेगा।

■■■

प्रश्नोत्तरी

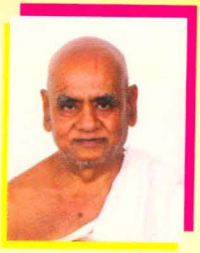

दुर्भग नामकर्म किसे कहते हैं

उत्तरदाता
स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय
जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्नकर्ता
जैनाचार्य श्रीमद् विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्र. स्थावर नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से जीव स्थिर रहे, सर्दी-गरमी आदि से बचने का उपाय न कर सके, उसे स्थावर नामकर्म कहते हैं। इसके उदय से पृथ्वी, अप, तेज, वायु और वनस्पति में जन्म होता है।

प्र. सूक्ष्म नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से जीव को सूक्ष्म शरीर (जो किसी को न रोके और न किसी से रुके) की प्राप्ति हो उसे सूक्ष्म नामकर्म कहते हैं।

प्र. अपर्याप्त नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से जीव अपने योग्य पर्याप्तियाँ पूर्ण न करे, उसे अपर्याप्त नाम कर्म कहते हैं। इसके दो भेद हैं- 1. लब्धि अपर्याप्त और 2. करण अपर्याप्त जिस कर्म के उदय से जीव अपनी पर्याप्ति पूर्ण किये बिना ही मरे उसे लब्धि अपर्याप्त कहते हैं और जिस के उदय से आहार, शरीर और इन्द्रिय इन तीन पर्याप्तियों को अभी तक पूर्ण नहीं किया, किन्तु आगे पूर्ण करने वाला हो उसे करण अपर्याप्त कहते हैं।

प्र. साधारण नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से एक शरीर के अनन्त जीव स्वामी हो उसे साधारण नामकर्म कहते हैं।

प्र. अस्थिर नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से कान, भौं और जीभ अवयव अस्थिर अर्थात् चपल हों, उसे अस्थिर नामकर्म कहते हैं।

प्र. अशुभ नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से शरीर के पैर आदि अवयव अशुभ हों, उसे अशुभ नामकर्म कहते हैं।

प्र. दुर्भग नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से दूसरे जीव शत्रुता एवं वैर भाव करें, उसे दुर्भग नामकर्म कहते हैं।

■■■

जैन व सिख परम्पराओं में मैत्री सम्बन्ध

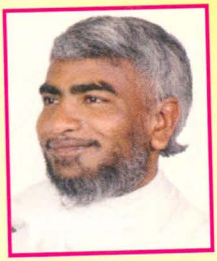

(संशोधक– मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.)

कतिपय तथ्य ऐसे हैं, जिनसे जैन धर्म तथा सिख धर्म के अनुयायियों के मध्य निकट सम्बन्ध के प्रसंग प्राप्त होते हैं। सिख धार्मिक ग्रंथ सुखमणी साहिब की तीसरी अष्टपदी में– 'जैन मारग संजम अति साधन' का उल्लेख है। दसवें गुरु श्री गोविन्दसिंहजी का जन्म पटना में हुआ था जिस हवेली में उनका जन्म होना कहा जाता है वह तख्त श्री हरिमंदिर साहब पटना के रूप में विख्यात है तथा सिखों का तीर्थस्थल बन गई है। यह हवेली प्रमुख जैन श्री सालसराय जौहरी की थी। इसी हवेली में पौष शुक्ला सप्तमी संवत् 1723 (दिनांक 22 दिसम्बर 1666) को गुरु गोविन्दसिंह का जन्म हुआ था। उनके पिता नवम गुरु श्री तेग बहादूरजी ईस्वी सन् 1666 में धर्म प्रचार करते हुए पटना आये थे। उनके साथ गुरुजी की माता मानकीजी, धर्मपत्नी गुजरीबाई तथा उनके भाई कृपालचंद्रजी और कई दरबारी सिख थे। वे सभी सालसराय जौहरी जैन की हवेली में ठहरे थे। गुरुजी को धार्मिक यात्रा करते हुए बंगाल के ढाका में सूचना प्राप्त हुई कि श्री गोविन्दरायजी का जन्म हुआ है वे पुनः तत्काल पटना नहीं पधारे। वे वहाँ से पंजाब चले गये।

जब वे पुनः पटना आये तथा पहली बार अपने सुपुत्र को देखा तब तक गोविन्दरायजी चार वर्ष के हो चुके थे। गोविन्दसिंहजी ने अपने बचपन के सात वर्ष सालसराय जौहरी की हवेली में ही व्यतीत किये। सालसराय जौहरी एक धनाढ्य ओसवाल जैन व्यवसायी थे। उस समय पटना में जौहरियों की एक पूरी गली थी। सालसराय जौहरी के वंशज आज भी पटना में रहते हैं, अभी उनका निवास एक कॉलोनी में है। हवेली के जिस प्रांगण में दशम गुरु श्री गोविन्दसिंहजी का जन्म हुआ था, उसका आधा भाग सालसराय जैन ने गुरुजी को भेंट कर दिया, जहाँ वर्तमान में गुरुद्वारा है। शेष आधे भाग में श्वेताम्बर जैन मंदिर है तथा मंदिर व गुरुद्वारे की एक साझी दीवार है। (क्रमशः)

■■■

(लेखांक-6)

धारावाहिक उपन्यास

किस्मत की बात

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

'वास्तविकता को आप कब तक नकारते रहेंगे ? मुझे झूठे आश्वासनों में विश्वास नहीं है। हकीकत सामने दिखाई दे रही है। इसलिये मैं आपसे कुछ अपेक्षा रखती हूँ। मुझे अपने मरने की कोई चिंता नहीं है। आपके सान्निध्य में मैं सभी प्रकार के सुखों का उपभोग कर चुकी हूँ। एक सौभाग्यवती स्त्री के रूप में इस संसार से जाऊँगी। यह मेरे लिये सौभाग्य की बात है। मुझे अपने पुत्रों की ही चिंता है।' कहकर रानी मौन हो गई और अपने पति के मुख की ओर देखने लगी।

'मेरे होते हुए तुम उनके लिये किसी प्रकार की चिंता मत रखो। अपने मन और मस्तिष्क को चिंता और तनावों से मुक्त कर दो। तुम जो भी कहना चाहती हो, निश्चिंत होकर कहो।' राजा वीरधवल ने कहा।

'स्वामी ! मेरे हृदय में वह चिड़े-चिड़ियां वाली घटना का शल्य अभी-भी चुभ रहा है। मेरी चिंता यही है कि मेरे बाद आपने दूसरा विवाह कर लिया तो विमाता मेरे पुत्रों के साथ भी सम्भवतः चिड़िया जैसा ही व्यवहार करे। हो सकता है, ऐसी अवस्था में आप भी मेरे पुत्रों का साथ न देकर अपनी नई रानी का साथ दें।' 'रानी पद्मावती ने कहा।

'प्रिये ! तुम यह कैसी अटपटी बात कर रही हो। मैं अपने जीवन में तुम्हारे अतिरिक्त किसी अन्य महिला की तो कल्पना ही नहीं कर सकता। फिर क्या वीरभाण और उदयभाण तुम्हारे ही पुत्र हैं, मेरे नहीं। विश्वास रखो, मेरे होते हुए उन पर किसी भी प्रकार की आँच नहीं आ सकती है।' राजा

वीरधवल ने दृढ़ता से कहा।

'स्वामी ! ये सब कहने की बातें हैं। स्त्री किसी प्रकार आदमी को अपने मोह जाल में फंसा लेती है, यह मैं स्त्री होकर अच्छी प्रकार जानती हूँ। मेरी मृत्यु के कुछ दिन तक आप भले ही मुझे याद रखें, दूसरा विवाह न करें, किन्तु कुछ वर्षों बाद जब आपको पत्नी का अभाव खलेगा तब आप पुनर्विवाह कर लेंगे और फिर आपकी वह पत्नी जो मेरे पुत्रों की विमाता होगी मेरे लाड़लों के साथ कैसा व्यवहार करेगी ? इस कल्पना से ही मेरा कलेजा काँप उठता है। इसलिये मैं चाहती हूँ कि...।' कहते-कहते रानी का गला अवरुद्ध हो गया। उसकी आँखों से आँसू ढुलक कर उसके कपोलों पर आ गए।

'इस समय तुम्हारा शोकातुर होना उचित नहीं है। अपना हृदय प्रसन्न रखो और मानस पटल पर किसी प्रकार का विकार उत्पन्न मत होने दो। तुम मुझसे क्या चाहती हो, कहो। मैं तुम्हारी प्रत्येक बात मानने का वचन देता हूँ।' राजा वीरधवल ने रानी के कपोलों पर आए अश्रु पोंछते हुए उसे आश्वस्त किया।

'स्वामी ! आपका कथन सत्य है। अन्तिम समय में अपना मन और मस्तिष्क विकार और ममता रहित रखना चाहिए। यह समय प्रभु भक्ति में लीन होने का है, किन्तु क्या करूँ ? मैं एक महिला होने के साथ-साथ पत्नी और माँ भी हूँ। पत्नी का कर्त्तव्य तो मैंने पूरा कर दिया है। माँ की ममता कभी-भी समाप्त नहीं होती। अब जबकि मेरा अंतिम समय आ गया है। मैं आपसे एक ही वचन चाहती हूँ कि आप अपने लाड़ले पुत्रों की खातिर मेरे बाद दूसरा विवाह करके उनके लिये विमाता नहीं लावेंगे।' रानी पद्मावती ने अपने मन की बात कह दी।

वैसे राजा वीरधवल अपनी रानी से अत्यधिक प्रेम करता था। वह उससे अलग होकर रहने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। वह रानी पद्मावती के प्रेम में डूबा रहता था। उसने उसी समय कहा- 'प्रिये ! तुम यह कैसी बात कर रही हो। तुम स्वस्थ हो जाओगी। तुम मुझसे अलग हो जाओगी, ऐसी तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता। दोनों पुत्रों पर जैसी तुम्हारी ममता है, वैसा ही मेरा स्नेह भी है. मेरे होते हुए उन्हें किसी भी प्रकार का अभाव अथवा कष्ट नहीं हो सकता। रहा सवाल दूसरे विवाह का, तो मैं वचन देता हूँ कि मैं दूसरा विवाह नहीं करूंगा।

(क्रमशः)

■■■

हमारी पसंदगी की सज्झाय

(साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

श्री अर्हद्दन्त चरित्र में एक बात आती है। एक ग्राम में एक तापस नामक सेठ रहता था। उसके पास अढ़लक सम्पत्ति थी। सम्पत्ति –घर और परिवार का उसे तीव्र राग था। उस तीव्र राग के कारण सेठ स्वयं के ही घर में सुअर बना पदार्थों का उपयोग करता था ऐसा वह करे लेकिन आसक्ति नहीं होनी चाहिए। पैसा है तो धर्म में लगाओ। अनीति का धर्म नहीं कमाना चाहिए। ज्यादा परिग्रह नहीं रखना चाहिए। परिग्रह पर आसक्ति, धन पर गाढ़ मूर्च्छा रखने वाला मम्मण सेठ मरकर सातवीं नरक में गया। हमें पुणिया श्रावक जैसे आसक्ति रहित न्याय और नीति से धन कमाना चाहिए, आवश्यकता से अधिक धन नहीं कमाना चाहिए। क्योंकि यहाँ सब कुछ अनित्य है। मेरा यहाँ पर कुछ नहीं है।

संथारा पोरसी में एक सुन्दर गाथा बताई–

एगोहं नत्थि मैं कोइ, नाह मन्नस्स कस्सई ।
एवं अदीन–मणसो अप्पाणमणुसासइ ।।1।।

अर्थात– इस जगत में मेरा कोई नहीं है, न मैं किसी दूसरे का हूँ, इस प्रकार अदीन मन से विचारता हुआ आत्मा को समझायें–

एगो मैं सासओ अप्पा, नाण–दंसण– संजुओ ।
सेसा मैं बाहिरा भावा, सवे संजोग–लक्खणा ।

अर्थात– ज्ञान और दर्शन से युक्त एक मेरी आत्मा ही अमर है दूसरे सब संयोग से उत्पन्न बहिर्भाव हैं। एक आत्म द्रव्य ही मेरा है जो शाश्वत है। ज्ञानसार के मोह अष्टक में कहा है–

अहं – ममेति मन्त्रोऽयं मोहस्य जगदान्थयकृत् ।
अयमेव हि अमयमेवही नञ्पूर्वः प्रतिमन्त्रोऽपि मोहनित ।।

अर्थात– अनादिकाल से जीव यही रटता आ रहा है, कि यह शरीर मेरा है यह धन

मेरा है। इस प्रकार जगत को अंधा बनाने वाला मैं और मेरा इस मंत्र को रटता है। लेकिन इसका विरोधी मंत्र 'नाहं न मम' (मैं नहीं, मेरा नहीं) अगर इस प्रकार चिन्तन किया जाए कि मैं धनवान नहीं हूँ, मैं रूपवान नहीं हूँ, मैं शरीर नहीं हूँ, मैं पिता नहीं हूँ, मेरा घर नहीं, मेरा पुत्र-पुत्री, पत्नी नहीं है मैं तो मात्र एक शुद्ध आत्मद्रव्य हूँ तो कभी भी हमें दुःखी नहीं होना पड़ेगा क्योंकि इस संसार में कोई किसी का हो ही नहीं सकता है सर्वजीव कर्म वश है, सबकी स्थिति एक जैसी नहीं रहती है। माता वह दूसरे भव में स्त्री रूप बन जाती है, स्त्री माता रूप, पिता रूप और पुत्र पिता रूप से पैदा होते हैं। माता-पिता आदि के मृत्यु हो जाने पर श्मशान में ले जाकर आते हैं लेकिन उसके साथ में कोई नहीं जाता है। एक बार कौशम्बी नगरी में धन संचय नामक सेठ के पुत्र को सिर में बहुत पीड़ा हुई। स्वजन लोग बड़े - बड़े वैद्यों को लेकर आते हैं, सभी प्रकार की औषध करवाते हैं। सभी रोते हैं। धन सम्पत्ति सब कुछ होने पर भी उनका दर्द कोई भी लेने में समर्थ नहीं है। तब वह विचार करता है कि रात-भर में मेरा दर्द ठीक हो जाएगा तो मैं दीक्षा ले लूँगा। दर्द ठीक हो जाता है और वह अशरण भावना का चिन्तन करता है।

■■■

(सहित्य समीक्षा)

समाधि मृत्यु

समाधि मृत्यु- लेखक-आचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा., प्रकाशक व प्राप्ति स्थान-दिव्य संदेश प्रकाशन ठि. सुरेन्द्र जैन, 205, सोना चेम्बर्स, 507-509 जे.एस.एस. रोड़, चीरा बाजार, सोनपुर गली के सामने, मरीन लाईंस (ई) मुंबई 400002, मो. 8484848451 तथा 9892069330 मूल्य- 80 रुपये, पृष्ठ 136, आवृत्ति - द्वितीय, मुद्रक शुभय 9833835899 कव्हर- बहुरंगी, छपाई- सफाई- सामान्य। मृत्यु को जैन संस्कृति महोत्सव मानती है। वह मृत्यु की प्राप्ति को कला के रूप में व्याख्याइत करती है। मृत्यु अटल तथा निश्चित है। व्यक्ति की सार्थकता इसे ही निखारने की है। जैन आचार्यों ने समाधि मृत्यु को उपदिष्ट व विवेचित किया है। प्रस्तुत ग्रंथ में समाधि भाव का प्रकाशन दिखाया गया है। चार शरण, सुकृत अनुमोदना तथा दुष्कृत्य गर्ट्टा को प्रतिपादित किया गया है। भव्यात्मा के लिए यह ग्रंथ स्वाध्याय का अच्छा साधन तथा प्रेरणा का श्रेष्ठ माध्यम है।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

जिनशासन की वर्णमाला [5]

(साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

द-दर्शन :- प्रभु दर्शन से आत्मदर्शन करना चाहिए। मंदिर सम्बन्धि 33 आशातना टालकर प्रभु दर्शन करना चाहिए। भाव से एवं विधिपूर्वक दर्शन करने से चित्त की प्रसन्नता बढ़ती है और आत्मा निर्मल होती है। मंदिरजी में निसीहि आदि दसत्रिक का पालन करना चाहिए। प्रभु के दर्शन मात्र की इच्छा से 10 उपवास का लाभ मिलता है।

पाँव उठाने से 100 उपवास का इस प्रकार क्रमशः लाभ बढ़ता जाता है। प्रभु के सामने किसी भी प्रकार की सांसारिक इच्छा नहीं करनी चाहिए। जैसे- मैं परीक्षा में पास हो जाऊं मुझे अच्छा मोबाइल मिल जाए आदि, प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए कि हे प्रभु जैसा आपका स्वरूप है वैसा मेरा भी स्वरूप है। मैं भी आपके जैसा हूँ लेकिन आप तो क्रोध-मान-माया-लोभादि कषाय एवं राग-द्वेष का त्याग कर वीतरागी बन गए और मैं राग-द्वेष- मोह के बंधन में फँसा हुआ ऐसा मैं इन चारों गति में भ्रमण कर रहा हूँ। हे प्रभु शीघ्र ही हमारे दुर्गुणों का नाश करना हमें मुक्तिपुरी में ले जाना।

ध-धर्म :- धर्म अर्थात दुर्गति में गिरते हुए प्राणी को बचाना। धर्म चार प्रकार का होता है। दान, शीयल, तप, भाव **(1) दान-** परिग्रह संज्ञा तोड़ने के लिए दान देना चाहिए। अपनी मालिकी की चीज दूसरों को देना दान कहलाता है। दान 5 प्रकार का होता है जिसमें से सर्वश्रेष्ठ दान अभयदान है। अभयदान अर्थात किसी भी जीव की हिंसा नहीं करना। संसार में रहकर किसी जीव की हिंसा न हो यह संभव नहीं है इसलिए अभयदान देने के लिए दीक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। यह नहीं कर सकते हैं तो दूसरा नंबर का दान सुपात्रदान देना चाहिए। सुपात्र दान देने के सात क्षेत्र होते हैं। श्रावक-श्राविका, साधु-साध्वी, जिन मंदिर, जिनधर्म, जिनबिंब। अपने घर से खाली हाथ किसी को भी नहीं भेजना चाहिए। **(2) शीयल-** 5 इन्द्रियों के विषयों में राग-द्वेष नहीं करना शीयल धर्म कहलाता है। अपना चरित्र अच्छा रखना चाहिए। किसी को भी रागादि दृष्टि से नहीं देखना, प्रेमदृष्टि से देखना चाहिए । **(3) तप-** शक्ति अनुसार छोटे-बड़े तप करना चाहिए। तप 12 प्रकार का होता है। 6 बाह्य + 6 अभ्यतर तप है। नवकारशी आदि बाह्य तप है और विषय,

वैयावच्च आदि अभ्यंतर तप हैं। तप से बहुत जन्मों में एकत्रित किये हुए पाप भी शीघ्र ही हल्के होकर नष्ट हो जाते हैं। आहार संज्ञा को तोड़ने के लिए तप करना चाहिए।

भाव– जैन धर्म में भाव की प्रधानता है। भाव से किया गया कोई भी अनुष्ठान निर्जराकारक होता है। भाव से केवल ज्ञान की प्राप्ति होती है। द्रव्य क्रिया तो हम अनेकों जन्म से करते हुए आ रहे हैं लेकिन भावों की शून्यता के कारण मोक्ष अटका हुआ है।

न–नरकः– निरंतर भयंकर दुखों को सहन करने का स्थान । असंख्यात बिच्छु के एक साथ काटने से जितनी वेदना होती है उससे असंख्यात गुणा अधिक वेदना नारकी के जीवों को होती है। नारकी जीवों का जन्म एक कुंबी में से होता है। कुंबी यानि जैसे पानी की मटकी का मुँह छोटा रहता है उसी तरह कुंबी का मुँह छोटा रहता है। उस में से परमाधामी देव नारकी जीव को खींचकर बाहर निकालते हैं। वहाँ निरंतर 10 प्रकार की वेदना जीव को कम से 10, 000 वर्ष और अधिक से अधिक 33 साग. तक जीवों को सहन करनी पड़ती है। वह इस प्रकार ठंडी, गर्मी, भूख-प्यास, बुखार, जलण, शोक, भय, पराधीनता, खुजली। 15 प्रकार के परमाधामी देव अलग-अलग प्रकार की वेदना देते हैं कोई ऊपर से नीचे गिराता, कोई कढ़ाई में तलते हैं कोई शरीर में तलवार घुसाते हैं आदि।

वहाँ के भयंकर दुःखों से अपने को कोई नहीं बचा सकते हैं। उससे बचाने के लिए पहले से ही प्रभु आज्ञा को स्वीकार कर लेना चाहिए जो रात्रि भोजन करता है जमीकंद खाता है, अधिक परिग्रह रखता है, तीव्र कषाय करता है, वह जीव मरकर नरक में जाता है। नरक एक गति है।

■■■

काउस्सग्ग

काउस्सग्ग के प्रमाण श्वांसोच्छवास होते हैं, जैसे आठ, पच्चीस आदि श्वांसोश्वांसा सूत्र में एक पद का एक श्वांसोच्छवास माना जाता है याने लोगस्स की एक गाथा में चार पद होते हैं तो चार श्वांसोच्छवास हुए, इस तरह चंदेलु निम्मलपरातक याने छह गाथा तथा एक पद कुल 25 पद या 25 श्वांसोच्छवास। इस तरह नवकार के आठ, पूरे लोगस्स के सत्तावीस, लोगस्स (चंदेसु निम्मलपरा तक) बारह के तीन सौ एवं बीस पांच सौ श्वांस माने जाते हैं। चार पूर्ण लोगस्स व 108 श्वांस होते हैं।

शांति और क्रांति के अग्रदूत दादा गुरुदेव

(धीमी गतिवाला)

'जैसी कथनी वैसी करनी' क्रांतिकारी व्यक्तित्वों की यह पहचान है। दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी ने आचार शुद्धि की बातें ही नहीं की, क्रियोद्धार का शंखनाद करके उसे अमल में भी लाये। शाही लवाजमें के प्रतीक पालकी, चामर, छत्र आदि का परिग्रह त्याग करके एकदम सादे स्वरूप में गुरुदेव श्री मंदिरजी से बाहर पधारते हैं और उनके साथ शुद्ध संवेगी साधु बनने का संकल्प करके कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए दो विभूतियां भी साथ में हैं श्री धनविजयजी और श्री प्रमोदरुचिजी। गुरुदेव स्वयं अपने मुनि के योग्य उपकरण उठाये चल रहे हैं। श्री पूज्य के उपकरणों का त्याग करके गुरुदेव ने क्रियोद्धार का आधा कार्य सम्पन्न कर दिया है। अब शुद्ध श्रमणत्व को स्वीकारने की क्रिया बाकी है। परिग्रह का त्याग कर देने के बाद गुरुदेवश्री के चेहरे पर अपूर्व शांति दिखाई दे रही है। क्रियोद्धार ने दादा गुरुदेव को क्रांति और शांति का अग्रदूत बना दिया था। क्रियोद्धार के द्वारा दादा गुरुदेव ने यति संघ में फैले शिथिलाचार के परखच्चे उड़ा दिये थे और सबको प्रभु महावीर द्वारा प्रदत्त सच्चे सुख, आत्म शांति और समाधि को प्राप्त करने का, राग द्वेष से ऊँचे उठने का मार्ग बता दिया था।

महान त्यागी 'लकड़ी वाले संत' अब अपनी शुद्ध चारित्र की लकड़ी लेकर किधर आगे बढ़ेंगे, सबकी निगाहें उन पर थीं। वहाँ से गुरुदेव खाचरौदी दरवाजे की ओर कदम बढ़ाते हैं। उनके पीछे श्री पूज्य धरणेंद्रसूरिजी के नये दफ्तरी, प्रमुख यतिगण और पचासों यति चल रहे हैं और साथ ही अपार जनसमूह भी जुलूस के रूप में चल पड़ा है। खाचरौदी दरवाजे के बाहर बावड़ी के पास जाकर गुरुदेव श्री के कदम थमते हैं। वहाँ विशाल वटवृक्ष के नीचे समवसरण का प्रतीक त्रिगड़ा रखा हुआ है और उस पर पूर्वाभिमुख परमात्मा ऋषभदेवजी की प्रतिमा बिराजित की

गई है। वहाँ लकड़ी का एक सादा पाट रखा हुआ है, गुरुदेव उस पाट पर बिराजित होते हैं और जुलूस धर्मसभा का रूप ले लेता है, जिसको जहाँ जैसा स्थान मिलता है वह वहीं बैठ जाता है। दादा गुरुदेव नमस्कार महामंत्र का उच्चारण करते हैं और चारों ओर का कोलाहल थम जाता है, निरव शांति हो जाती है।

गुरुदेव श्री श्रीपूज्य के रूप में अपना अंतिम धर्मोपदेश वहाँ प्रदान करते हैं क्योंकि शुद्ध साध्वाचार को धारण करके वे श्री पूज्य पद का त्याग करने के लिए यहाँ पधारे हैं। गुरुदेव फरमाते हैं समय ह्न समान है (अवसर्पिणी काल है) इसलिए जिस धर्मरथ को हमेशा तीव्र गति से ही चलना चाहिए , वह बार-बार धीमी गति पकड़ता रहता है। परमात्मा महावीर ने अपने समय में रुके हुए धर्मरथ को गति प्रदान की थी, वह धर्मरथ उनके निर्वाण काल के बाद से 21 वर्षों तक चलने वाला है। इस धर्मरथ रूपी तीर्थ के चार स्तंभ हैं- साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका। इन स्तंभों में से एक भी स्तंभ शिथिल होता है तो इस तीर्थ के जिनशासन की शोभा डगमगाती है। ये स्तंभ शिथिल होते हैं, तब महापुरुषों को शिथिलता दूर करके पुनः धर्मरथ को मजबूती प्रदान करने के प्रयास करने पड़ते हैं। इस धर्मतीर्थ में विशिष्ट स्थान साधु-साध्वी का है, जब तक साधु हैं तब तक तीर्थ है, साधु नहीं होंगे तब तीर्थ का विच्छेद होगा। सर्व सावद्य कार्यों का त्याग करके आत्म शुद्धि की साधना में मग्न रहना साधु धर्म है। तप, त्याग, ध्यान, चिंतन, अनुप्रेक्षा, स्वाध्यायमयी साधु का जीवन है। इन्द्रियों के विषयोपभोग को विष समझकर साधु उनसे सदैव दूर रहते हैं। ऐसे साधु धर्म में जब शिथिलाचार प्रवेश करता है तब साधु आत्म कल्याण के मार्ग से भटकता है और संघ में भी अव्यवस्था का सर्जन प्रारंभ हो जाता है। संपूर्ण संघ, संपूर्ण समाज और संपूर्ण जनमानस पर इसका दूषित प्रभाव पड़ता है, अधर्म का जोर बढ़ता है।

परमात्मा महावीर के बाद जब-जब साधु संघ में शिथिलाचार ने प्रवेश किया, तब - तब प्रभावक आचार्यों आदि ने उसे रोकने के प्रयत्न किये हैं। क्रियोद्धार हुए हैं, समाचारी पट्टक बने हैं, शुद्धाचार की प्रेरणा देने वाले ग्रंथ लिखे गये हैं। पूर्व में श्री देवभद्रगणिजी, श्री जगत्चंद्रसूरिजी, श्री आनंदविमलसूरिजी, पन्यास सत्य विजयजी, श्री यक्षदेवसूरिजी, श्री चंद्रसूरिजी के नाम प्रसिद्ध हैं, जिन्होंने क्रियोद्धार करके अपने - अपने समय में

शिथिलाचार पर अंकुश लगाया था। श्री वृद्धवादीसूरिजी, श्री हरिभद्रसूरिजी, श्री हेमचंद्राचार्यजी, श्री जिनवल्लभसूरिजी आदि ने भी शिथिलाचार पर अंकुश लगाने के लिए अपनी लेखनी का समर्थ उपयोग किया था, शुद्धाचार प्ररूपक शास्त्रों की रचना की थी। वर्तमान में भी शिथिलाचार ने अपने पैर पसारे हैं। मैंने 5 वर्ष पहले राणकपुर में क्रियोद्धार करने का संकल्प किया था, वह आज मैं विनम्रतापूर्वक पूर्ण कर रहा हूँ। शिथिलाचार के पोषक एवं प्रेरक राजसी ठाठबाट के परिग्रह का मैंने त्याग कर दिया है। आज मैं एक संकल्प करने वाला हूँ कि आगे से मैं अपने जीवन में कभी शिथिलाचार को प्रश्रय नहीं दूंगा। शुद्ध चारित्र धर्म का पालन करूंगा। मार्ग कठिन है, पथरीला है, परिषहों से भरा है। जो भी परिषह आएंगे उन्हें मैं सहजता से, समभार से सहन करते हुए अपनी साधुता का पालन करूंगा। दादा गुरुदेव की संकल्पबद्धता की बात सुनकर जनसमूह प्रसन्न हो उठता है, जय जय नाद के नारे गूंज उठते हैं।

पाट पर से गुरुदेव उठते हैं। हर्ष सभर हृदय से त्रिगड़े पर बिराजित जिनेश्वर परमात्मा की प्रतिमाजी को तीन प्रदक्षिणा देते हैं, देववंदन करते हैं और परमात्मा के सन्मुख पंच महाव्रतों के शुद्ध पालन की पुनः प्रतिज्ञा करते हैं। तत्काल श्री धनविजयजी और श्री प्रमोदरुचिजी भी खड़े होते हैं और गुरुदेव से शुद्ध संयम पालन की प्रतिज्ञा करके क्रियोद्धार में सहभागी बनते हैं। क्रियोद्धार की क्रिया करके आचार्य भगवंत प्रफुल्लित हृदय से अपने दोनों शिष्यों के साथ उपाश्रय में पधारते हैं। रास्ते में शुभ शकुन होते हैं। ज्योतिष में पारंगत यति श्री महेंद्रविजयजी क्रियोद्धार के पावन पल की कुंडली बनाते हैं और घोषणा करते हैं कि 'पूज्य गुरुदेव संसार में विरल विभूति के रूप में प्रसिद्ध होंगे और जैन शासन की सर्वत्र प्रभावना करेंगे।' यह भविष्यवाणी अक्षरशः सिद्ध हुई है। गुरुदेव आज अपने मध्य नहीं हैं लेकिन उनका बतलाया धर्म मार्ग चारों ओर प्रकाश फैला रहा है। गुरुदेव का नाम चारों ओर गूंज रहा है।

चातुर्मास का समय निकट आ गया है। दादा गुरुदेव एक हैं, विनतियाँ बहुत हैं। क्रियोद्धार के बाद अपना प्रथम चातुर्मास वे कहाँ करेंगे और उस चातुर्मास में पुनः आगमों का गहन मंथन करके कौन से क्रांतिकारी नियम समाज के सन्मुख प्रस्तुत करेंगे यह सब यथावसर।

■■■

प्र. आसोज सुदी -10 सूरि मंत्र साधना से तेज बढ़ाएं

(मुनिराज श्री संयमरत्न विजयजी म.सा.)

तर्ज– ओरे सखी मंगल गाओरी

गुरु गुण गाए– शीष नमाए, आज मेरा दिल हरषाए।
भाव जगाए– दोष भगाए, गुरुवर किरपा बरसाए।
नित्यसेनसूरि गुरु आए, सब भक्तों के मन भाए, सूरिमंत्र साधना से तेज बढ़ाए।
पंचपीठ की है साधना, मिट जाए सारी विराधना
जन–जन का मन आशीष पाए।
गुरु गुण गाए– शीष नमाए, आज मेरा दिल हरषाए।
तप–जप चौरासी दिन है किये, चौरासी के चक्कर नष्ट हुए
गुरु की गादी सदा जगमगाए।
'राज राजेन्द्र' मिले, 'जयंत' गुरु का बाग खिले,
'भुवन' में 'संयम' का रंग चढ़ाए।
गुरु गुण गाए– शीष नमाए, आज मेरा दिल हरषाए।।
।। गुरु कृपा ही केवलम् ।।

– नीमच (विकास नगर)

तीन मुक्तक

– डॉ. दिलीप धींग

एक

ताली भी बजाई और थाली भी बजाई थी।
हर घर द्वार पर रंगोली सजाई थी।
दीप भी जलाए पर हुआ नहीं उजाला,
क्योंकि जन्मदिन पर मोमबत्तियाँ बुझाई थीं।

दो

माँ ने कुमकुम केसर के छींटे छाँटे थे।
गीत भी गाए और लड्डू भी बाँटे थे।
वह सुर सुरभित मिठास अब नहीं,
जन्मदिन पर उसने केक जो काटे थे।

तीन

पश्चिम की अंधी नकल यह कैसी ?
शब्द उत्सव में भी बन बैठे विदेशी।
'हैपी बर्थ–डे' का शोर घर–घर में,
बाहर कह रहे अपनाओ स्वदेशी।।

गुरु परम्परा

आचार्य श्रीमद् विजय धनचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.
(मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)

जन्म नाम धनराज, पिता- रिद्धिकरणजी चौपड़ा, माता-अचलादेवी, नगर - किशनगढ़, जन्म संवत 1897, मिती चैत्र सुदी 4, यति रूप में विक्रम संवत 1914 के वैशाख सुदी 3, गुरुवर यति लक्ष्मीविजयजी के पास धानेरा में दीक्षा ली, यति रूप में धनविजयजी ने चौमासे निम्नानुसार किये।

संवत	गाँव	संवत	गाँव	संवत	गाँव
1914	उदयपुर	1918	जोधपुर	1922	जालोर
1915	कलकत्ता	1919	बीकानेर	1923	घाणेराव
1916	कराची	1920	जैसलमेर	1924	जावरा
1917	मद्रास	1921	अजमेर		

यहाँ से क्रियोद्धार के बाद मुनिपद में चातुर्मास किये।

संवत	गाँव	संवत	गाँव	संवत	गाँव
1925	खाचरोद	1938	अहमदाबाद	1951	राजगढ़
1926	रतलाम	1939	कुक्षी	1952	जालोर
1927	बीकानेर	1940	जावरा	1953	थराद
1928	नागौर	1941	अहमदाबाद	1954	सांचोर
1929	रतलाम	1942	साणंद	1955	भीनमाल
1930	जावरा	1943	थराद	1956	हरजी
1931	जालोर	1944	थराद	1957	थराद
1932	आहोर	1945	अहमदाबाद	1958	थराद
1933	शिवगंज	1946	रतलाम	1959	भीनमाल
1934	कुक्षी	1947	कुक्षी	1960	सायला
1935	रतलाम	1948	राजगढ़	1961	सियाणा
1936	भीनमाल	1949	बड़नगर	1962	मंडवारीया

1936	भीनमाल	1949	बड़नगर	1962	मंडवारीया
1937	पालनपुर	1950	खाचरोद	1963	काणदर
				1964	गुड़ा

संवत् 1965 मिती जेठ सुदी 11 को श्रीमद् विजय धनचन्द्रसूरीश्वरजी आचार्य महाराज बने। आचार्य पद पर चातुर्मास निम्न प्रकार :

संवत	गाँव	संवत	गाँव	संवत	गाँव
1965	खाचरोद	1969	बलदूट	1973	काणदर
1966	पारा	1970	सियाणा	1974	जालोर
1967	धानेरा	1971	बागरा	1975	सायला
1968	दुधवा	1972	पालडी	1976	काणदर
				1977	बागरा

संवत् 1977, मिती भादवा सुदी 1 बागरा में स्वर्गवास हुआ, दाह क्रिया (अग्निसंस्कार) बागरा में हुआ।

(सहित्य समीक्षा)

पट्टावली

लेखक - आचार्य श्रीमद् विजय मुक्ति-मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म., प्राप्ति स्थान- श्री चम्पकभाई बी., देढ़िया मो. 9819065588 मुद्रक-तेजस प्रिण्टर्स मो. 9825347620, पृष्ठ 348 पक्की बाइण्डिया सफाई छपाई अच्छी। मुख्य आधार जैन परम्परा का इतिहास। इतिहास की गाथाओं का लेखन अध्ययन, समीक्षण तथा संशोधन से परिपूर्ण होने पर परिपक्व होता है। लेखक श्री विजय मुक्ति मुनिचंद्रसूरिजी म. की रुचि बाल्यकाल से इस दिशा में रही अतएव उनने श्री सुधर्मा स्वामी से अभी तक की पट्ट परम्परा के प्रमुख जैनाचार्यों का जीवन परिचय आलेखित करने का कठिन कार्य किया है। त्रिपुटी द्वारा रचित 'जैन परम्परा के इतिहास' ग्रंथों से सामग्री जुटाने का उल्लेख किया गया है। इतिहास की पुस्तकें यदि आलमारियों में रहती हैं तो शनैः शनैः मूल विषय को भी लुप्त होने का खतरा उपस्थित हो जाता है। इस पर तो निरंतर खोज, आलेखन तथा प्रकाशन आवश्यक है। इस दृष्टि से लेखक का प्रयास सराहनीय है। लेखक साधुवाद के पात्र हैं।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

श्री नवकार कल्पद्रुम

(मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.)

मंगलाचरण

विषय हरण मंगल करण, विघ्न विदारण शोक ।
जिनशासन नवकार भज, दुर्लभ भव संयोग ।

परिपूर्ण

सिन्धु पात्र मसि से भरा, कलम सर्व कान्तार।
फिर भी गुण वर्णन कभी, पूर्ण न हो नवकार ।1।

महार्णव

रे मानव नवकार में, मन को करे विलीन ।
जैसे सरिता सिन्धु में जैसे जल में मीन ।2।

नवनीत

नव व्याकरण अध्ययन, अन्त सार है एक ।
जिनशासन नवकार में, दे मन धार विवेक ।3।

कर्मोदधि

रे मन ! अब किसको कहे, नहीं जगत इतबार ।
जिनशासन नवकार से, कर्मोदधि से पार ।4।

अजपा–जाप

सप्त माह तक भव्य भज, जिव्हा से नवकार ।
फिर हो अन्तरंग सतत, अजपा जाप विचार ।5।

शाश्वत – संदेश

अष्ट सिद्धि तथा नव निधि, किंकर रहे हमेश।
जिनशासन नवकार भज, शाश्वत यह संदेश।6।

सर्वाधिकार

चाहे ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य शुद्र जो कोय ।
जप सकते नवकार पद, किंचित भेद न होय ।7।

सुरतरू

श्री जिनशासन कल्पतरू, सिंचन विनय विचार।
प्राप्त नवकार महाफल, जिनके भाग्य उदार ।8।

सुदृढ़

दृढ़ श्रद्धा हो शैल सम, सरल सलिल उपमान ।
साधक श्री नवकार जप, तेरा हो कल्याण ।9।

महामर्द

जिनशासन नवकार हित, सह लेता दुःख दर्द।
अंत मोक्ष सुख प्राप्त ही, वह जग सच्चा मर्द ।10।

आराधक

होगा अनुभर प्राण प्रिय, जिनशासन नवकार ।
आजीवन आराधना, कर सकता अधिकार ।11।

सदृश

खोज लिया भू लोक में, विविध मत्त अरू ग्रंथ।
जिनशासन नवकार सम, कभी न देखा सन्त 12।

निष्फल

वाचक सब ही देवगण, तू याचक सुर द्वार ।
कहां मिलेगा लाभ तव, भजो लाभ नवकार ।13।

अवश्य

राहु ग्रहण ज्यों चन्द्रमा, मेष ग्रहण वनराय ।
रे नर ! वैसे काल मुंह, जिनवर प अपनाय ।14।

मूढ़

ज्ञानी चौदह पूर्व के, भजे भाव नवकार ।
मगर मूढ़ क्यों कर रहा, जपने में इन्कार ।15।

■■■

युग प्रभावक जैनाचार्य जयंतसेनसूरिजी म.सा.
की 43 वीं मासिक पुण्य सप्तमी प्रसंगे सादर चरणों में समर्पित
संयम रत्नविजय

आज मेरी गुरूवर तार दो नावरियाँ

आज मेरी गुरूवर, तार दो नावरियां ।
तार दो नावरियां, फँसी भव जल दरियां ।।1।।

देश नहीं जाऊँ, परदेश नहीं जाऊँ ।
रहना मुझे है गुरु, तेरी ही शरणियां ।। आज.1।।

धन नहीं माँगू मैं, भवन नहीं माँगू ।
हर पल ओढ़ूं मैं तो, भक्ति की चादरिया ।। आज.2।।

पढ़ना न जानूँ मैं, लिखना न जानूं ।
देखते ही रहें तुझे, एक ही नजरिया ।।आज ।।3।।

ज्ञान नहीं जानूं मैं, ध्यान नहीं जानूं ।
प्रभु से मिला दो, दे दो मोक्ष नगरिया ।।आज. ।।4।।

गीत नहीं जानूं मैं, संगीत नहीं जानूं ।
गुरुवर की प्रीत से, जीत को है वरिया ।।आज.।।5।।

मन मेरा अर्पण, तन है समर्पण ।
गुण तेरे गाऊँ, चाहे बीते उमरिया ।।आज.।।6।।

'राज-राजेन्द्र', ध्याऊँ, 'यतीन्द्र' को पाऊँ ।
'जयन्तसेन'को मैंने, दिल में है धरिया ।।आज.7।।

तेरा संग मिले मुझे, सत संग मिले मुझे ।
'संयम' के रंग में, रंगाऊँ जी भरिया ।। आज.8।।

।। गुरु कृपा ही केवलम् ।। ■■■

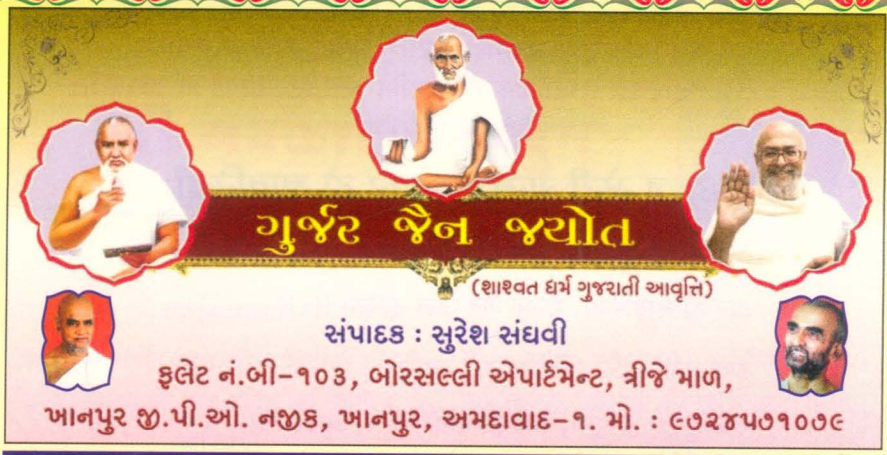

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

આપણે પોતે જ આપણા મિત્ર

"पुरिसा ! तुममेव तुमं मित्तं: किं बहिया मित्तमिच्छसि ?"

(હે પુરુષ ! તું પોતે જ તારો મિત્ર છે,
બીજા બહારના મિત્રોની ઈચ્છા કેમ કરે છે ?)

કહે છે કે ઈશ્વર પણ તેને જ સહાય કરે છે, જે પોતે પોતાને સહાય કરે છે. એનો આશય એ છે કે બીજાની મદદની આશા રાખ્યા વિના આપણે પોતે જ આપણા કર્તવ્યનું પાલન કરતાં રહેવું જોઈએ.

જે સાધક પોતાના કર્તવ્યના માર્ગ પર અડગ રહે છે, તેને બીજાની મદદ મળે કે ન મળે તેની તે પરવા કરતો નથી. તે બધાની સાથે મૈત્રી રાખે છે, પણ બીજા કોણ તેની સાથે મૈત્રી રાખે છે, તે વાતનો તે વિચાર કરતો નથી. મિત્રતા રાખવાવાળાઓ સાથે મિત્રતા રાખવી એ તો એક જાતનો વેપાર છે. કારણ કે જે આપણને મદદ કરે છે તેને આપણે પણ મદદ કરીએ છીએ. આ રીતે મદદને બદલે મદદ કરવી એ વિનિમય છે. સાધક વ્યાપારી નથી હોતો. તે બદલાનો વિચાર કર્યા વગર વૃક્ષોની જેમ, સરિતાની જેમ, વાદળોની જેમ અથવા સૂર્યની જેમ સૌને મદદ કરતો રહે છે, પણ બદલામાં મદદ મેળવવાની આશા રાખતો નથી. તે પોતે જ પોતાનો મિત્ર છે.

– આચારાંગ સૂત્ર ૧/૩/૩

શ્રી સકળ સંઘ અને પરિષદ પરિવારને

નૂતન વર્ષાભિનંદન

જીવન વ્યવહારોની સમરસતાના તાણાવાણાથી ગુંથાયેલ હોવા છતાં શ્રી જૈન સંઘોના વિવિધ સ્થળોએ બિરાજમાન પૂજ્ય શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી પ્રેરણાથી પ્રેરાઈ શ્રાવક-શ્રાવીકાઓ મોટી સંખ્યામાં જપ-તપ- આરાધના સંપન્ન કરી રહ્યા છે. તેના પરથી નિશ્ચિતપણે કહી શકાય કે, ધર્મ, સંસ્કૃતિએ શાસનનો મહિમા અને પ્રભાવ પ્રસ્થાપિત કર્યો છે.

કર્મસત્તાએ કોઈની પણ કસોટી કરવામાં કસર છોડી નથી. કોરોના મહામારી એ વિશ્વભરમાં હાહાકાર મચાવી દીધો તેમ છતાં તેની સામે જિનશાસન અને ધર્મીજનોનો પુરુષાર્થ તેમજ દેવ-ગુરૂ-ધર્મ પ્રત્યે રહેલી આસ્થા અને શ્રદ્ધાએ અપૂર્વ સુખશાતા બક્ષી છે.

કોરોના મહામારી આ તો ટ્રેલર છે. આવા તો કેટલાય મહામારી રોગો ડોળો ફાળીને બેઠા છે, ત્યારે જો કોઈ રક્ષણહાર બની બેલે આવનાર હોય તો તે છે આત્મશુદ્ધિ સાથેનો ધર્મ... ભૌતિક વિકાસ આધુનિકતા માટે અનિવાર્ય છે તેમ માનવતા સભર સંસ્કૃતિનો વિકાસ પણ અનિવાર્ય છે. આ યુગમાં સદ્‌ભાવ, સજ્જનતા, નિખાલસ, સ્વચ્છ સંસ્કારી ધર્મીજનો શાસન - સમાજ અને ગચ્છની આધારશીલા છે.

દર વર્ષે દીપ સે દીપ જલેનો સંદેશો લઈ આવે છે દિવાળીનું પર્વ સ્વસ્થ સંપન્ન સંસ્કાર સાથે ધર્મ આરાધના દ્વારા દિવ્ય પ્રકાશ આપવાનું આહ્‌વાન કરે છે. નૂતન વર્ષની સુપ્રભાત... માટે શ્રી જિનેશ્વર પરમાત્માની અસીમ કૃપા... દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસુરીશ્વરજી મ.સા.તથા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ... વર્તમાન ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા., ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના શુભાશુભ આશીર્વાદ મેળવ્યા. સંવત ૨૦૭૭ના કારતક સુદ ૧/૨ નવા વર્ષની સુપ્રભાતે ગુરૂ ગૌતમસ્વામીનું સ્મરણ કર્યું. હવે ધર્મ ઉદ્ધમમાં જોડાઈ માનવતાભર્યા જીવન સફરની શરૂઆત કરી આગામી દિવાળીને પણ સફળ બનાવીએ તેવા અંતઃકરણપૂર્વકની શુભેચ્છા સાથે શ્રીસકળ સંઘ અને યુવક, મહિલા, વહુ, તરૂણ, બાલિકા સમસ્ત પરિષદ પરિવારને નૂતન વર્ષાભિનંદન.

લિ. ગુર્જર જૈન જ્યોત સંપાદક - સુરેશ સંઘવી.

અંતર વેદના પુણ્ય સમ્રાટ ગુરૂદેવ આપ ક્યાં છો ?

કોરોના મહામારીને ભૂલી જઈ દીવડા અને રોશનીના ઝગમગાટ સાથે સંવત ૨૦૭૬ના વર્ષના દિપાવલી પર્વની સમગ્ર દેશવાસીઓ હર્ષભેર ઉજવણી કરી રહ્યા છે. ત્યારે દિપાવલીની મધ્યરાત્રિએ સ્વપ્ન આવે છે અને થરાદનગરની ધન્યધરાના પનોતાપુત્ર, ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના લાખો ભક્તોના હૃદય સમ્રાટ, વિરલ વિભૂતિ પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., પાટ પર બિરાજમાન છે બાજુમાં ઉભા ગુડે સ્વ. મુનિરાજશ્રી પદ્મરત્નવિજયજી મ.સા., પૂજ્યશ્રીની અડોઅડ બેઠા છે. આ સ્વપ્ન દર્શન થતાં જ મારા મનમાં મોરલા નાચી ઉઠ્યા અને પલકવારમાં આંખ ખુલી જાય છે ત્યારે અંતરવેદના પોકારી ઉઠે છે ગુરૂદેવ આપ ક્યાં છો ?

રાતના ડિબાંગ અંધારા સૂર્યના તેજને કદાપી ઝાંખા પાડી શકતા નથી કે હણી શકતા નથી. આપના તેજોમય વ્યક્તિત્વને આપના તેજસ્વી શિષ્યરત્નો અને લાખો ભક્તોની વચ્ચેથી છીનવી ગયેલો કાળ ભલે ક્રુર હાસ્ય રેલાવતો રહે પણ આપનું હુંફાળું આધ્યાત્મિક સાનિધ્ય ગુમાવ્યાને સાડા ત્રણ વર્ષના વહાણા વિતી ગયા પછીય તેનું દુઃખ આજેય સહુના હૈયાને કોરી ખાય છે. થરાદનગરની ધર્મશાળામાં વિશાળ સંખ્યામાં બેઠેલા શ્રોતાજનો વચ્ચે ફેટાધારી વડીલો વચ્ચે વચ્ચે જી.. ખમ્મા... ખમ્મા...ના હાકોટા પાડતા એવા વ્યાખ્યાનો ક્યારે સાંભળવા મળશે ? નૂતન વર્ષની પ્રભાતે ગૌતમ છંદ, માંગલિક તો ખરું જ પણ આપના મુખકમળ દ્વારા **ગૌતમ વિલાપ "ઓ વીર વાલા મુજને મુકી શું ગયા..."** રાગ સાથે ગવાતું ત્યારે હજ્જારો ભક્તોની આંખોના ખૂણા ભીના કરાવી દેતા હતા. આ પ્રસંગો ક્યારે જોવા મળશે ? આ બધું યાદ આવે છે.. એક દિવસ પણ એવો નથી ગયો કે, આપનું સ્મરણ ન થયું હોય. મન હજું માનતું નથી કે આપ અમારી વચ્ચે નથી. પણ વાસ્તવિક્તાને સ્વીકાર્યા વિના છુટકો નથી. આપની સ્મૃતિનો સૂર્ય સમાજજનોના જીવનમાં ઝળહળતો રહે છે અને પ્રેરણા

ચીંધતો રહે છે.

શાસન-સમાજના ઉત્કર્ષ માટે આપે ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા ટકોરા મારી મારીને તૈયાર કરેલા આપના તેજસ્વી શિષ્યરત્નો અને વિશાળ સંખ્યામાં શ્રમણીવૃંદની સમુદાયને અમૂલ્ય ભેટ અર્પણ કરી ગયા છો તે ગચ્છની ઉન્નતિનું જબરજસ્ત જમા પાસું છે. સમગ્ર શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના ભક્તજનો આપના ઉમદા, પ્રેરક, નિખાલસ અને કર્મશીલ વ્યક્તિત્વને ભૂલ્યાં નથી. આપના ચિરવિરહને સાડા ત્રણ વર્ષ પૂર્ણ થાય છે. આપના શિરછત્રની છાયા પ્રત્યક્ષમાં આજે નથી, પરંતુ તેની ગરિમા સહુના અંતરમાં હંમેશા રમી રહી છે. દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પાટ પરંપરા ઝળહળતી રહે તે માટે આપ હંમેશા પથદર્શક બની દિવ્ય આશિર્વાદ વરસાવતા રહેશો તેવી આસ્થા અને પૂર્ણ શ્રદ્ધા સાથે અંતઃકરણ પૂર્વકની પ્રાર્થના.

આત્મોદ્ધાર

ગુરૂ જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થે રચાશે કીર્તિમાન સંયમનો માંડવો..!!

નિમ્હાહેડાનગરે ચાતુર્માસ બિરાજમાન ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારના દર્શન-વંદનાર્થે ગુરૂભકતોનું આવા-ગમન પુર જોશમાં

આદર્શ કોલોની સ્થિત શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાનમંદિર નિમ્હાહેડા (રાજ.) ખાતે ચાતુર્માસ બિરાજમાન પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રીએ તેમના તપસ્વી જીવનમાં પ્રથમવાર વિશ્વશાંતિ અને જગતના જીવોના કલ્યાણ નિમિત્તે ૮૪ દિવસીય પાંચ પીઠીકા સૂરિમંત્ર આરાધના સંપન્ન કરી હતી. સૂરિમંત્રારાધનાની પૂર્ણાહૂતિ બાદ ચાતુર્માસ સ્થળ શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાનમંદિરમાં સુખશાતાપૂર્વક બિરાજમાન છે.

દાદા ગુરૂદેવના ચાતુર્માસ અને પુણ્ય સમ્રાટની શિક્ષા સ્થળી નિમ્હાહેડા

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર અને શિષ્યરત્ન ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારનું નિમ્હાહેડાનગરે જપ-તપ સાથે ઐતિહાસિક, યશસ્વી અને અવિસ્મરણીય ચાતુર્માસ સંપન્ન

નગરમાં પ્રતિરોજ ગચ્છાધિપતિશ્રી સપરિવારના દર્શન - વંદનાર્થે ગુરૂભક્તોનું આવાગમન પુર જોશમાં થઈ રહ્યું છે. જેમાં અમદાવાદ, મુંબઈ, સુરત, થરાદ, ડીસા, મંદસોર, રતલામ, પારા, જાવરા, ખાચરોદ, રીંગનોદ, નીમચ, રાણાપુર, તાલ, આલોટ, ફતહનગર, બડનગર, બામનિયા, રાજગઢ, કુક્ષી, પિપલોદા, અલીરાજપુર, બાગ, ટાંકા વિગેરે સ્થળોએથી ગુરૂભક્તો પધારી પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રી સપરિવારની સુખશાતા પુછી દર્શન-વંદનનો લાભ લઈ રહ્યા છે.

તાજેતરમાં રતલામ વિધાયક શ્રી ચેતનજી કાશ્યપ અને રાજસ્થાન સરકારના પૂર્વ સ્વાયત શાસન મંત્રીશ્રી શ્રીચંદ્ર કૃપલાનીએ પધારી આશિર્વાદ પ્રાપ્ત કર્યા હતા. પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રીના આશીર્વાદ પ્રાપ્ત કરવા શ્રી સિદ્ધાર્થ કાશ્યપ પણ પધાર્યા હતા. પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રીના આશીર્વાદ પ્રાપ્ત કરી સામાજિક ચર્ચા કરી હતી. શ્રી કાશ્યપજીના પધારવાથી પૂર્વ મંત્રી શ્રીકૃપલાની પણ પધાર્યા હતા. બંનેએ ગચ્છાધિપતિ સાથે ધાર્મિક ચર્ચાઓ કરી હતી. બંને મહાનુભાવોનું શ્રીસંઘ તરફથી બહુમાન કરાયું હતું.

શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થ ખાતે...

શ્રી શાશ્વતી નવપદ ઓળી આરાધના સંપન્ન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર અને સંયમવય, સ્થવિર યોગિરાજ શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા.ના સુશિષ્યરત્ન ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક સૂરિમંત્રારાધક, ભાંડવપુર મહાતીર્થ વિકાસ યાત્રાના અજય પ્રહરી આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ ઠાણા અને વિદુષી સાધ્વીજી શ્રી સૂર્યકીરણશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણાની પાવનકારી નિશ્રામાં શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થ ખાતે તા. ૨૩ ઓક્ટોબર, ૨૦૨૦ના રોજથી તા. ૩૧ ઓક્ટોબર ૨૦૨૦ના રોજ દરમ્યાન શ્રી શાશ્વતી નવપદ ઓળી

આરાધનાનું આયોજન કરાયું હતું. જે વિવિધ ધાર્મિક અનુષ્ઠાનો સાથે સાનંદ સંપન્ન થયું હતું.

ઓળી આરાધનાના નવેય દિવસ દરમ્યાન વિધિવિધાન અને સંગીતની સ્વરલહેરીઓ સાથે જિનાલયમાં વિવિધ મહાપૂજનો ભણાવાયા હતા. જેમાં શ્રી ભક્તામ્બર મહાપૂજન, શ્રી ૧૦૮ પાર્શ્વનાથ મહાપૂજન, શ્રીગુરૂપદ મહાપૂજન, શ્રી સિદ્ધચક્ર મહાપૂજન વિગેરે પૂજનો ભણાવાયા હતા. વિધિકારક શ્રી અરવિંદભાઈ (ઈન્દોર), શ્રી ધરણેન્દ્રભાઈ (સુરત) તથા સંગીતકાર શ્રી ત્રિલોક મોદી પાર્ટીઅમદાવાદ દ્વારા વિધિ સહિત મહાપૂજનો તેમજ ભક્તિભાવનાના કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. પ્રતિ રોજ શ્રી મહાવીર પ્રભુ અને ગુરૂદેવોને નયાનાભિરામ અંગ રચનાઓ કરાઈ હતી.

અમદાવાદ, બેંગ્લોર તથા અનેક ગામ-નગરોમાંથી ઓળી આરાધનામાં ૪૦થી વધુ આરાધકો જોડાયા હતા. દરેક આરાધકોએ ભાવપૂર્વક આરાધના કરી પુણ્ય ઉપાર્જન કર્યું હતું. આરાધના દરમ્યાન વિભિન્ન નગરોના શ્રીસંઘો અને ગુરૂભક્તો આચાર્યશ્રીના દર્શન-વંદનાર્થે પધાર્યા હતા અને પોતાના નગરે આચાર્યશ્રીને પધારવા ભાવભરી વિનંતી કરી હતી. પૂજ્ય આચાર્યશ્રીએ પધારેલા ગુરૂભક્તોને આત્મિય આશીર્વાદ પ્રદાન કરવા સાથે માંગલિકનું શ્રવણ કરાવ્યું હતું. પારણાના દિવસે સમસ્ત આરાધકો દ્વારા સંપૂર્ણ ચાતુર્માસ અને શ્રી શાશ્વતી ઓળી આરાધના આયોજક સુરાણાનિવાસી માતુશ્રી માલૂદેવી પુખરાજજી પીથાજી પાલગોતા ચૌહાણ છત્રાણી પરિવારના સદસ્ય શા. ચંપાલાલજી પાલગોતાનું બહુમાન કરાયું હતું. આયોજક પરિવાર દ્વારા આરાધકોની સુંદર રીતે પારણાભક્તિ કરાઈ હતી અને આરાધકોનું બહુમાન કરાયું હતું. સરકારી નિયમોના પાલન સાથે ઓળી આરાધના કાર્યક્રમ સાનંદ સંપન્ન થયો હતો.

પરિષદ પદાધિકારીઓનો સંયમ વંદન યાત્રા પ્રવાસ સુખરૂપ સંપન્ન

અ.ભા.શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તપસ્વીરત્ન શ્રી રમેશભાઈ ધરના નેતૃત્વ હેઠળ રાષ્ટ્રીય પરિષદના પદાધિકારીઓના સંયમ વંદન યાત્રા પ્રવાસ સુખરૂપ સંપન્ન થયો હતો.

મધ્યપ્રદેશ, રાજસ્થાન, ગુજરાતમાં બિરાજમાન પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સમુદાયના શ્રમણ-શ્રમણીના દર્શન વંદન માટે તા. ૧૭-૧૦-૨૦ના રોજથી શ્રી મોહનખેડા તીર્થના દર્શન વંદન કરી સંયમ વંદના યાત્રા પ્રવાસનો પ્રારંભ કર્યો હતો. સહુ પદાધિકારીઓએ નિમ્હાહેડા નગરે ચાતુર્માસ બિરાજમાન ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારના દર્શન-વંદન કરી આશીર્વાદ પ્રાપ્ત કર્યા હતા. ત્યાંથી શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થની પુણ્ય ધરા પર પહોંચી ચાતુર્માસ બિરાજમાન ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક, સૂરિમંત્રારાધક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના દર્શન-વંદન કરી આશીર્વાદ પ્રાપ્ત કર્યા હતા. પદાધિકારીઓએ તીર્થાધિપતિ શ્રી મહાવીર પ્રભુ, દાદા ગુરૂદેવશ્રી, પુણ્ય સમ્રાટ અને યોગિરાજના મંદિરમાં પૂજા કરી હતી. નિમ્હાહેડા નગરના ચાતુર્માસ લાભાર્થીપારેખ પરિવાર દ્વારા રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ સહિત અન્ય પદાધિકારીઓનું બહુમાન કરાયું હતું. નિમચ ખાતે ચાતુર્માસ બિરાજમાન મુનિરાજ શ્રી સંયમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણાના દર્શન-વંદન કરી આશિર્વાદ પ્રાપ્ત કર્યા હતા. તૃતિય દિવસે પુણ્ય સમ્રાટની જન્મભૂમિ તીર્થભૂમિ પેપરાલ ખાતે પહોંચી તીર્થનું નિરીક્ષણ કરવા સાથે આરતીનો લાભ લીધો હતો. શ્રી પેપરાલ તીર્થનું નિરીક્ષણ કરવા સાથે આરતીનો લાભ લીધો હતો. શ્રી પેપરાલ તીર્થ ભવ્યરૂપ લઇ ચૂકેલ છે. ગુરૂભક્તોને વર્ષમાં એકવાર પુણ્ય સમ્રાટની જન્મભૂમિ પેપરાલ તીર્થ પધારવા પરિષદ અધ્યક્ષે આહ્‌વાન કર્યું હતું. ત્યારબાદ ચાતુર્માસ બિરાજમાન સાધ્વીજી શ્રી દિવ્યદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાના દર્શન-વંદન કરી થરાદનગરે પહોંચ્યા. થરાદનગરના નિર્માણાધિન શ્રી મહાવીર - આદિ જિનાલય અને પુણ્ય સમ્રાટના મંદિરનું નિરીક્ષણ કરી શ્રી મહાવીર-આદિ જિનાલયમાં સેવા-પૂજા કરી ચતુર્થ દિવસે લાખણી ખાતે પહોંચી ચાતુર્માસ બિરાજમાન સાધ્વીજી શ્રી કલ્પરેખાશ્રીજી, શ્રી પરમરેખાશ્રીજી મ.સા.ના દર્શન-વંદન કરી સુખ શાતા પૂછી હતી ત્યાં ચાતુર્માસ આયોજક મોરખીયા પરિવાર દ્વારા અધ્યક્ષ સહિત પદાધિકારીઓનું બહુમાન કરાયું હતું. લાખણીથી પાટણનગરે ચાતુર્માસ બિરાજમાન મુનિરાજ શ્રી ચારિત્ર્યરત્નવિજયજી મ.સા. મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ ૨૯ શ્રમણ શ્રમણીવૃંદના દર્શન વંદન કર્યા હતા. આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. દ્વારા સ્થાપિત શ્રી

અ.ભા. રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તપસ્વી રત્ન શ્રી રમેશભાઇ ધરૂ, મહામંત્રીશ્રી સુધિરજી લોઢા, ઉપાધ્યક્ષ શ્રી નવીનભાઇ બલ્લુ, જનકલ્યાણ મંત્રી શ્રી સુશીલજી છાજેડ, પ્રાંતીય અધ્યક્ષશ્રી રાજેન્દ્રજી જૈન દંગવાડાવાળા, શિક્ષામંત્રી શ્રી ભરતભાઇ વોરા, મંત્રીશ્રી અતુલભાઇ અદાણી, શ્રી મુકેશજી જૈન નાકોડા, પ્રચારમંત્રી શ્રી બ્રજેશજી બોહરા, સંગઠનમંત્રી શ્રી રાજેશજી બાગરેચા, સહમંત્રી શ્રી રાજકમલજી દુગ્ગડ, શ્રી શૈલેષજી ઓરા, શ્રી પ્રવિણજી ડુંગરવાલ વિગેરે પદાધિકારીઓ સંયમ વંદન યાત્રા પ્રવાસમાં સાથે રહ્યા હતા.

પરિષદ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ સહિત પદાધિકારીઓના આગમન સમયે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણ અને પાટણનગરના જૈન સમાજના અગ્રણીઓ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. આ અવસરે મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા.એ. કહ્યું હતું કે, ગુરૂદેવ શ્રી જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.એ પરિષદને માર્ગદર્શન આપી આજે પરિષદને જે ઉંચાઇ પર પહોંચાડેલ છે તે ઉંચાઇને સદાય જાળવી રાખવા સહુ સદસ્યોએ યોગદાન આપવું કર્તવ્ય છે. મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા.એ પરિષદની પ્રગતિ માટે પ્રત્યેક સદસ્યોને પંચસૂત્ર અપનાવા માટે ધાર્મિક પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. એમને કહ્યું કે સમર્પણ, સદ્‌ભાવ, સહનશીલતા, સમતા, સરળતા આ પાંચ સૂત્રોનું અનુસરણ પ્રત્યેક પરિષદના સદસ્યે કરવું જોઇએ. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણ દ્વારા સહુ પદાધિકારીઓનું બહુમાન કરાયું હતું.

આ પ્રસંગે નગરપાલિકાના ચીફ ઓફિસર પાંચાભાઇ માળી વિશેષરૂપથી ઉપસ્થિત રહી પરિષદના કાર્યોની જાણકારી મેળવી અને પદાધિકારીઓનું તેમને બહુમાન કર્યું હતું. પંડિતવર્ય શ્રી ચંદ્રકાન્તભાઇ સંઘવીએ પણ પધારી પદાધિકારીઓ માટે જીવન ધાર્મિક જ્ઞાનનામહત્વ પર સમજણ આપી હતી. ચીફ ઓફિસરે પાલિકા દ્વારા પાટણના સરસ્વતી નદીના તટ પર બની રહેલ વનઉદ્યાન જ્યાં ૧૦૦૦ રીતના એક લાખ વૃક્ષોનું વૃક્ષારોપણ થનાર છે ત્યાં પરિષદના પદાધિકારી શ્રી સુધિરજી લોઢા, સુશીલજી છાજેડ, શ્રીરાજકમલજી દુગ્ગડ, દ્વારા વૃક્ષારોપણ કરાવ્યા હતા. જે પરિષદ માટે અત્યંત ગૌરવની વાત છે. પાટણથી સહુ અમદાવાદ પહોંચ્યા ત્યાં ચાતુર્માસ બિરાજમાન મુનિરાજ શ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણાના દર્શન-વંદન કર્યા હતા.

પાટણનગરે પુણ્ય સમ્રાટની ૪૩મી માસિક પુણ્યતિથિ મનાવાઈ

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણ દ્વારા મુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ ૨૯ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી નિશ્રામાં પાટણનગરે પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની ૪૩મી માસિક પુણ્યતિથિ મનાવાઈ હતી.

આ પ્રસંગે પુણ્યતિથિ દિવસે જીવદયાના કાર્યક્રમમાં અબોલ પશુઓને લીલા ઘાસનો ચારો અને દેશી ઘીના લાડવા ખવડાવવામાં આવ્યા હતા. આયંબિલ ભવનમાં આયંબિલની તપસ્યા કરાવાઈ હતી. જેમાં તપસ્વીઓ અને આયંબિલ ભવનના સેવાર્થીભાઈબહેનોનું બહુમાનપૂર્વક સંઘ પૂજન કરાયું હતું.

૪૩મી માસિક પુણ્ય સમમીનો લાભ મેંગલવા (રાજ.) નિવાસી શ્રીમતી ગીતાદેવી કાંતિલાલ ડામરાણી દિલ્હી સ્થિત પરિવારે લીધો હતો.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન ઉપાશ્રયમાં સવાર અને સાંજે પુણ્ય સમ્રાટની આરતી કરવામાં આવી હતી. સાંજની આરતીનો લાભ પુણ્ય સમ્રાટે થરાદના રત્નથી નવાજ્યા હતા તે સુરત સ્થિત શ્રી રમેશકુમાર વાડીલાલ દોશી પરિવારે લીધો હતો. પાટણ નગરમાં ચાતુર્માસ બિરાજમાન મુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ ૨૯ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના દર્શન-વંદનાર્થે થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ મુંબઈના અધ્યક્ષ શ્રી શાંતિભાઈ શેઠ, શ્રી રમેશભાઈ અનોખી, શ્રી વિરેન્દ્રભાઈ ભાભરા, પાટણ ભાજપા જિલ્લા ઉપપ્રમુખ શ્રીમતી હીનાબેન શાહ સહિત અનેક ગુરૂભક્તો પધાર્યા હતા.

થરાદનગરના શ્રી મહાવીર આદિ જિનાલયના દર્શનાર્થે જિલ્લા કલેક્ટર

થરાદનગરના ભવ્ય શ્રી મહાવીર આદિ જિનાલયના દર્શનાર્થે જિલ્લા કલેક્ટર શ્રી આનંદભાઈ પટેલ પધાર્યા હતા. થરાદ નગરમાં પરમાત્માની પ્રાચીન પ્રતિમાઓ સાથે અનેક જિનાલયો છે. એમાં થરાદનગરના મૂળનાયક શ્રી મહાવીર સ્વામી ભગવાનના જિનાલયના દર્શન કરી મહોદય જિલ્લા કલેક્ટર શ્રી આનંદભાઈ પટેલ અત્યંત અભિભૂત થયા હતા. એમને જિનાલય અને તેની શિલ્પકલાની પ્રશંસા કરી હતી. નિર્માણાધિન પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ

શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ગુરૂમંદિરનું અવલોકન કર્યું હતું. ત્યારબાદ સકલ તીર્થ વરખડીધામના દર્શન-વંદન કરી ધન્યતા અનુભવી હતી. આ અવસરે થરાદ જૈન સંઘના શ્રી નવિનભાઈ દેસાઈ (ચોક્સી), શ્રી વસંતભાઈ દોશી, શ્રી જયંતિભાઈ સંઘવી (વકીલ), શ્રી મુક્તિભાઈ પારેખ અને શ્રી વસંતભાઈ ધરૂ વિગેરે ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

સા. શ્રી કલ્પરેખાશ્રીજી મ.સા., સા. પરમરેખાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાની નિશ્રામાં લાખણીનગરે વહેતી ધર્મની ગંગા

પંચાન્હિકા જિનભક્તિ મહોત્સવ સંપન્ન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર, ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની આજ્ઞાનુવર્તીની પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી પૂર્ણકિરણાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજીશ્રી કલ્પરેખાશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજી શ્રી પરમરેખાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણાએ સંવત ૨૦૭૬ના અષાઢ સુદ ૧૨ ને ગુરૂવાર તા. ૨-૭-૨૦ના રોજ લાખણીનગરે વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો. સાધ્વીજી ભગવંતોના ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ લાખણીનગરે ધર્મની ગંગા વહેતી થઈ ગઈ હતી. સાધ્વીજી શ્રી પરમરેખાશ્રીજી તથા સાધ્વીજીશ્રી પદ્મરેખાશ્રીજી મ.સા. લાખણીનગરની દિકરીઓ અને મોરખીયા પરિવારની કુળદિપીકાઓ હોઈ જૈન જૈનેતર પરિવારોમાં અનેરો ઉત્સાહ વ્યાપી ગયો હતો.

પ્રતિરોજ સવારે ભક્તાંબર પાઠ, ગુરૂગુણ ઈક્કીસા, જયંતસેન ઈક્કીસા, વ્યાખ્યાન, પ્રતિક્રમણ બંને પટ્ટધર આચાર્યદેવોના માર્ગદર્શન મુજબ સરકારના નિયમોના પાલન સાથે શ્રી નેમીનાથ ભગવાન જન્મ કલ્યાણકની ભવ્યાતિભવ્ય ઉજવણી શ્રી નવકાર મહામંત્રના જાપ, પર્યુષણ મહાપર્વની ઉજવણી, સાધ્વીજી શ્રી પરમરેખાશ્રીજી મ.સા.ની ૨૧ દિવસીય એકાંત સાધના વિગેરે ધર્મપ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. જ્યારે તાજેતરમાં દિપાવલી પર્વ અને નૂતન વર્ષ દરમ્યાન પરમાનંદી ચાતુર્માસ નિમિત્તે શ્રી લાખણી જૈન સંઘની આજ્ઞાથી મોરખીયા જાસુદબેન ટીલચંદભાઈ પરિવારના શ્રીમતી શર્મિષ્ઠાબેન પ્રકાશકુમાર મોરખીયા દ્વારા તા. ૧૪-૧૧-૨૦ના રોજથી તા. ૧૮-૧૧-૨૦ના રોજ દરમ્યાન પંચાન્હિકા જિનભક્તિ મહોત્સવનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું. પ્રથમ

દિવસે પ્રભુવીરના નિર્વાણ કલ્યાણક નિમિત્તે પાવાપુરી તીર્થની રચના, સવારે ૬-૩૦ કલાકે વ્યાખ્યાન, પુણ્યપાલ રાજાને આવેલ સ્વપ્નનું વર્ણન તેમજ ઉત્તરાધ્યનના પ્રવચનો, સવારે ૧૦-૩૦ કલાકે ભવ્યાતિભવ્ય સ્નાત્ર મહોત્સવ, દ્વિતીય દિવસે સવારે ૯-૩૦ કલાકે પ્રાસંગિક પ્રવચન ત્યારબાદ માતૃપિતૃ વંદનાનો ભવ્ય કાર્યક્રમ, તૃતિય દિવસે નૂતન વર્ષે સવારે મહામાંગલિક તથા નવસ્મરણ પાઠ, વિધિકારક શ્રી પ્રકાશભાઈ, સંગીતકાર શ્રી ભાવિકભાઈ અને ૪ સેકન્ડમાં પાઘડી બાંધવામાં જેમણે પોતાનું નામ ગ્રીનીસ બુકમાં નોંધાવ્યું છે. એવા શ્રી શૈલેષભાઈના નેતૃત્વ હેઠળ સવામણ અક્ષતના સ્વસ્તિક સાથે સવારે ૧૦-૩૦ કલાકે શ્રી ભક્તાંબર મહાપૂજન, જિનાલય - ઉપાશ્રયમાં સુશોભન, રંગોળી, દિપક રોશની રાત્રે ૭.૩૦ કલાકે શ્રી કુમારપાલ મહારાજના પરિવેશમાં ભવ્યાતિભવ્ય આરતી, સવારની નવકારશી બપોરનું જમણ અને સાંજના ચૌવિહાર એટલે ત્રણેય ટાઈમના સંઘ સ્વામીવાત્સલ્યનું આયોજન, ચતુર્થ દિવસે સવારે વ્યાખ્યાન ત્યારબાદ મહામંગલકારી શ્રી શાંતિધારા અભિષેક, ત્રણેય ટાઈમનું સ્વામીવાત્સલ્ય, પંચમ દિવસે શ્રી લાખણીનગરથી સકળ સંઘ સાથે વાજતે-ગાજતે પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વર મ.સા.ની જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થ સુધીની ભવ્યાતિભવ્ય ચૈત્ય પરિપાટી વગેરે કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. ચૈત્ય પરિપાટીમાં ચારસોથી અધિક યાત્રિકો જોડાયા હતા. ત્યાં પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતો દ્વારા વ્યાખ્યાન અપાયું હતું. ત્રણેય ટાઈમના સ્વામી વાત્સલ્યનું આયોજન કરાયું હતું. તેમજ આયોજક પરિવાર અને સગાં-સ્નેહીઓ મળી પ્રભાવના કરાઈ હતી. સહુ યાત્રિકોએ હર્ષાવિંત થઈ મધુકર મહાવીર અને ગુરૂવર્યોના દર્શન-વંદન તેમજ ગુરૂજન્મ ભૂમિનો સ્પર્શ કરી ધન્યતા અનુભવી હતી.

જાબુઆ નગરે સાધ્વીજી ભગવંતોની ઓળીના પારણા

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર બંને આચાર્ય ભગવંતોની આજ્ઞાનુવર્તીની જાબુઆનગરે ચાતુર્માસ બિરાજમાન સાધ્વીજીશ્રી વિદ્‌વદ્‌ગુણાશ્રીજી મ.સા.ની વર્ધમાન તપની ૨૫મી ઓળી અને સાધ્વીજીશ્રી રશ્મપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની ૭૪મી ઓળીના પારણા શાતાપૂર્વક થયા હતા. સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રામાં જાબુઆનગરમાં નવપદજીની ૭૦ ઓળી સાનંદ સંપન્ન થઈ હતી.

શ્રી જયંતસેનસૂરિ મ્યુઝિયમ મોહનખેડા ખાતે પુણ્ય સમ્રાટની

૪૩મી માસિક પુણ્યતિથિ મનાવાઇ

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર બંને આચાર્ય ભગવંતોની આજ્ઞાનુવર્તીની માલવમણી વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજી શ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સરળ સ્વભાવી સાધ્વીજી શ્રી કલ્પલતાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાની પ્રેરણાથી સિયાણા નિવાસી વિજયવાડા સ્થિત શા. કુંદનમલજી કાંતિલાલજી ગાંધી પરિવારના લાભાર્થે પુણ્ય સમ્રાટની ૪૩મી પુણ્ય સમમી મનાવાઇ હતી. આ પ્રસંગે મ્યુઝીયમ પરિસરમાં પુણ્ય પ્રસાદી અને શ્રી જયંતસેનસૂરિશ્વર અષ્ટપ્રકારી પૂજા ભણાવાઇ હતી. પ્રભુજી અને ગુરૂદેવોને ભવ્ય અંગરચના કરાઇ હતી.

ઇન્દોર નગરે પ્રશ્નાવલીનું લોકાર્પણ

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મ દિવાકર, ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની આજ્ઞાનુવર્તીની સાધ્વીજીશ્રી અવિચલદષ્ટાશ્રીજી મ.સા.ની પાવનકારી પ્રેરણાથી અ.ભા.શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન મહિલા પરિષદ ગુમાસ્તાનગર ઈન્દોર સંસ્થાપિકા અધ્યક્ષ શ્રીમતી સ્નેહલત્તાજી ડુંગરવાલના સાનિધ્યમાં શ્રી જયંતસેનસૂરિ અષ્ટપ્રકારી પૂજાના પુસ્તક પર આધારિત પ્રશ્નાવલીનો લોકાર્પણ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

શ્રી શાશ્વત ઓળી આરાધનાના પાવન અવસર પર આયોજિત આ કાર્યક્રમ પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતના આશિર્વાદ, ગુમાસ્તાનગર પરિષદના સંરક્ષિકા અને રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી શ્રીમતી રાખી રાંકાની મંગલકામના સાથે સમસ્ત પદાધિકારીઓ અને કાર્યકારિણી સદસ્યોની ઉપસ્થિતિમાં સાનંદ સંપન્ન થયો હતો. પ્રશ્નાવલી પ્રાપ્તિ માટે અત્રે પ્રસ્તુત નંબર પર સંપર્ક કરવા ઘોષણા કરાઇ હતી.. વિનિતા બાઠીયા ૯૪૨૫૯ ૦૪૧૩૧, વિજયા મોઢી : ૯૦૩૯૪ ૮૪૧૬૯, જયા ભંડારી : ૮૮૭૮૦ ૨૦૮૮૬, સુધર્મા : ૮૦૮૫૨ ૮૫૦૦૪

રતલામ નગરે ઓળી આરાધના નિમિત્તે તપસ્યા કરવાના ચઢાવા

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર, ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની આજ્ઞાનુવર્તીની સાધ્વીજીશ્રી અમિત દષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણાની નિશ્રામાં રતલામ નગરે ચાતુર્માસ દરમ્યાન ધર્મ પ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન થઈ રહ્યા છે. ઓળી આરાધના દરમ્યાન સાધ્વીજીશ્રી અમિતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા.ની વર્ધમાન તપની ઓળીની અનુમોદનાર્થે અચિન્ત્ય ચિંતામણી નવકાર મહામંત્રના વિશિષ્ટ જાપ અનુષ્ઠાન ગત તા. ૧-૧૧-૨૦ના રોજ કરાયા હતા. સાધ્વીજીશ્રી અક્ષયકલાશ્રીજી મ.સા.ની ૬૧મી ઓળી, સાધ્વીજીશ્રી નિર્વેદકલાશ્રીજી મ.સા.ની ૩૧મી ઓળી, સાધ્વીજીશ્રી આગમકલાશ્રીજી મ.સા.ની ૪૦મી ઓળી, સાધ્વીજી શ્રી ધ્યાનદષ્ટાશ્રીજી મ.સા.ની ૧૮+૧૯મી ઓળી અને સાધ્વીજીશ્રી નિર્ગન્થદષ્ટાશ્રીજી મ.સા.ની ૩૧+૩૨મી ઓળી નિમિત્તે તપસ્યા કરવા ચઢાવા બોલાવવામાં આવ્યા હતા. તપસ્યા કરવાના ચઢાવાના લાભ બહેનો દ્વારા લેવામાં આવ્યા હતા. જેમાં માયા લુણાવત, રમીલા સંકલેચા, મંજુ મહેતા, રેખા ગાંધી, ચંદ્રકાંતા ખિમેસરા, મોનિકા, મંજુ મહાવીર મહેતાએ લાભ લીધો હતો.

પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતે ઓળી આરાધનાની મહત્તા સમજાવી સહુને માંગલિકનું શ્રવણ કરાવ્યું હતું. આ અવસરે સમાજના વરિષ્ઠજનો અને ચારેય પરિષદના સદસ્યો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

નાગદાનગરે પુણ્ય સમ્રાટની ૪૩મી માસિક પુણ્યતિથિ મનાવાઈ

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર બંને આચાર્ય ભગવંતોની આજ્ઞાનુવર્તીની સાધ્વીજી શ્રી મૈત્રીકલાશ્રીજી, સાધ્વીજી શ્રી નિરંજનકલાશ્રીજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની ૪૩મી માસિક પુણ્યતિથિ નિમિત્તે નાગદાનગર સ્થિત શ્રી શાંતિનાથ જિનાલયમાં મહિલા પરિષદ દ્વારા શ્રી જયંતસેન અષ્ટપ્રકારી પૂજા ભણાવાઈ હતી, જેનો લાભ શ્રી બ્રજેશકુમાર બાબુલાલજી બોહરા પરિવારે લીધો હતો. આ અવસરે શ્રી સંઘ અને પરિષદની અનેક બહેનો ઉપસ્થિત રહી હતી.

– રાજ સૌમ્ય : પ્રેષક : હસમુખભાઇ વેદલીયા

સંદિપ ! જી. એક કામ કરના હૈ. ક્યા ? કરેગા ? પહેલે યે તો બતાઓ કામ ક્યા હૈ ? અપને જોવ વૃદ્ધ મહાત્મા હૈ ના... હા, ઉનકા વ્હીલચેરવાલા આદમી આયા નહી હૈ.... ઔર ઉનકા વિહાર કલ હોગા તો તુજે ઉનકે સાથ જાના હૈં ઉનકી બરાબર સેવા કરના.

ઐસા મૌકા સંતો કી સેવા કા અવસર કહાઁ સે મિલતા હૈ.. કહીને સંદિપે વૃદ્ધ મહાત્માની વ્હીલચેર ચલાવવા માટે – સેવા કરવા માટે આંતરિક આનંદ સાથે સંમતિ જણાવી.

અંતિમ બે ત્રણ માસથી સંસ્થામાં સામાન્ય પગાર નક્કી કરીને કચરા–પોતા કરવા માટે સંસ્થામાં જોડાયો હતો. ઘણા દિવસોથી ઉપાશ્રયમાં કચરા–પોતા કરવાના કારણે વૃદ્ધ મહાત્માથી પરિચિત હતો. તેમની પાસે જતો ત્યારે તેને પિતા સમ વાત્સલ્ય અનુભવાતુ.

સંદિપ બે – ત્રણ મહિના પૂર્વે જ ઘરેથી ભાગીને મુંબઇ આવી ગયો હતો. અને સામાન્ય પગારે સંસ્થામાં નોકરીએ જોડાયો હતો. હવેથી વૃદ્ધ મહાત્મા મુનિશ્રી હેમરત્નવિજયજી મ.સા.ની અનુપમ સેવામાં...

સંજોગ જુઓ... સંદિપ વૃદ્ધ મહાત્માને હંમેશા દાદા મહારાજ કહીને બોલાવતો. દાદા મહારાજની સેવામાં સંદિપના આવ્યા પછી દાદા મહારાજનો પૂર્વ સેવક ક્યારેય ના આવ્યો અને એટલે પરમેનન્ટ સેવક તરીકે તેને સ્થાન મળી ગયુ. સરિતાના વહેતા સલીલની જેમ કે ગગનમાં દોડી રહેલ સમીરની જેમ સમય પણ દોડી રહ્યો હતો. આમ જ અનેક વર્ષ પસાર થઈ ગયા. એક દિવસ અચાનક એક વૈરાગ્ય સભર ઘટના બની. જેણે સંદિપના જીવનમાં બહુ મોટો વળાંક આપ્યો. વયોવૃદ્ધ પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી હેમરત્નવિજયજી મ.સા. કાળધર્મ પામ્યા. દાદા મહારાજ અચાનક દિવંગત થયા હોવાથી સંદિપને બહુ મોટો આંચકો લાગ્યો. સાક્ષાત જાણે તેનું શિરછત્ર કાળમુખા કાળે ઝૂંટવી લીધું. વાત્સલ્યનો ધોધ વહાવનાર દાદા જતા રહ્યા. ને સંદિપ સ્વીકારી ના શક્યો... પણ પોતે એક વ્હીલચેરવાળો એટલે વેદના પણ કોના પાસે વધુ વ્યક્ત કરે...

અંત સમય... સમાધિ.. શ્રી સંઘની સહવર્તીમહાત્માઓની અનુપમ સેવા... કાળધર્મ... અંતિમ સ્નાન... ગુરૂભક્તો દ્વારા અંતિમ દર્શન... પાલખી... અગ્નિ સંસ્કાર. સંદિપની દષ્ટિ સમક્ષ એક–એક દશ્યો પસાર થતાં હતા. તેમ–તેમ અંતરમાં વધુને વધુ વલોપાત સર્જાતો હતો. દૂરથી મુક પ્રેક્ષકની જેમ સંદિપ બધું જોયા કરતો. બે–ત્રણ દિવસ પછી વડીલ મહાત્મા પાસે જઈને તેણે અંતરની આરજૂ અભિવ્યક્ત કરી. ગુરૂદેવ ! હમ... એક વાત કહું.... બોલ... મજાક તો નહી સમજો ને ?... પણ બોલ તો

ખરી.... મહાત્માને એમ કે દાદા મહારાજ જતાં રહ્યા એટલે હવે સેવકની જરૂર નહીં પડે. એમ સમજીને મને છૂટો કરી દેશે. એ ભયથી આ સ્પષ્ટતા કરવા આવ્યો હશે.

બોલ, શું કહેવું છે ?.. મજાક નથી કરતો... પણ શું ? મૌન. હું તને છૂટો નહીં કરું. ચિંતા ના કરતો. આ જ વાત તારે કહેવી હતી ને...? તો ?

સંદિપની નજર નીચી હતી. છતાં તેની એક આંખમાંથી આંસુ બહાર આવી ગયું. મહાત્માએ મસ્તક ઉપર હાથ મૂકીને કહ્યું : તને બહુ દુઃખ થયું હશે એ તો હું સમજું છું પણ... ફરી તેઓ મુદ્દાની વાત ઉપર આવ્યા. બોલ તારે શું કહેવું છે ?

અને કરબદ્ધ સંદિપે વિનંતીના સૂર સાથે મહાત્માને કહ્યું : મારે દીક્ષા લેવી છે.

સંદિપની ભાવના સાંભળીને એકવાર તો ખુદ મહાત્મા વિસ્મયચકિત થયા. પ્રેમથી સંદિપને સમજાવતા કહ્યું : સંદિપ ! ભલે તું ચાર-ચાર વર્ષથી સાથે છે પણ ભણ્યા વિના દિક્ષા ના મળે. અને તને તો હજી નવકાર પણ બરાબર આવડતો નથી. સાથે સાથે તારી જે ખોટી આદતો છે તે પણ અહીં તો ના જ ચાલે...!

શરમિંદી આંખે સંદિપ ત્યાંથી ઊભો થયો અને પોતાની રૂમમાં જતો રહ્યો. બંધ રૂમમાં બંધ નયને મનોમંથન કર્યું. દીક્ષાનો નિર્ધાર તો દઢ હતો જ હવે માર્ગમાં આવતાં અવરોધોને દૂર કરવાના હતા. પ્રથમ અવરોધ હતો અભ્યાસનો અભાવ. તે માટે તો બે પ્રતિક્રમણની પુસ્તક લઈને ચાલુ થઈ જશે. પણ મહાત્માએ બીજો અવરોધ ખરાબ આદતનું કહ્યું હતું તેનું શું...?

આત્મનિષ્ઠા સહ મનોમંથનની ધારા આ પ્રમાણે ચાલી રહી હતી (૧) મુંબઈ-સુરત-અમદાવાદની પ્રતિ શુક્રવારની નવી મૂવીના શો જોવાનું જ. આ મારી ખરાબ આદત છે. એને છોડવી જ પડશે. તો વળી રોજની ઓછામાં ઓછી દસ સિગારેટ પીઉં છું. અર્થાત રોજનું એક સિગારેટનું આખું પેકેટ... આ પણ છોડવું છે..

મુવી અને સિગારેટ એ તો મહાત્માને ખ્યાલ છે, એ ખરાબ આદત છે અને એમનો એ પૂર્વનિર્દેશ આ બે માટે જ છે પણ ત્રીજી એક આના કરતા વધારે ખરાબ આદત છે, જે મારી હોંશિયારીના કારણે આજ સુધી તેમને ખ્યાલ આવવા દીધો નથી. તે ખરાબ આદત છે દારૂની.

થોડા થોડા દિવસે મારે દારૂ પીવા જોઈએ જ છે અને તે પણ કિંગફિશર જ. સામાન્ય તો ના જ ચાલે. પણ મોડી રાત્રે આવ્યા પછી માઉથફ્રેશર કે પછી બીજા કોઈ માધ્યમ દ્વારા ખબર ના થવા દઉં તે અલગ વાત છે. પણ જો હું દીક્ષા માટે ભાવના રાખતો હોઉં, પ્રભુના પાવન પથ માટે મારું મન મક્કમ હોય તો આ મારે છોડવું જ પડશે.

સંદિપે પોતાના સદ્‌ગુરુ આગળ જીવનની ડાયરીના બધા જ પાના ખુલ્લા કરી દીધા. સુરાપાનની વાત સાંભળીને ખુદ ગુરૂદેવ આશ્ચર્યમાં પડી ગયા. પણ તેની

નિખાલસતાના સદ્‌ગુણે સદ્‌ગુરૂનું હૃદય જીતી લીધું.

બીજા જ દિવસથી (૧) નિયમિત અષ્ટપ્રકારી પૂજા (૨) સંઘના શ્રાવકો સાથે બંને ટાઈમ પ્રતિક્રમણ (૩) મુવી-સિગારેટ સંપૂર્ણ બંધ અને (૪) દારૂનું તો નામ પણ નહીં જ લેવાનું.

મેઘા તીવ્ર હતી એટલે અલ્પ સમયમાં વંદીતુ સિવાયના બે પ્રતિક્રમણનાં લગભગ બધા જ સૂત્રો થઈ ગયા. સંઘના શ્રાવકોને સમૂહમાં સંદિપ પ્રતિક્રમણ પણ કરાવતો. તેની અષ્ટપ્રકારી પૂજા જોઈને સંઘના સભ્યો પ્રભાવિત થઈ જતા.

સૌને તે બસ માત્ર દીક્ષાની જ વાત કરતો અને તેની ભાવનાની ખૂબ ખૂબ અનુમોદના કરતા.

સંદિપે સમુદાયના અધિપતિ આચાર્ય ભગવંત સમક્ષ દીક્ષાની ભાવના વ્યક્ત કરી અને ગીતાર્થ આચાર્ય ભગવંતે શ્રીસંઘને અને પરિવારને વિશ્વાસમાં લઈને દીક્ષા પણ આપી. આશ્ચર્યની વાત ત્યાં છે કે દાદા મહારાજના કાળધર્મ પામ્યા પછી માત્ર દોઢ-બે મહિનાના સમયમાં જ પચ્ચીસ વર્ષનો સંદિપ સંયમી બન્યો.

મુંબઈથી કલિકુંડ : તીર્થની વિહાર યાત્રામાં અલ્પ દિવસો માટે શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથા જૈન તીર્થ અણસ્તુમાં સ્થિરતા હતી. પોષ સુદ ૬, વિ.સં. ૨૦૭૫ના દિવસે ત્રિસ્તુતિક સમુદાયના શાસન પ્રભાવક પ.પૂ. આ.ભ. શ્રી જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. શિષ્યરત્ન પુ.મુનિશ્રી વૈભરત્ન વિજયજી મ.સા. સપરિવાર અણસ્તુ પધાર્યા. તેમના શિષ્ય પૂ. મુનિશ્રી શંખેશરત્નવિજયજી મ.સા. એટલે જ આ સંદિપ.

વધુ આશ્ચર્યની વાત તો એ છે કે સંદિપ જન્મથી જૈન પરિવારનો નથી પરંતુ મહારાષ્ટ્રના અંતરિયાળ ગામમાં રહેનારા બ્રાહ્મણ પરિવારનો સુપુત્ર છે. મહારાષ્ટ્રીયન બ્રાહ્મણ પરિવારે પણ ઉદારતાથી સંમતિ આપી. તે પણ અનુમોદનીય છે.

દોઢ વર્ષ પૂર્વે જ્યારે પૂ. મુનિશ્રી શંખેશરત્નવિજયજી મ.સા. મુંબઈમાં દશમી ખેતવાડી સ્થિત ગુરૂમંદિરે પ્રવચન આપવા પધાર્યા ત્યારે શ્રોતાઓને પ્રેમથી બહુ સરસ વાત કરી કે આજથી દસ વર્ષ પૂર્વે હું આ જ ગુરૂમંદિરમાં કચરા-પોતા કરતો હતો. તેમાંથી વ્હીલચેરવાળો સેવક-શ્રાવક-દીક્ષાર્થીઅને આજે સંયમી બની તમારી સાથે આ જ ગુરૂમંદિરમાં સુધર્માસ્વામીની પાટ ઉપર બેઠો છું. જ્યારે તમે દસ વર્ષ પહેલાં અહીં જ આ જ હોલમાં વ્યાખ્યાનમાં શ્રોતા તરીકે બેસતા હતા અને આજે પણ ત્યાં જ છો તે પ્રગતિ ક્યારે કરશો ?

મહારાષ્ટ્રીયન બ્રાહ્મણ કુળમાં જન્મ થયો હોવા છતાં પ્રભુનું શાસન મળ્યાનો તેમનો આનંદ ખરેખર અંતરને ગદ્‌ગદિત કરે છે. વંદન... પ્રભુના આવા અનુપમ શાસનને.... અને આવા અનુપમ શાસનનાં સુંદર શ્રામણ્યને....

कुमकुम सने पगलिये

गच्छाधिपतिजी की निश्रा में गौतमरास का पाठ

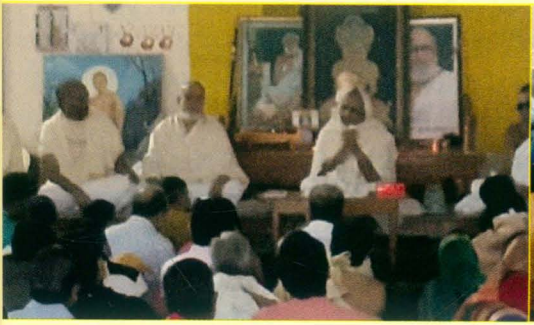

निम्बाहेड़ा। श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में नूतन वर्ष के निमित्त प्रातः काल सर्वप्रथम मूलनायक कुंथुनाथ भगवान को निर्वाण लड्डू चढ़ाया गया, तत्पश्चात् गौतमरास का मंगल पाठ गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. की उपस्थिति में मुनिराज विद्वद्रत्न विजयजी ने सभी को सुनाया। गौतमरास के साथ-साथ नववर्ष मंगल आशीर्वाद के रूप में मांगलिक प्रवचन भी गुरुदेव ने फरमाया। साथ ही कचरियाखेड़ी में पुण्य सम्राटधाम पर विविध भाग्यशालियों ने अष्ट प्रकारी पूजा, भोजनशाला, कमरे निर्माण, मंदिर व्यवस्था आदि का लाभ लिया। चातुर्मास आयोजक पारख परिवार द्वारा पूज्यश्री के सूरि मंत्र आराधना पर प्रकाशित पुस्तक का विमोचन पारख परिवार के रतनसिंह पारख, शेरसिंह पारख, नपा पार्षद मनोज पारख, राहुल पारख, यश पारख तथा रवि मोदी परिवार द्वारा गौतम स्वामी पर पुण्य सम्राट द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन किया गया। इसी दौरान रणजीत प्रमोद मोदी परिवार द्वारा प्रकाशित कराई गई दीपावली पूजन पुस्तक भी सभी को वितरित की गई। इस मंगलमय प्रसंग पर आसपास ग्राम-नगर से बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित थे।

इससे पूर्व सोमवार को प.पू. पुण्यसम्राटश्री के पट्टधर सूरिमंत्र आराधक श्री नित्यसेन सूरिश्वरजी म.सा. ने सिटी में स्थित भीड़ भंजन पारसनाथ मंदिर पर भी संघ के सदस्यों के साथ आराधना की। इस दौरान जिनशासन के जयकारों से माहौल गुंजायमान हो गया व महिलाओं ने मंगल गीत गाए। आचार्यश्री ने मंदिरजी में दर्शन कर भक्तों को उपाश्रय में प्रवचन व आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर श्री संघ अध्यक्ष मनीष बाबेल, महामंत्री शेरसिंह पारख, रवि मोदी, संतोष जैन सहित बड़ी संख्या में समाज के सदस्यगण एवं बाहर से पधारे अतिथि मौजूद थे।

आचार्यश्री ने भक्तों को उपाश्र? में

प्रवचन व आशीर्वाद दिया। गौतम स्वामी पर पुण्य सम्राट द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन किया गया।

– कविता पारख

ट्रस्ट का विस्तार

निम्बाहेड़ा। प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की पावन जन्मभूमि भरतपुर पर पुण्यसम्राट आचार्यदेव श्रीमद् जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से निर्मित श्री राज राजेन्द्र कीर्ति मंदिर ट्रस्ट मंडल भरतपुर के ट्रस्ट मंडल का विस्तार गच्छाधिपति धर्म दिवाकर जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने करते हुए ट्रस्ट के मार्गदर्शक के रूप में म.प्र. के पूर्व खाद्यमंत्री तथा विधायक श्री पारस जैन को लिया है।

ट्रस्टी के रूप में पारा निवासी श्री मनोहरलालजी छाजेड़ तथा धार निवासी श्री मोहित मनोहरलालजी तातेड़ लिये गये हैं। युगप्रभावकाचार्य के पट्टधर जैनाचार्य नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. के दर्शन वंदन करने के लिये भरतपुर तीर्थ ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री बाबुलाल कटारिया तथा ट्रस्टी श्री मुकेशजी दोशी (मुंबई), श्री राजेन्द्रजी दंगवाड़ावाले (बड़नगर), विक्रमजी वाणीगोता (बीजापुर) आदि गुरुभक्त निम्बाहेड़ा पहुंचे थे। चातुर्मास आयोजक पारिख परिवार द्वारा इनका बहुमान किया गया।

निम्बाहेड़ा। गच्छाधिपति, सूरिमंत्र आराधक, आचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का 85 वां जन्मोत्सव मन्दसौर में मगसर विदी तेरस 12 दिसंबर को मनाया जाएगा।

मन्दसौर श्रीसंघ की भावभरी विनंती के पश्चात् प.पू. गुरुदेव ने अपने मुखारविंद से यह घोषणा की। जन्मोत्सव के पावन दिवस में प्राचीन श्री अजीतनाथजी तीर्थ में आचार्य भगवंत के हस्त कमल से पुण्य सम्राट की प्रतिमा प्रतिष्ठित की जाएगी। मंदसौर श्रीसंघ की ओर से भावभरी विनति श्रीसंघ अध्यक्ष श्री गजेंद्रजी हिंगड़, श्रीसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा, श्री भागचंदजी पोरवाल, श्री सुधीरजी लोढ़ा, श्री मनोहरजी सोनगरा, श्री अशोकजी खाबिया, श्री भारतजी कोठारी, श्री देवेन्द्रजी चपरोत, श्री अशोकजी बाफना, श्री जितेन्द्रजी चपरोत, श्री कमलेशजी सालेचा, श्री महेन्द्रजी छिंगावत, श्री जयेशजी डांगी द्वारा की गई।

पुण्य सप्तमी भांडवपुरतीर्थ पर मंनी

भाण्डवपुर। महातीर्थ में आचार्य देवेशश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. की शुभ निश्रा में पुण्य सम्राट श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की 43 वीं मासिक पुण्य सप्तमी मनाई गई। इस मंगलमय प्रसंग पर श्री जयन्तसेनसूरि अष्टप्रकारी पूजा एक सद गुरुभक्त की ओर से पढ़ाई गई। प्रसंग में आसपास निकटवर्ती गांव के गुरुभक्तों ने आकर दर्शन, पूजन एवं वंदन करने का लाभ लिया।

भाण्डवपुर तीर्थ में नूतन वर्ष के निमित्त प्रातः काल सर्वप्रथम मूलनायक महावीर भगवान को निर्वाण लड्डू चढ़ाया गया, पश्चात नूतन निर्मित राजेन्द्रसूरि सभा भवन में

गौतमरास का मंगल पाठ आचार्य देवेशश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. ने उपस्थित सभी को सुनाया। गौतमरास के साथ-साथ नववर्ष मंगल आशीर्वाद के रूप में मांगलिक प्रवचन भी गुरुदेव ने फरमाया। साथ ही विविध भाग्यशालियों ने अष्टप्रकारी पूजा पक्षाल व आरती आदि के चढ़ावे बोलकर प्रभु की पूजा आदि का लाभ लिया। चातुर्मास आयोजक सुराणा निवासी मातुश्री मालुदेवी पुखराजजी बालगोता छत्राणी परिवार द्वारा संघ पूजन भी किया गया। इस मंगलमय प्रसंग पर आसपास ग्राम-नगर में बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित थे।

प्रातः दस बजे मेंगलवा ग्राम में देवू देवी सुखराज बालगोता परिवार सुखसागर चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित अठारह अभिषेक एवं श्री गौतम स्वामी महापूजन को लेकर आज पूज्य पुण्य सम्राट श्री के पट्टधर सूरिमंत्र आराधक आचार्यदेवेश श्री जयरत्नसूरीश्वर म.सा. व विदुषी साध्वीजी श्री सूर्यांकिरणाश्रीजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणीवृन्द का भव्य मंगल प्रवेश हुआ। आचार्य श्री के प्रवेश के दौरान लाभार्थी बालगोता परिवार सहित मेंगलवा जैन संघ द्वारा भव्य बैंड बाजों की धुन के साथ गाजते-बाजते प्रवेश करवाया व सौमेया पूर्वक भव्य स्वागत किया गया। इस दौरान जिनशासन की जयकारों से माहौल गूंजायमान हो गया व महिलाओं ने मंगल गीत गाए। आचार्यश्री ने मंदिरजी में दर्शन कर भक्तों को उपाश्रय में प्रवचन व आशीर्वाद दिया। नूतन वर्ष पर शाम को प्रभु भक्ति कार्यक्रम आयोजित हुआ।

भाण्डवपुर। आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणिवृन्द की शुभनिश्रा में श्री भाण्डवपुर महातीर्थ में दिनांक 21 अक्टूबर 2020 से दिनांक 25 अक्टूबर 2020 तक श्री आदीश्वर जिन बिम्ब अंजनशलाका, चर्चा चक्रवर्ती आचार्यभगवन्त श्री धनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के स्वर्गारोहण शताब्दी निमित्त एवं बृहदीक्षा, श्रमण-श्रमणिवृन्द के विविध आगम योगोद्वहन निमित्त तथा शाश्वती नवपद ओली आराधना सह श्री जिनेन्द्र पंचाह्निका भक्ति महोत्सव विविध धार्मिक अनुष्ठानों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

मुनिराज श्री पुष्पदन्तविजयजी म.सा. की बड़ी दीक्षा का कार्यक्रम सुसम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अन्त में आचार्यश्री ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए माँगलिक श्रवण कराया। चातुर्मास एवं महोत्सव के लाभार्थी सुराणा निवासी मातुश्री मालूदेवी पुखराजजी पीथाजी पाल-गोता चौहान छत्राणी परिवार के सदस्य शा. चम्पालालजी पालगोता द्वारा प्रभावना वितरीत की गई। गुरुभक्तों की उपस्थिति में आयोजित सभी कार्यक्रमों में प्रशासनिक नियमों का पूर्णरूपेण पालन किया गया।

पचकल्याणक महोत्सव के पंचम दिन 25 अक्टूबर 2020 को श्री आदिनाथ जिन परमात्मा की मूर्ति की अंजनशलाका की गई एवं प्रातः निर्वाण कल्याणक महोत्सव मनाया गया। साथ ही ठीक प्रातः 10 बजे से श्री राजेन्द्रसूरि जैन सभा भवन के शुभारम्भ के रूप में श्री वास्तु पूजा शा. नैनमलजी साहेबचन्दजी बालगोता-मेंगलवा वालों की ओर से पढ़ाई गई और उसी पूजन के अन्दर आगामी 2 दिसम्बर 2020 को होने वाले श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मन्दिर, पुण्य - सम्राटश्री जयन्तसेनसूरि समाधि मन्दिर,

योगिराजश्री शान्तिविजय समाधि मन्दिर के द्वारशाख पूजन का चढ़ावा बोला गया जिसमें लाभार्थी परिवारों ने लाभ लिया।

श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मन्दिर के द्वारशाख पूजन का लाभ शा. मीठालालजी फुसाजी कंकूचौपड़ा- मेंगलवा वालों ने लिया। पुण्य सम्राट श्री जयन्तेसनसूरि समाधि मन्दिर के द्वारशाख पूजन का लाभ शा. नेमीचन्दजी छगनराजजी गोवानी-चौराऊ ने लिया। योगिराज श्री शान्तिविजय समाधि मन्दिर के द्वारशाख पूजन का लाभ थराद निवासी देसाई श्री कीर्तिलाल दलसुख भाई हस्ते- श्री रिकेशकुमारजी ने लिया एवं दोपहर में श्री लघु शान्तिस्नात्र पूजन पढ़ाया गया जिसका लाभ सुराणा निवासी मातुश्री मालूदेवी पुखराजजी पीथाजी पालगोता चौहान छत्राणी परिवार, एम. के. ग्रुप बैंगलुरू द्वारा लिया गया।

इनमें थराद से विशेष रूप से अ.भा. श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा का आगमन भी हुआ। इस पुण्यवन्त धरा पर योगोद्वहन कर रहे प.पू. मुनिराजश्री अशोकविजयजी म.सा., पुण्य मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म.सा. तथा साध्वीजी म.सा. को भी योगोद्वहन की सुखशाता पूछते हुए उनकी तपस्या की अनुमोदना की।

तप अनुमोदना का पाटण में महोत्सव

पाटण। नगर में बिराजमान त्रिस्तुतिक मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी महाराज एवं मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी महाराज आदि ठाणा 29 की पावन निश्रा में साध्वीश्री कुमुदप्रियाश्रीजी म.सा. के 72 दिवसीय अठ्ठाई के पारणे अठ्ठाई (आठ अठ्ठाई) तपस्या का पारणा सम्पन्न हुआ। तप अनुमोदना में पाटण के त्रिस्तुतिक जैन संघ, सागर जैन उपाश्रय, नगीनभाई पोषधशाला, भारती सोसाइटी, कुमारपाल सोसायटी सहित पाटण जैन संघ के सभी समुदाय के सदस्य उपस्थित रहे।

मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी महाराज की प्रेरणा से पाटण में ऐसे अनेक प्रसंग हुए जिसमें तिथि ओर समुदाय से उठकर सभी लोग उपस्थित रहे। तप अनुमोदना में नगर में बिराजमान पंन्यास प्रवर श्री भव्ययश विजयजी महाराज आदि अनेक श्रमण-श्रमणी भगवंत पधारे। इस प्रसंग पाटण नगर पालिका अध्यक्ष महेन्द्रभाई पटेल, उपप्रमुख लालेशभाई ठक्कर, पोलीस अधीक्षक अक्षयराज मकवाना, सर्कल पी आई चिराग गोसाई, संजयभाई मोदी आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

पारणा निमित्त एक दिवसीय तप अनुमोदना महोत्सव में सुबह 8 बजे पारणे के बाद सामुहिक सामाइक, तप अनुमोदना की धर्मसभा, श्री जयन्तसेन सुरी अष्टप्रकारी पूजन, सांझी (बहनों द्वारा तपस्या के गीत) भक्ति भावना एवं आरती आदि अनेक कार्यक्रम हुए, जिसका लाभ त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की आज्ञा से साध्वी भगवंत के संसारी परिवार लाखणी गुजरात निवासी मोरखीया रमेशभाई हरीलाल त्रिभुवनदास परिवार ने लिया। तप अनुमोदना के सभी कार्यक्रम में लाभार्थी परिवार एवं त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण के विभिन्न श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

दुःख का पहला कारण अपनी आकांक्षा

नीमच। विकास नगर के जैन श्वेताम्बर श्री महावीर स्वामी जिनालय की शीतल छाया में आयोजित चातुर्मास के दौरान आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी के सुशिष्य मुनि श्री संयमरत्न विजयजी, मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी ने कल्याण मंदिर स्तोत्र का विवेचन सम्पूर्ण करते हुए कहा कि हे जिनेन्द्र ! आपके दर्शन मात्र से भक्तजनों के नयनकमल आनंद को प्राप्त हो जाते है। आपकी भक्ति से जिनका रोम-रोम रोमांचित हो उठता है, आपके निर्मल मुखकमल के अवलोकन से जिनका ध्यान समाधि में लग जाता है, ऐसे भव्य पुरुष आपकी स्तुति करके अत्यंत रमणीय स्वर्ग की सम्पत्तियों को भोगकर, कर्ममल के समूह को नष्ट कर शीघ्रातिशीघ्र मोक्ष के आनंद का अनुभव कर लेते हैं। संसार के समस्त प्राणियों को सुख ही प्रिय है और दुःख अप्रिय है। दुःख को स्वेच्छा से कोई भी अपनाना नहीं चाहता। मनुष्य इंद्रियों से उत्पन्न क्षणिक सुख को परम सुख मान लेता है। अभाव की, असंतोष की जिंदगी जीने वाला दुःखी है। अभाव पर ध्यान रखने वाला, जो उसके पास है, उसका भोग न करते हुए, उस पर संतोष न करते हुए, जो नहीं है उसे पाने की चिंता में लीन रहता है, वह दुःखी है। जो उसके पास है, उसे भूल जाता है, जो पड़ौसी के पास है, उसका ख्याल रखता है, उसे पाने का सतत् प्रयास करता है, वह दुःखी है। सुखी वही है जो संतोष की जिंदगी जीता है। जो है उसमें काम चला लेना, जितना है, उतने में संतोष रखना। जो मिला खा लिया, कल की फिक्र न रखना। जो नहीं है उसकी चिंता न करना, ये सब सुखी जीवों के लक्षण है। आज हर मनुष्य दुःखी है, क्योंकि वह अभाव में जीता है। जो-जो उसके पास होता है, वह उसकी परवाह नहीं करता। जो उसके पास नहीं होता, उसे पाने के लिए दिन-रात एक कर देता है और जब इच्छित वस्तु पुण्य की कमी से नहीं मिलती, तब वह हताश, निराश व दुःखी हो जाता है। पुण्य व पाप के उदय के बारे में नहीं सोचता। दुःख का पहला कारण, अपनी आकांक्षा है। दुःख कहीं बाहर से नहीं आता, वह अपनी कामना (इच्छा) से आता है, अपने चित्त (मन) व पूर्व पाप के उदय से आता है। श्री सिद्धचक्र नवपद ओली आराधना की पूर्णाहुति के दौरान मुनि श्री संयमरत्नविजयजी की नवपद ओली आराधना सम्पन्न हुई। पारणे का लाभ उज्जैन से पधारे मांडलिक गोलेचा परिवार व विकास नगर, नीमच श्रीसंघ ने प्राप्त किया। मुनिश्री ने नौ दिन एक धान्य की वर्ण सहित नवपद ओली सम्पन्न की। मौके पर मुनिश्री के दर्शन-वंदन हेतु उज्जैन, गुंटूर, कुशलगढ़, मंडावर नगरों से गुरु भक्तों का आगमन हुआ।

नीमच। मुनिश्री संयमरत्नविजयजी, मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी ने श्री गौतम स्वामी केवलज्ञान व नूतन वर्ष प्रसंगे गौतमरास व मांगलिक सुनाते हुए कहा कि जो हमारे पापों को नष्ट कर दे व जिसके श्रवण मात्र से जगल में भी मंगल हो जाए, जो अमंगल को भी मंगल में बदल देती हैं, वही मांगलिक होती है। मांगलिक हमारे पुरातन जीवन को नूतन बना देती है, इसलिए नूतन वर्ष के प्रारंभ में गुरु भगवंतों के श्रीमुख से मांगिलक श्रवण

किया जाता है। गौतम स्वामी से हमें उनकी लब्धि नहीं, अपितु उनके जैसा विनय प्राप्त करना चाहिए, क्योंकि जहाँ विनय होता है, वहाँ लब्धियाँ-सिद्धियाँ स्वतः चली आती है। प्रभु महावीर हमसे न नोट, न वोट और ना ही सपोर्ट चाहते हैं, बल्कि हमें ही हमारी खोट का त्याग कर जीवन के सचोट बनाना होगा। सचोट प्राणी को कभी चोट नहीं लगती। आचार्यश्री जयन्तसेनसूरिजी के गुरु आचार्य श्री यतीन्द्रसूरिजी के जन्मदिवस प्रसंग पर मुनिश्री ने बताया कि आचार्य श्री यतीन्द्रसूरिजी (मुमुक्षु रामरत्न) को भी सद्गुरु की तलाश थी और उन्हें सद्गुरु के रूप में मिले विश्व पूज्य आचार्य श्री राजेन्द्रसूरिजी। धौलपुर में जन्मे रामरतन (यतिन्द्रसूरिजी) ने सद्गुरु की तलाश थी,

सद्गुरु ने सुशिष्य को तलाशा और शिष्य को भी अपने समान एक महान गुरु बना दिया। माँ स्वयं कष्ट उठाकर भी संतान का पालन करती है, इसी प्रकार सद्गुरु भी जिसे शिष्य के रूप में स्वीकार कर लेते हैं, फिर उसका उद्धार करके ही रहते हैं। इस मौके पर शाजापुर, बाग, पारा, रतलाम से भी श्रीसंघों का आगमन हुआ।

महिदपुर में तपोत्सव

महिदपुर। महिदपुर नूतन वर्ष की मंगलमय प्रभात बेला में साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी म. के सानिध्य में राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में महावीर स्वामी निर्वाण कल्याणक व गौतम स्वामी केवल ज्ञान दिवस पर गौतम रास का वाचन किया एवं महामांगलिक प्रदान की।

साथ ही साध्वी निरागरसाश्रीजी म. के 108 आयंबिल तप सहतीन उपवास की तपस्या का पूर्णाहुति पर दो दिवसीय तपोत्सव का आयोजन किया गया।

त्रिस्तुतिक श्रीसंघ की ओर से सकल जैन श्रीसंघ की नवकारसी का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् साध्वी निरागसा श्रीजी म.सा. का पारणा का आयोजन हुआ। अमृतलाल गादिया परिवार की ओर से संघपूजा की गई। तपस्वी साध्वी निरागरसाश्रीजी म.सा. ने

भी उपस्थिति समाजजनों को सम्बोधन किया। तप अनुमोदनार्थ समाजजनों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

माणकलाल छाजेड़ परिवार की ओर से महिदपुर रोड़ जैनश्री संघ को रजत निर्मित आरती भेंट की। संघ के मीडिया प्रभारी नरेन्द्र धाड़ीवाल ने उक्त जानकारी दी। रात्रि में त्रिस्तुतिक श्रीसंघ की ओर से चौवीसी का आयोजन किया गया।

महिदपुर। वात्सल्य निधि साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी म., आयम्बिल तप आराधिका साध्वी श्री निरागरसाश्रीजी म., सेवाभावी पू. साध्वीश्री जिनांशरसा श्रीजी म. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में नेमीचंद लुणावत की पुत्रवधू माया-पारस लुणावत के 110 दिवसीय श्रेणीतप पूर्णाहुति प्रसंग पर तीन दिवसीय जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव का आयोजन लुणावत परिवार की ओर से किया गया। श्रेणी तप में 87 उपवास व 23 बियासना होते है। संघ के मीडिया प्रभारी नरेन्द्र धाड़ीवाल ने बताया कि महोत्सव के प्रथम दिवस आदिनात स्नात्र मण्डल द्वारा संगीतमय स्नात्र पूजन पढ़ाई गई व दोपहर में सामायिक मण्डल का आयोजन व द्वितीय दिवस आदिनाथ शत्रुंजय महापूजन का आयोजन किला मंदिर में किया गया। तृतीय दिवस शनिवार को तपस्वी माया लुणावत की शोभायात्रा निकाली गई।

जिन शासन अधिष्ठायिका शासन माताजी का पूजन एवं गुरुवंदन हेतु चल समारोह निकाला गया। चल समारोह श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर पहुंचा जहाँ त्रिस्तुतिक श्रीसंघ द्वारा आयोजित तपस्वी सम्मान समारोह में पज्य साध्वीवर्या डॉ. अमृतरसाश्रीजी म.सा. ने तप की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहाकि जिन

शासन में 12 प्रकार के तप बताये है। 6 बाह्य तप व 6 अभ्यंतर तप है। तप की व्याख्या करते हुए कहाकि तप क'त' तत्व को परम पद की ओर ले जाता है वह तप है। इस अवसर पर संघ अध्यक्ष मुकेश बांठिया, महिला मण्डल अध्यक्ष संगीता मोदी, परिषद के माणकलाल छाजेड़, रमेश लुणावत आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। त्रिस्तुतिक श्रीसंघ की ओर से श्री राजेन्द्रसूरि महिला मण्डल ने तिलक माला, शाल श्रीफल से तपस्वी का बहुमान किया व संघ की ओर से समाजजनों ने तपस्वी को बहुमान पत्र भेंटकर तपस्वी का सम्मान कर तप की अनुमोदना की। बहुमान पत्र का वाचन अभिषेक छजलानी ने किया। तपागच्छ श्रीसंघ की ओर शाल श्रीफल व माला से तपस्वी का बहुमान किया गया। दोपहर में राजेन्द्र सूरि गुरुपद महापूजन पढ़ाई गई व शाम को चौवीसी का आयोजन किया गया।

महिदपुर। साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सानिध्य में नव दिवसीय शाश्वती नवपद ओलीजी का आयोजन किया गया जिसका समापन 31 नवम्बर शनिवार को राजेन्द्रसूरी पौषध शाला में हुआ। नव दिवसीय नवपद ओलीजी आराधना में साध्वीवर्या ने अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, दर्शन, ज्ञान, चारित्र व तप की महत्ता पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। तप की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए आपने कहा कि आराधना साधना, उपासना करके सम्यक ज्ञान, सम्यक दृष्टि, सम्यक चारित्र से की घई नवपद की आराधना से मनुष्य आत्मा का उत्थान कर परम पद को प्राप्त कर मानव जीवन को सार्थक कर सकता है। नवपद के नौ दिनों में विभिन्न लाभार्थियों द्वारा श्री

राजेन्द्रसूरी महिला मण्डल व श्री राजेन्द्रसूरी बहू मण्डल द्वारा पूजन पढ़ाई गई।

आराधना के प्रथम दिन 110 दिवसीय श्रेणी तप की पूर्णाहुति पर संगीता-अतुल मेहता का बहुमान त्रिस्तुतिक श्रीसंघ की ओर से किया गया। मेहता परिवार द्वारा गुरु मंदिर में देवद्रव्य का रजत भण्डार अर्पित किया गया।

बहुमान- सम्पूर्ण चातुर्मास काल में 5 माह तक आयम्बिल तप एवं नवदिवसीय शाश्वती ओलीजी तप की आराधना कराने का लाभ श्रीमती सजनबाई केसरीमल मेहता परिवार ने लिया।

मेहता परिवार की ओर से त्रिस्तुतिक श्रीसंघ द्वारा व अ.भा. जैन श्वेताम्बर ग्रुप फेडरेशन 'सजग' की ओर से सभी तप आराधकों व सहयोगियों का तिलक माला व गिफ्ट प्रदान कर बहुमान किया गया।

महिदपुर। शांताबाई मेहता का देवलोकगमन- अनिल, सुनील व अतुल मेहता की माताजी व त्रिस्तुतिक श्रीसंघ की वरिष्ठ सुश्राविका शांताबाई सुन्दरलाल मेहता का 88 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। समाजजन व 'शाश्वत धर्म' परिवार मृत आत्मा को श्रद्धाजंलि व्यक्त करता है।

झाबुआ। पुण्य सम्राट की 43 वीं मासिक पुण्य तिथि जप-तप के साथ मनायी गई। स्थानीय श्री ऋषभदेव बावन जिनालय में चातुर्मास हेतु विराजित पूज्य साध्वीश्री विद्वत गुणाश्रीजी और रश्मि गुणाश्रीजी म.सा. की पाँवन निश्रा में पुण्य सम्राट आचार्यश्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की 43 वीं पुण्य तिथि पर कई धार्मिक आयोजन किये गये।

सुबह भक्तामर स्त्रोत का सामूहिक पाठ तथा दोपहर महिला परिषद् द्वारा पुण्य सम्राट की अष्ट प्रकार की पूजन पढ़ाई गई। इस अवसर पर पूज्य साध्वीद्वय ने उनका पुण्य स्मरण किया और बताया कि पुण्य सम्राट अंतिम समय तक जिन शासन की सेवा में लगे रहे। उनका झाबुआ श्री संघ पर असीम प्रेम था।

पुण्य सम्राट की आरती के लाभार्थी स्व. श्रीमती लताप्रधान की स्मृति में डॉ. संतोष प्रधान परिवार रहे। रात्रि में गुरु गुण एक्कीसा का पाठ कर नवकार मंत्र जाप और आरती उतारी गई। कई समाजजनों ने आयम्बिल तप, एकसण तप, उपवास आदि की तपस्या भी की। साध्वीद्वय विद्वतगुणाश्रीजी और रश्मिगुणाश्रीजी की वर्धमान तप की 25 वीं और 74 वीं आयम्बिल तप ओलीजी का पारणा सिद्धचक्र आयंबिल तपस्या की समाप्ति के साथ सम्पन्न हुआ। साध्वीश्री की निश्रा में नवपदजी की ओलीजी की तपस्या हुई जिसमें 60 से अधिक तपस्वियों ने 9 दिवस की आराधना की सम्पूर्ण कार्यक्रम का लाभ झाबुआ जैन सोश्यल मैत्री ग्रुप को प्राप्त हुआ था इन तपस्वियों के पारणे का लाभ भी मैत्री ग्रुप ने लिया था। डॉ. प्रदीप संघवी ने बताया कि दोनों साध्वीश्री के पारने कराने का लाभ झाबुआ जैन समाज की तपस्वी श्रीमती जीवनबेन पोरवाल ने 574 अयम्बिल तप करने की प्रतिज्ञा के साथ लिया।

समाज के अध्यक्ष संजय मेहता ने बताया कि साध्वीश्री की इस महान तप की अनुमोदना हेतु जैन सोश्यल मैत्री ग्रुप द्वारा प्रभु शंखेश्वर पार्श्वनाथ की तस्वीर जिनालय में अर्पण करने का निश्चय किया गया।

बेंगलुरु। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद द्वारा गुरुवर्या साध्वीजी दमयंतीश्रीजी म. की 25 वीं पुण्यतिथि मनाई गई। परिषद की युवा इकाई के अध्यक्ष डूंगरमल चोपड़ा ने बताया कि साध्वीश्री सूर्योदयाजी की निश्रा में गुरुवर्याश्रीजी म.सा. के पुण्य स्मरण के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें विजयनगर स्थित मुनिसुव्रत राजेन्द्र भक्ति संगीत मण्डल द्वारा संभवनाथ मंदिर में श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा पढ़ाई गई, जिसके लाभार्थी परिषद की राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष प्रेमाबेन माँगीलाल गांधीमुथा (सायलावाले) थे।

दुःखद निधन

आहोर। आहोर निवासी मुथाश्री पारसमल बालचंद ओस्तवाल (परिषद) की धर्मपत्नी शांतिबाई पारसमल ओसवाल का स्वर्गवास दिनांक 8 नवम्बर 2020 रविवार को प्रातः 5.15 पुष्य नक्षत्र में लोनावला में हुआ।

उनकी उम्र 78 वर्ष थी। उनने लोकसंत जैनाचार्यश्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में कई वर्ष श्री नवकार मंत्र की आराधना की थी।

उनके प्रति पूर्णतः श्रद्धावान थी. आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ कर गई हैं। 'शाश्वत धर्म' द्वारा श्रद्धाजंली।

तो हमें रोना न पड़े

एक अतिश्रेष्ठ व्यक्ति थे, एक दिन उनके पास एक निर्धन आदमी आया और बोला कि मुझे अपना खेत कुछ साल के लिए उधार दे दीजिये, मैं उसमें खेती करूंगा और खेती करके कमाई करूंगा, वह अतिश्रेष्ठ व्यक्ति बहुत दयालु थे, उन्होंने उस निर्धन व्यक्ति को अपना खेत दे दिया और साथ में पाँच किसान भी सहायता के रूप में खेती करने को दिये और कहा कि इन पाँच किसानों को साथ में लेकर खेती करो खेती करने में आसानी होगी। इसमें तुम और अच्छी फसल की केती करके कमाई कर पाओगे। वह निर्धन ये देखके बहुत खुश हुआ कि उसको उधार में खेत भी मिल गये । लेकिन वह आदमी अपनी इस खुशी में बहुत खो गया, और वह पाँच किसना अपनी मर्जी से खेती करने लगे और वह निर्धन आदनी अपनी खुशी में डूबा रहा और जब फसल काटने का समय आया तो देखा कि फसल बहुत ही खराब हुई थी। उन पाँच किसानों ने खेत का उपयोग अच्छे से नहीं किया था न ही अच्छे बीच डाले, जिससे फसल अच्छी हो सके। जब वह अतिश्रेष्ठ दयालु व्यक्ति ने अपना खेत वापस मांगा तो वह निर्धन व्यक्ति रोता हुआ बोला कि मैं बर्बाद हो गया, मैं अपनी खुशी में डूबा रहा और उन पाँच किसानों को नियंत्रण में रख सका न ही इनसे अच्छी खेती करवा सका। अब यहाँ ध्यान देने की बात है वह अतिश्रेष्ठ दयालु व्यक्ति है भगवान निर्धन व्यक्ति है हम खेत है हमारा शरीर। पाँच किसान हैं हमारी इन्द्रिया आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा प्रभु ने हमें यह शरीर रूपी खेत अच्छी फसल (कर्म) करने को दिया है और हमें इन पाँच किसानों को अर्थात इन्द्रियों को अपने - अपने नियंत्रण में रखकर कर्म करने चाहिये जिससे वो दयालु प्रभु जब ये शरीर वापिस मांगकर हिसाब करें तो हमें रोना न पड़े।

श्री संघ सौरभ

मेहताजी नहीं रहे

रतलाम। स्व. श्री मिश्रीलालजी मेहता के सुपुत्र देवेन्द्र मेहता का 22 अप्रैल 2020 को हृदयगति रूक जाने से आकस्मिक अरिहंत शरण हो गया है।

श्री देवेंद्रजी त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ रतलाम के कर्मठ और कर्मशील कार्यकर्ता थे। उपाश्रय में पधारे साधु-साध्वीयों की सेवा में सदैव संलग्न रहे। पुण्य सम्राट के प्रति आपकी अनन्य गुरु भक्ति एक मिसाल है। रतलाम चातुर्मास के दौरान आपने समस्त गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया व अपना काफी समय जयंतसेनधाम चातुर्मास स्थल पर ही बिताया।

निजी जीवन में आप प्रामाणिक, ईमानदार और अटल सिद्धांतवादी के रूप में पहचाने जाते रहे। सर्राफा व्यवसाय में आपकी प्रामाणिकता ही आजीवन आपका व्यवसाय रही। आप अपने पीछे धर्म और संस्कारो से ओत-प्रोत परिवार छोड़ गए हैं।

राणापुर। यहाँ नव दिवसीय ओलीजी का आयोजन श्री सुविधिनाथ जैन (ओसवाल पंच) मंदिर में किया गया। कोरोना के कारण शासन की गाइड लाइन के पालन में तपस्वी मंदिर में विधि एवं क्रिया सम्पन्न कर अपने घरों में ही आयम्बिल का लाभ लेते रहे।

प्रतिदिन प्रातः प्रतिक्रमण, प्रभु पूजन, देव वन्दन, शायम प्रतिक्रमण की क्रिया की। ओसवाल पंच के अध्यक्ष दिलीप सकलेचा, प्रदीप भंसाली, अनिल सेठ, जानकालील सकलेचा, रमेश नाहर, राजेश जैन, मनीष सकलेचा ने तपस्वियों की साता पूछते हुए अनुमोदना की।

– अवि सकलेचा

राणापुर। महावीर निर्वाण कल्याणक और नववर्ष के उपलक्ष्य में जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ द्वारा नगर के सुविधिनाथ मंदिर, सीमंधर स्वामी मंदिर और मुनिसुव्रत स्वामी मंदिर में निर्वाण के लड्डु चढ़ाये गए, केसर पूजन और आरती की बोलियां हुई।

श्री राजेन्द्र भवन मेंसाध्वी पुण्य दर्शनाश्रीजी ने गौतम रास का वाचन किया।

नवपद माल प्रतियोगिता का आयोजन

रतलाम। परम पूज्य गुरुदेव पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरी महाराज साहब के पट्टधर गच्छाधिपति श्री नित्यसेनसूरिजी व आचार्यश्री जैनरत्न सूरीश्वर म.सा. की आज्ञानुवर्ती साध्वी श्री अमित दृष्टाश्रीजी महाराज साहब आदि ठाणा 7 की निश्रा में आध्यात्मिक एवं धार्मिक ज्ञान से परिपूर्ण वातावरण में चातुर्मास सानंद चल रहा है।

परम पूज्य साध्वीजी श्री के सानिध्य में रतलाम महिला परिषद द्वारा 'नवपद माल प्रतियोगिता' का एक अनोखा आयोजन दि. 29 अक्टूबर को रखा गया जिसमें नवपद से संबंधित के प्रश्नों के उत्तर पूछे गए। विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कार रतलाम श्रीसंघ अध्यक्ष श्री राजेन्द्र लुणावत, चातुर्मास समिति अध्यक्ष अभय

सकलेचा, ट्रस्टी सुरेन्द्र गंग, डॉ. निर्मल मेहता एवं महिला परिषद के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्रीमती माया लुणावत ने वितरित किए। इस अवसर पर महिला परिषद अध्यक्ष मंजू मेहता, रमिला सकलेचा, परिषद के राष्ट्रीय सहमंत्री राजकमल दुगड़, रतलाम श्रीसंघ के श्रेणिक सकलेचा, सुनील गांधी, ट्रस्टीगण समाज के वरिष्ठजन चारों परिषद के पदाधिकारी एवं सदस्यगण मौजूद थे।

■■■

प्रकृति ने 'तीन' विशेष रचना की ...

1. अनाज में 'कीड़े' पैदा कर दिए, वरना लोग इसका सोने और चाँदी की तरह संग्रह करते।
2. मृत्यु के बाद देह (शरीर) में 'दुर्गन्ध' उत्पन्न कर दी, वरना कोई अपने प्यारों को कभी भी जलाता या दफन नहीं करता।
3. जीवन में किसी भी प्रकार के संकट या अनहोनी के साथ 'धैर्य और साहस' दिया, वरना जीवन में निराशा और अंधकार ही रह जाता, कभी भी आशा, प्रसन्नता या जीने की इच्छा नहीं होती।

जैन विश्व

* हुबली । राणिचेनम्मा विश्वविद्यालय बेलगाम द्वारा मुरसावीर मठ निरंजन जगद्गुरु गुरुसिद्ध राजयोगेन्द्र महास्वामी को धार्मिक आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में डॉक्ट्रेट (डॉ) पदवी से सम्मानित किये जाने पर हुबली जैन समाज द्वारा समाजसेवी श्री सिद्धारूढ़ मठ ट्रस्ट कॉमेटी के पूर्व चैयरमेन महेन्द्र सिंघी के नेतृत्व में स्वामीजी का सम्मान किया गया।

* भीलवाड़ा । जैन श्वेताम्बर सोश्यल ग्रुप 'रॉयल' भीलवाड़ा का गठन फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय सुनीताजी नाहर की अनुशंसा पर पूर्व राष्ट्रीय सचिवश्री धर्मेन्द्रजी कर्नावट मंदसौर द्वारा पूर्व रीजन सचिव श्री कमलेशजी कोठारी इंदौर के सहयोग से किया गया है।

* मदुरै । नार्थ इन्डियन वेलफेयर एसोसिशन (मनिवा) के अध्यक्ष हुकमसिंह दहिया के नेतृत्व में मदुरै तेरापंथ सभा अध्यक्ष के पद पर मनोनीत श्रीमान जयंतीलाल जीरावला का उनके आवास पर शॉल व माला पहनाकर सम्मान किया गया और बधाई दी गई।

समाजसेवी रतनलाल सी. बाफना का निधन

शाकाहार के प्रबल प्रेरक, विख्यात समाजसेवी व धर्मनिष्ठ श्रावक रतनलाल सी.बाफना (85) का 16 नवंबर 2020 सोमवार को महाराष्ट्र के जलगाँव (महाराष्ट्र) में देहांत हो गया। उन्होंने अपने जीवन में मानवसेवा, गोसेवा, जीवदया, शाकाहार और स्वाध्याय-प्रचार के प्रचुर अवस्मरणीय कार्य किये।

1998 में उन्होंने गोसेवा, गोवंश-संरक्षण और प्राकृतिक खेती-बाड़ी को व्यापक बनाने के लिए रतनलाल सी बाफना गोसेवा अनुसंधान केन्द्र (गौशाला) की स्थापना की जो 'अहिंसा तीर्थ' के नाम से विख्यात है। यह ऐसी आत्मनिर्भर और बहुउद्देश्यीय गौशाला है, जो बाफनाजी के पारिवारिक न्यास से ही संचालित होती है। अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक डॉ. दिलीप धींग ने अहिंसा तीर्थ पर 2015 में पुस्तक लिखी, जो लोकप्रिय हुई।

* **चेन्नई** । अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक डॉ. दिलीप धींग ने पिछले दिनों पाँच शिक्षा संस्थानों में अपने द्वारा लिखित व संपादित तीन दर्जन पुस्तकें भेंट कीं। रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलोजी, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, अभुषा फाउंडेशन और जैन दिवाकर अहिंसा सेवा संघ द्वारा प्रकाशित यह साहित्य केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली के पाली-प्राकृत विभाग, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के जैनविद्या व प्राकृत विभाग के अलावा महावीर विद्या मंदिर, राजकीय बालिका विद्यालय और उच्च माध्यमिक विद्याल बंबोरा में भेंट किया गया।

* खरतर आचार्य श्री जिनपीयूष सूरीश्वरजी म.सा. की 41 दिवसीय मौन साधना के साथ सूरि मंत्र की तृतीय पीठिका महालक्ष्मी व पंचम पीठिका गौतम स्वामी की साधना श्री नमिऊण पार्श्वनाथ मणिधारी जैन श्वेताम्बर तीर्थ में अनवरत रूप से चली। इस साधना की पूर्णाहुति 11 अक्टूबर रविवार महामांगलिक के साथ हुई।

* **सूरत।** भारत जैन महामंडल की नव गठित 16 शाखाओं के नव मनोनीत चेयरमेनों को रविवार को आयोजित एक वर्चुअल कार्यक्रम में सामूहिक रूप से राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राकेश मेहता ने शपथ दिलाई।

- आजाद हिन्द फौज की 'झांसी की रानी रेजीमेन्ट' की सदस्या श्रीमती लीलावती जैन तथा रमा बहिन जैन थी। जिनका काम क्रमशः सशस्त्र होकर केम्प की रक्षा करना तथा घायलों की सेवा सुश्रुषा करना।
- श्री मिश्रीलाल गंगवाल जैन ने मध्यभारत के मुख्यमंत्री होने पर भी राजकीय अतिथि को मांसाहार कराने के लिए प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू को मना कर दिया था।
- अमेरिका के शिकागो शहर में सितम्बर 1893 में प्रथम विश्व धर्म संसद का आयोजन हुआ था, जिसमें वीरचन्द गांधी जैन ने जैनधर्म का प्रतिनिधित्व किया था।
- जैन धर्म एक विशुद्ध आध्यात्मिक धर्म है, इस शाश्वत धर्म का संबंध किसी जाति विशेष से कभी नहीं रहा, सभी लोगों ने इस धर्म का पालन करते हुए आत्मकल्याण एवं आत्मशांति को प्राप्त किया।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी देहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

श्री जयंतसेन हस्ताक्षर

राष्ट्रसंत आचार्य
विजय जयन्तसेन सूरि

दि. ____________

सु श्रावक श्री बाबुलालजी, रामचन्द्र, राधेश्यामजी,
धर्मलाभ। राजेशजी, पुखराजजी, एवं परिवार।

क्षमापना पत्र मिला।
हमने भी यहाँ पर्वाराधना सानन्द की।
गुरुदेवश्री की परम कृपा से हम सुखशाता में हैं।
पर्वाधिराज का पुनीत सन्देश है क्षमा याचना करना आत्मधर्म है।
उपशम भाव से क्रोध का शमन!
विनयगुण से अहंकार की समाप्ति!
सरलता से माया का उच्छेदन!
और
सन्तोष से लोभ का संवरण करें जिस से कि हमारी आराधना सफल सार्थक हो,
विशुद्ध भाव की निर्मल गंगा में स्नान करें
एवं
पश्चाताप के निर्झर में अपने को पवित्र बनायें।
क्षमा याचना और क्षमा प्रदान करना आत्म शुद्धि में परम सहायक है। परिवार में भी संघ में, सभी को धर्मलाभ कहें।
सभी शाता में हैं।

धर्मलाभ।

कोबा (गांधीनगर)
पि. ३८२००७

प्रभुश्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर गुरुभ्यो नमः

सु श्रावक श्री कान्तिलालजी अचलाजी धर्मलाभ।

क्षमापना पत्र मिला! हम शाता मे हैं!

परमश्रेष्ठ पर्वाधिराज की आराधना सम्पन्न हुई! आराधना जीवन है और आराधना से आत्म प्रगति होती है। सभी जीवों से मित्रता एवं सबके प्रति सद्भावना रखना जैन शासन का दिव्य सन्देश है। वार्षिक प्रतिक्रमण कर के सभी से हमने भी क्षमायाचना की है। किसी के प्रति दुर्भावना नहीं रहना चाहिये यही पर्वाधिराज की सफलता है।

यहाँ पर तपश्चर्या बहुत हुई एवं हो रही है! धर्म उद्यम रखें! सभी को धर्मलाभ कहें।

धर्मलाभ

क्रोध आता है, उसे क्षमा के जल से शान्त कीजिये! - भगवान महावीर!

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/18-20
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- | वर्ष - 67, अंक 12 | कुल पृष्ठ कवर सहित - 88

श्री जयंतसेन मौक्तिक

- जिसने संशय का समाधान कर लिया है, उसने प्रगति के मार्ग पर एक कदम आगे बढ़ा लिया है।
- तीर्थंकरों की वाणी शाश्वत सत्य है।
- जिसने आराधक की स्थिति प्राप्त कर ली है, उसे सभी समृद्धियां प्राप्त हो गई है।
- नियम में रहकर सम्पन्न की गई प्रवृत्ति जीवन विकास का कारण बनती है।
- 'आणाए धम्मो' जिनाज्ञा पालन में धर्म है। जो जिनाज्ञा का पालन करता है, वह धर्म का उपासक होता है।
- जिसके ऊपर श्रद्धा हो, उसकी बात विनयपूर्वक स्वीकार करनी चाहिये।
- संसारी गृहस्थ द्वारा इंगित बात मिथ्यात्व पोषक होती है।
- संसार समुद्र, कटुभावों से भरा हुआ है लेकिन भक्ति का सरोवर निर्मलता से परिपूर्ण होता है।
- व्यक्ति में स्व को प्रस्तुत करने की भावना तभी आती है जब उसकी अंतरात्मा में पूर्ण समर्पण की भावना होती है।
- व्यक्ति का जैसा मानस होता है, ईतर को वह वैसा ही समझता है।
- किसी के प्रति खराब भाव रखना, यह इंसानियत नहीं हेवानियत है।
- जो व्यक्ति स्वयं का कर्तव्य भूल जाये, वह शैतान है।
- जीव मात्र को सुख पहुंचाने का भाव हृदय में रखने वाला व्यक्ति ही मानव है।
- कर्म की गति विचित्र होती है, कृत कर्म से भोगे बिना छुटकारा नहीं है।

गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. तथा जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में आगामी कार्यक्रम

- सियाणा में 22 फरवरी को मुमुक्षु कोयल गांधी की दीक्षा ।
- मेंगलवा में 25 फरवरी को मुमुक्षी प्रियाजी का दीक्षोत्सव।
- पांथेड़ी में 3 मार्च को मुमुक्षु कमलजी की दीक्षा

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001